प्रभा
2017-18

College Accredited with
CGPA of 3.46 on Four Point Scale
at 'A' Grade

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
(संघटक - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, ALLAHABAD
(Constituent College of University of Allahabad)

महाविद्यालय-आधार

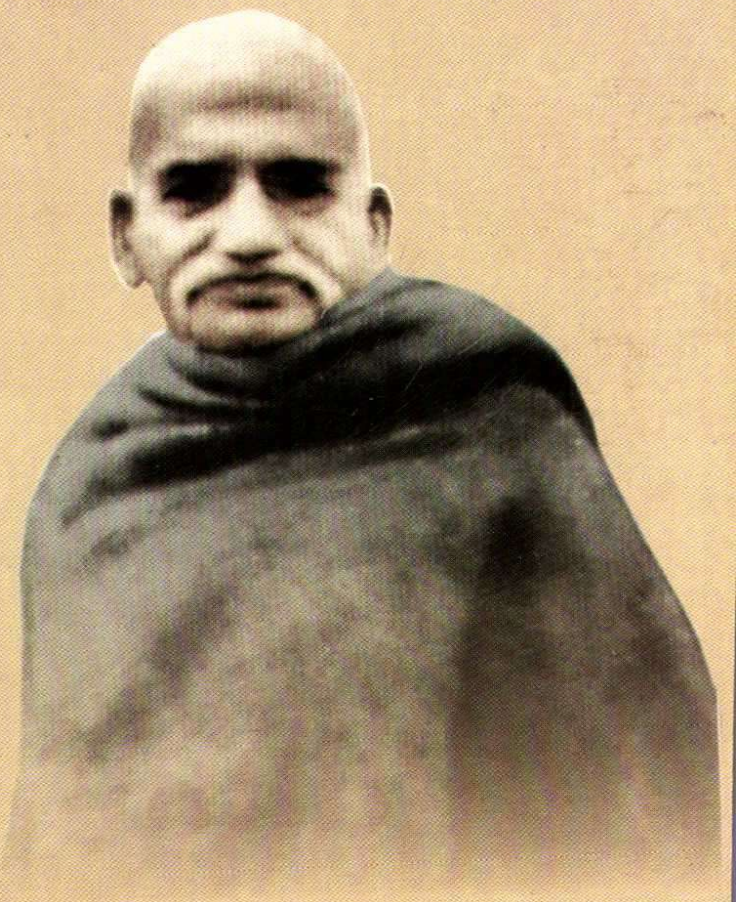

यशः काय सदनलाल खन्ना जी
संस्थापक - सारस्वत खत्री पाठशाला, इलाहाबाद

स्मृति शेष प्रो. दामोदर दास खन्ना
(पूर्व अध्यक्ष एस के पी सोसायटी एवं
एस एस खन्ना महिला महाविद्यालय)

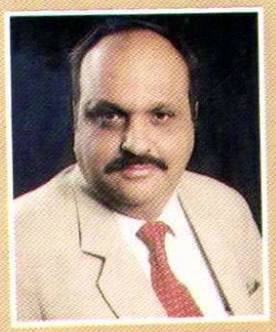

श्री राजीव खन्ना
अध्यक्ष
सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी

श्रीमती सरल टण्डन
मैनेजिंग ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

श्री विनय मेहरोत्रा
ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

डॉ. लालिमा सिंह
प्राचार्या

संरक्षिका
डॉ. लालिमा सिंह
प्राचार्या

छात्रा प्रतिनिधि
रानी सोनी
शिवानी त्रिपाठी
श्रीनीतिका दास गुप्ता
नूर सबा
अदीबा नबाब
कीर्ति पाण्डेय
खदीजा नाबिया
रितिका अधिकारी

सम्पादक
डॉ. आशा उपाध्याय

सम्पादक मण्डल
डॉ. ज्योति कपूर
डॉ. मंजरी शुक्ला
डॉ. रुचि मालवीय
डॉ. आरिफा बेगम
डॉ. सौम्या कृष्ण
डॉ. अनुराधा सिंह
डॉ. तनुश्री रॉय
डॉ. शालिनी रस्तोगी

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
(संघटक महाविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
179 डी, अतरसुइया, इलाहाबाद 211 003, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 0532-2659124, 2451692, 2451791
E-mail : khanna_girls_dc@yahoo.co.in
Website : sskhannagirlsdc.com

पुरस्कार और छात्राएँ

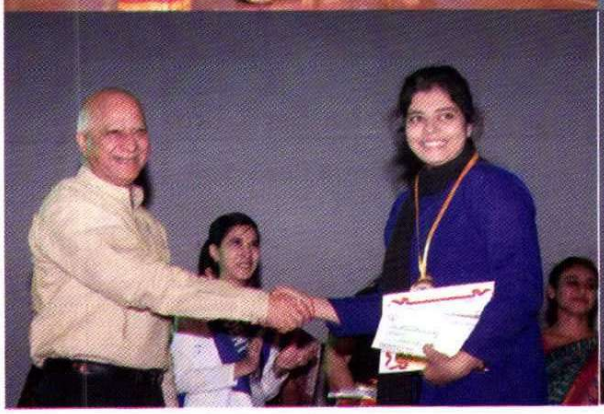

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

सीनेट हाउस, इलाहाबाद (उ.प्र.)- 211 002, भारत

University of Allahabad

Senate House, Allahabad (U.P.)- 211 002, India

Professor Rattan Lal Hangloo
Vice-Chancellor

प्रोफ़ेसर रतन लाल हंगलू
कुलपति

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पूर्व की भाँति इस वर्ष भी ''सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद'' अपनी वार्षिक पत्रिका ''**प्रमा**'' प्रकाशित कर रहा है। आशा है कि यह पत्रिका महाविद्यालय के विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों की रूप रेखा तथा शिक्षक व शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के विभिन्न लेखों से परिपूर्ण होगी। मै इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

रतन लाल हाँगलू
(रतन लाल हाँगलू)
RattanLal Hangloo

Former Vice-Chancellor / पूर्व कुलपति
University of Kalyani / कल्याणी विश्वविद्यालय
Nadia - 741235 (West Bengal) / नाडिया - 741235 (पश्चिम बंगाल)

Camp Office / शिविर कार्यालय:
Tele. / दूरभाष : (0532) 2545020
Fax / फैक्स : (0532) 2545733

Main Office / मुख्य कार्यालय:
Tele. / दूरभाष : (0532) 2461089, 2461157
Tele. / Fax टेली. / फैक्स : (0532) 2461157
e-mail / ई-मेल : vcoffice@allduniv.ac.in

निवर्तमान न्यायमूर्ति अरूण टंडन
इलाहाबाद उच्च न्यायालय
इलाहाबाद

हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय गत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका 'प्रमा' का प्रकाशन कर रहा है।

सफल लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए व्यक्ति द्वारा समानता स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और गरिमा जैसे मूल्यों का अवबोध और अनुप्रयोग आवश्यक है। महाविद्यालय पत्रिका 'प्रमा' छात्राओं को मंच प्रदान कर उक्त मूल्यों के सृजनात्मक प्रयोग का प्रशिक्षण प्रदान कर रही है। ईश्वर से प्रार्थना है कि महाविद्यालय की छात्राएं मानवीय गौरव व दायित्व बोध से स्वावलम्बन के पथ पर अग्रसर होते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान करें। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मंगल कामना करता हूँ।

(अरूण टण्डन)

Sar-La Education Trust

Admin. Office : 316, Neelam, 108, R. G. Thadani Marg, Worli, Mumbai 400 018, India.
Tel : +91 22 6660 7631 Email : info@sar-la.in

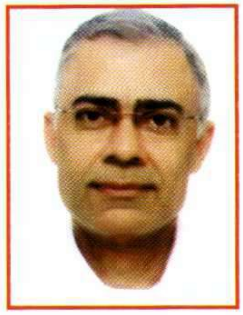

Message

The quality of education and extra-curricular activities of any college are reflected in its College Magazine as it carries the contributions reflecting ethos and aspirations of the students, faculty and other team members of the institution. The role of a college magazine is therefore vital in promoting what an institution offers. "PRAMA" is a perfect example.

PRAMA presents a healthy blend of traditional and modern education at the college where knowledge is imparted to the students so that they may occupy a better place in the society and develop all round personality, retaining the beauty of mind and intellect as well as of the soul. The students have made there marked in academic, sports and cultural activities. This reflects from the responsible position the alumni holds in social, political and economic streams.

All the is made possible with the dedicated efforts and hard work of the experienced faculty. I am confident that the College will play a meaningful role in the competitive times ahead and scale new heights translating the dreams of the students and management.

With best wishes,

(Chetan Mehrotra)
Executive Trustee

Regd. Office : N-5, Panchsheel Park, New Delhi 110 017.

DILIP MEHROTRA
DBA
TREASURER
S.S. Khanna Girls' Degree College
Allahabad

JOYTI NIWAS
1199, Kalyani Devi
Malvaya Nagar
Allahabad-211003 (U.P.)
M. : 9415215453, 9415024802

वार्षिक पत्रिका 'प्रमा' के माध्यम से महाविद्यालय की छवि समाज एवं प्रदेश में नया कीर्तिमान स्थापित कर रही है। कुशल नेतृत्व में महाविद्यालय ने सभी ऊँचाइयों को पूरा करने में जो योगदान दिया है वो सराहनीय है। महाविद्यालय परिवार को मेरी शुभकामनाएं।

(दिलीप मेहरोत्रा)

एक अनवरत् युद्ध

शिक्षा एक दान है- पुरानी पीढ़ी की ओर से नयी पीढ़ी को। लेकिन शिक्षा एक अनवरत् प्रक्रिया भी है। इस प्रक्रिया में अतीत से प्राप्त ज्ञान वर्तमान में अपना योगदान भी करता है। शिक्षा का मूल भी यही है-अर्थात् योगदान/कोई भी योगदान सामाजिक सहयोग और संस्कार से ही संभव है। तटस्थ या निजी स्वार्थों से संचालित समाज में सहयोग की भावना नहीं होती। ऐसे समाज में शिक्षा अपनी कोई भूमिका निभा नहीं पाती।

शिक्षा वहां भी कुछ नही कर पाती जहां वैचारिक जड़ता हो और आलोचना अथवा अस्वीकृति के लिए कोई स्पेस न हो। ज्ञान तभी प्राप्त हो सकता है जब हम पूर्व प्राप्त ज्ञान को चुनौती देते हैं। यदि हम पूर्व प्राप्त ज्ञान को अंतिम मान लें तो हम जड़ता को प्राप्त होते हैं और हमारे लिए कुछ भी 'नया' नहीं रह जाता - न तर्क न विश्लेषण। अशिक्षित होना उतना हानिकारक नहीं, जितना हानिकारक यह है कि हम या हमारा समाज 'प्राप्त शिक्षा' को अंतिम या सर्वश्रेष्ठ मान ले। ज्ञान सतत् चलने वाली प्रक्रिया है, इसमें कोई अंतिम ठहराव नहीं होता। कोई विचार, कोई धारणा, कोई मान्यता या कोई विश्वास यदि अंतिम हो सकता है, तब उसे ज्ञान नहीं, ज्ञान की मृत्यु कहेंगे।

प्रश्न वो चाबी है जिससे ज्ञान-महल के ताले खुलते हैं। उचित प्रश्न की सिंचाई से ज्ञान की फसल लहलहाती है। ऐसा कुछ भी नहीं जहां प्रश्नवाचक चिह्न न लग सकता हो। ऐसे प्रश्नों और विश्लेषणों ने ज्ञान के तमाम अनुशासन बनाये। कलात्मक और वैज्ञानिक वैचारिकी और अनुसंधान तैयार किये। जिस समाज ने अपनी वैचारिकी में अंतिम विश्वास कर लिया, तर्क को अस्वीकार किया, प्रश्न-चिह्नों को अपमानित किया, उस समाज में आज भी जड़ता का रंग बहुत गाढ़ा है। इतना गाढ़ा कि घनघोर अंधेरा भी मात खा जाए।

शिक्षा हर अंधेरे के सामने एक चुनौती ही नहीं, अंधेरे से लगातार चलने वाला यानी एक अनवरत् युद्ध भी है। शिक्षा प्रदान करने और शिक्षा ग्रहण करने वाला हर व्यक्ति एक सैनिक है और सैनिक हर देश एवं समाज में सम्मान के पात्र होते हैं।

आशा उपाध्याय

प्रतिभाएं

नीलू मिश्रा
छात्राध्यापिका-बी.एड. 2015-17
प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक (चारों संकाय के मध्य)

सकीना फामिता
सर्वोच्च स्थान
कला संकाय

अर्शी फातिमा
सर्वोच्च स्थान
विज्ञान संकाय

अपराजिता पाण्डेय
सर्वोच्च स्थान
वाणिज्य संकाय

कुलसूम जाफरी
सर्वोच्च स्थान
बायोटेक्नोलॉजी

सौम्या जायसवाल
सर्वोच्च स्थान (प्रथम वर्ष)
बी०एड० संकाय

From the Principal Desk

It has been a pleasurable journey leading the college to a successful completion of its 43rd year. The college campus in the academic session 2017-2018 was abuzz with events and activities in which the 'life and breath' of the college - our students earned accolades for the institution. I grant them my blessings and accord praise for all their endeavours. I assure them of generating more opportunities for expression of their innate potential and development of all-round personality. All the above stated efforts of the students became worthy due to the skilled guidance, motivation and cooperation of my faculty members. I acknowledge their contribution and coordination in letting me lead the institution a step forward. I congratulate the Editorial Team for showcasing a glimpse of all the activities of this academic session. As we are about to tread into the new academic session, I wish to pay my obeisance to all those people who have been a part in the making of this college as also it's continuing journey. Wish you good luck and success ahead.

(Lalima Singh)

डॉ0 सोनी श्रीवास्तव

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।"

"आत्मा किसी काल में न तो जन्म लेती है, न मरती है, न यह उत्पन्न हुई है और न भविष्य में फिर उत्पन्न होने वाली ही है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा नष्ट नहीं होती।"

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, सरोज–लालजी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय की समन्वयक, जन्तु विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. सोनी श्रीवास्तव का असामयिक निधन अत्यन्त शोक का विषय है। उनका अवसान शैक्षिक जगत के साथ–साथ सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी और महाविद्यालय के लिये अपूरणीय क्षति है।

छात्राओं की प्रिय, सहकर्मियों में स्नेहिल और सहयोगी शिक्षिका के रुप में विख्यात सोनी श्रीवास्तव का महाविद्यालय में कार्यकाल अविस्मरणीय है। शैक्षिक, सहशैक्षिक और सामुदायिक क्रियाकलाप में समान रूप से सिद्धहस्त और समर्पित डॉ. सोनी श्रीवास्तव का देहावसान शैक्षिक जगत के देदीप्यमान नक्षत्र का अकस्मात विलुप्त हो जाना है। सोनी श्रीवास्तव व्यक्तित्व और कृतित्व के रुप में हम सबकी स्मृति में सदैव रहेंगी। शोक संतप्त महाविद्यालय परिवार आपकी स्मृति को अपनी भावांजलि प्रदान करता है।

महाविद्यालय को गर्व है

मेजर जनरल आर.जी.आर. तिवारी, उत्तर प्रदेश निदेशालय, लखनऊ
कैप्टन डॉ. रेखा रानी को 2017-18 उत्तर प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ एन सी सी ऑफिसर का अवार्ड प्रदान करते हुए

कर्नल सुनील चतुर्वेदी, समदेश अधिकारी, 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन एन सी सी इलाहाबाद द्वारा
डॉ. रेखा रानी को कैप्टन रैंक प्रदान करते हुए

एन.सी.सी. प्रतिभाएं

2017-18

कैडेट अर्पिता बनर्जी

राष्ट्रीय स्तर (दिल्ली)
थल सैनिक कैम्प

कैडेट दीपशिखा शुक्ला

प्रदेश स्तर
1. मावलंकर शूटिंग (प्रदेश स्तर)
2. सर्वश्रेष्ठ एन सी सी कैडेट अवार्ड (इलाहाबाद ग्रुप)

गार्ड ऑफ ऑनर

कैडेट मंजरी शुक्ला

सीनियर अण्डर ऑफिसर

कैडेट अनुपमा पाल

कैडेट रोशनी

कैडेट रानी चौरसिया

कैडेट तृप्ति द्विवेदी

साहित्य और सत्ता में अन्तः सम्बन्ध

शिवानी त्रिपाठी
बी.ए. तृतीय वर्ष

'सत्ता तू बड़भागिनी मिले न बारम्बार।
तेरे रहते देख लूँ, बढ़िया बंगला कार।।'

साहित्य और राजनीति (सत्ता) का आपस में गहरा सम्बन्ध है या यूँ कहें कि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आदिकाल से ही साहित्य में राजनीति का बोलबाला रहा है। पल-पल बदलती हुई राजनीति ने साहित्य में भी अमिट छाप छोड़ी। दोनों ही लोकमंगल की भावना से प्रेरित हैं। समाज को खुशहाल बनाने और आनन्द में डुबो देने की कोशिश अपने-अपने ढंग और साधनों से दोनों ही करते हैं। राजनति अपने कार्यक्रमों और नीतियों को प्रस्तुत करती है, सत्ता के लिए संघर्ष करती है, लेकिन साहित्य सत्ता के लिए सीधे संघर्ष नहीं करता। वह वास्तविक जीवन को देखता है, भोगता है, अनुभव प्राप्त करता है और जीवन में जनता की खुशियों और तकलीफों को वाणी देता है।

''सावधान रखते स्वदेश को और बढ़ाते मान भी।
राजदूत है आँख देश की और राज्य के कान भी।''

वह जीवन की वास्तविकता से कलात्मक बिम्बों की सर्जना करता है। इस सर्जना के दौरान यह आवश्यक नहीं होता कि जनता की जिंदगी और उसकी समस्याएं उसकी रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित ही हो। ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी, किन्तु राजनीति में यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से घटित होती है।

''राजनीति के खेल में कोई शत्रु न मित्र।
सत्ता सुख पनपा रहा अवसरवाद विचित्र।।

साहित्य विचारधारात्मक अधिरचना का अंग होता है, जबकि राजनीति वर्ग संघर्ष और सत्ता के लिए किये जाने वाले संघर्ष का प्रत्यक्ष रूप है। कोई भी दल या राजनीतिक व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि वह अपनी सत्ता बनाए रखने की लड़ाई लड़ रहा है। प्रेमचन्द ने समाज और राजनीति के आपसी संबंधों के बारे में कहा- ''जिस भाषा का साहित्य अच्छा होगा, उसका समाज भी अच्छा होगा। समाज के अच्छे होने पर स्वभावतः राजनीतिक सत्ता भी अच्छी होगी। ये तीनों साथ-साथ चलने वाली चीजें हैं। इन तीनों का उद्देश्य ही जो एक है। यथार्थ में समाज, साहित्य और राजनीति का मिलन बिन्दु है।''

प्राचीन काल में साहित्य में मूलतः धर्म का व्यापक प्रभाव रहा है, किन्तु क्रमशः इसमें राजनीतिक घटनाओं और स्थितियों का विवरण भी होने लगा था। उदाहरण 'रामायण जैसे महान ग्रन्थ में भी राजनीतिक स्थिति का आभास मिल जाता है। इतना ही नहीं 'महाभारत' में भी राजनीतिक कौशल, दाव-पेंच का सूक्ष्म निर्देशन देखने को मिलता है।

''वादों के पौधों में नेताजी
डाल रहे है खाद।
कुर्सी मिलेगी मुरझाएंगे पौधे
इलेक्शन के बाद।''

साहित्य और राजनीति दोनों ही शोषक और शोषितों के बीच होने वाले संघर्षों की अभिव्यक्ति अपनी-अपनी सीमाओं और सामर्थ्यों के अनुकूल करते हैं, इसलिए दोनों को ही उस अधिरचना का अंग कहा गया जिसका आधार वर्गीय समाज है। अतएव राजनीति और साहित्य जिस वर्ग से प्रभावित होता है, उसी की सेवा करता है। यही कारण है कि राजनीति और साहित्य दोनों ही या तो प्रगतिशील होते हैं या प्रतिक्रयावादी, लेकिन साहित्य हो या राजनीति दोनों शुभ तभी होते हैं जब वे लोकतंत्र लोकमंगल के रास्ते पर अग्रसर होते हैं।

''जन सेवा हेतु बना, राजनीति का कर्म।
नेता करियर मानते, समझ न पाते मर्म।।''

राजनीति और साहित्य में परस्पर संबंध है। हर प्रबुद्ध इनमें अन्तःसम्बन्ध स्वीकारता है। कलाकुमार के शब्दों में- 'राजनीति और साहित्य का अंगामी सम्बन्ध है। मैं तो यह कह सकता हूँ कि राजनीति साहित्य से विलग होकर रह ही नहीं सकता और यदि रहे भी तो वह अपना आदर्श (जिसमें कि लोक-जीवन का हित निहित है।) खो देती और साहित्य भी राजनीतिक पहलुओं की कल्पना एवं अभिव्यक्ति से समाज पर अपना प्रभाव डालता है। उसने तो विश्व का नक्शा ही बदल दिया।

''राजनीति के गुल खिले, नित नए धवल प्रवीन।
तीन लोक तारण तरण, संविधान आधीन।''

संस्कृति को प्रभावित करने वाले तूफानों, झंझावातों को साहित्यकार अपनी पैनी दृष्टि से देखता है और अपनी ऊर्जा रचना धर्मिता का सदुपयोग कर वह ईमानदार अभिव्यक्ति करता है, ऐसा करने में साहित्य

का न तो कुछ नुकसान होता है न अपमान; क्योंकि साहित्य राजनीति का अनुचर उसे पूरा अधिकार है कि जीवन के विशाल क्षेत्र में वह अपने काम के योग्य सभी द्रव्य उठा ले, जिन्हें राजनीति अपने कार्य में लाती है।

''उत्सव आम चुनाव का हुआ सफल सम्पन्न।
अन्त भला तो सब भला, जनता दिखे प्रसन्न।।''

रीतिकालीन कवि बिहारी ने एक दोहे के माध्यम से अपनी प्रजा एवं राज्य के प्रति उदासीन राजा जयसिंह को राजकार्य की ओर प्रेरित कर दिया था।

''नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली कली ही सौं बँध्यो, आगे कौन हवाल।।''

साहित्य के साथ अटूट संबंध को हम इतिहास के पृष्ठों में पाते हैं। हमारे देश में मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भारतीय ग्रामों की व्यथा-कथा, जमींदारों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का चित्रण कर जमींदारी-प्रथा के उन्मूलन का समर्थन किया। स्वतंत्रता के पश्चात् भूमि-सुधार एवं जमींदारी उन्मूलन की दृष्टि से जो प्रयत्न किए गए वे इन जैसे साहित्यकारों की रचनाओं में निहित प्रेरणा का ही परिणाम है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है-

''प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है।''

जनता की चित्तवृत्ति ही राजनीतिक सत्ता का स्वरूप सुनिश्चित करती है। आज हम अपनी सत्ता बनाने के फेर में जनहित भूल रहे हैं। सत्य ही कहा गया है-

''जब तक रहो विपक्ष में, खूब करो हड़ताल।
कागा चित्त से बने रहो, चलो हंस की चाल।''

प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी ने परोक्ष सत्ता प्रेम को विषय बनाकर रचनाएँ की। हमें पग-पग पर साहित्य और सत्ता में अन्तःसम्बन्ध देखने को मिलता है।

परेशनियों से भागना आसान होता है,
हर मुश्किल जिंदगी में एक इम्तिहान होता है।
हिम्मत हारने वाले को कुछ नहीं मिलता जिंदगी में
मुश्किलों से लड़ने वाले कदमों में जहाँ होता है।

मेरा हिन्दुस्तान

आयुषी जायसवाल
बी.एड. प्रथम वर्ष

जहाँ शिवाजी ने मुगलों को नाकों चने चबवाये थे
जहाँ बचपन में ही भरत शेरों के दांत गिन आये थे
जहाँ कन्हैया की बंसी ने मीठे-मीठे स्वर छुए थे
जहाँ की धरती में पुरुषों में सर्वोत्तम श्रीराम हुए थे
जहाँ नदियों की पूजा होती, सम्मान पाती नारियां
जहाँ की धरती पर गूंजी थी, कान्हा की किलकारियां
जहाँ कोयले कूं-कूं करके गाती सुबह का गान है
जहाँ के वेदों ग्रन्थों में सिमटा जीवन का ज्ञान है
वो मेरा हिन्दुस्तान है, वो मेरा हिन्दुस्तान है।
जहाँ राम नाम के पत्थर से सागर पर थे पुल बनाये
जहाँ ऋषि अगस्त्य क्रोध से, सारा समुद्र ही पी आये
जहाँ की सभ्यता युगों-युगों सदियों साल पुरानी है
जहाँ की संस्कृति श्रेष्ठ, सारे वीर स्वाभिमानी है
जहाँ की धरती का विस्तार लंका और गांधार है
जहाँ चहुँ दिशाओं में फैले, धामों क आधार है
जहाँ की पावनता का गाता सारा जग गुणगान है
जहाँ देश ही पहले है, फिर कोई भगवान है
वो मेरा हिन्दुस्तान है, वो मेरा हिन्दुस्तान है।।

आलेख

जानवरों के शरीर मे मानवीय अंगों का विकास

मीनाक्षी श्रीवास्तव
आसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. मधु टण्डन बी.एड. विभाग

अंग-प्रतिरोपण की प्रतीक्षा में दुनिया भर में हर वर्ष लाखों लोग दम तोड़ देते है, इसी को ध्यान में रखते हुए अब वैज्ञानिक जानवरों में मानव-अंग विकसित करने के प्रयास में जुटे है। स्टेम सेल और जीन एडिटिंग तकनीकी की मदद से उन्होंने 50 भेड़ों और सूअरों के गर्भ में ऐसे हाइब्रिड भ्रूण प्रतिरोपित कए है जिनसे जन्म लेने वाली जानवरों के शरीर में, पशु के बजाए इंसानी अंग विकसित होंगे, इन अंगों को मानव शरीर में प्रतिरोपित कर लाखों लोगों को जिन्दगी को उपहार दिया जा सकेगा।

हाइब्रिड भ्रूण तैयार करने के लिए वैज्ञानिकों ने स्टेम सेल और जीन एडिटिंग जैसी आधुनिक तकनीकों का सहारा लिया। सबसे पहले मिनेसोटा यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अमरीका में 50 भेड़ों और सूअरों के भ्रूण से एक खास अंग, जैसे- हृदय या किडनी पैदा करने वाले जीन डिलीट किए, फिर उसकी जगह मानव किडनी या हृदय विकसित करने में सक्षम स्टेम कोशिकाएं प्रतिरोपित की, हाइब्रिड भ्रूण को कुछ दिन उचित तापमान पर विभिन्न पोषक तत्त्वों के सम्पर्क में रखा ताकि उनमें मौजूद स्टेम कोशिकाएँ मानव अंग विकसित करने में अधिक सक्षम हो जाएँ। इसके बाद उन्हें भेड़ और सूअर के गर्भ में प्रतिरोपित कर दिया जहाँ अंगों का विकास फिलहाल सुचारु रुप से चल रहा है।

स्टेम सेल शरीर की मास्टर कोशिकाएँ होती है इनमें कोशिकाओं, उत्तकों, हड्डियों, माँसपेशियों, नसों और अंगों में तब्दील होने की अद्‌भुत क्षमता होती है। वैज्ञानिक लैब में कृत्रिम अंगों का उत्पादन करने के लिए इन्हीं कोशिकाओं की मदद से जानवरों के शरीर में मानव अंग विकसित करने की तकनीक को कानूनी मंजूरी भी प्रदान कर सकती है।

वैज्ञानिकों का दावा है कि जानवरों के शरीर में विकसित किए जाने वाले मानव अंग हूबहू इंसानी अंगों की तरह काम करेंगे।

कहानी

विश्वास नहीं होता

बिन्दू
बी.एड. द्वितीय वर्ष

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में अपने विचारों का आदान-प्रदान करता रहता है तथा उन विचारों से खुद को व दूसरों को प्रभावित करता है। अक्सर लोग बातें करते हुए कहते है कि विश्वास नहीं होता। लोग ऐसा क्यों कहते है ? क्यों उन्हें किसी भी बात पर विश्वास नहीं होता।

श्याम ने किस अनजान व्यक्ति को कॉल किया और यही बात पूछी कि सच बताना अक्सर लोग बाते करते हुए कहते है कि विश्वास नहीं होता। अनजान व्यक्ति ने नाराज होकर श्याम से कहा कि जब तुम्हारे जैसे इंसान कॉल करेंगे तो सचमुच में लोगों को विश्वास नहीं होगा।

श्याम ने उस अनजान व्यक्ति को शान्त कराकर एक कहानी सुनाई। यह कहानी एक ठाकुर के घर की है। ठाकुर जी पिता बनने वाले थे। उनकी इच्छा थी कि उनको एक बेटा हो, उन्होंने बेटे के लिये नाम भी सोच लिया था। वह अपनी पत्नी का खास ख्याल रखते तथा खुश रखने की कोशिश करते। ठाकुर साहब बहुत खुश थे किन्तु उनकी खुशी गम में बदल गयी क्योंकि उनको बेटा की जगह बेटी हुई, उनके चेहरे पर उदासी छा गयी।

समय बीतता गया और कुछ समय पश्चात् वही बेटी बड़ी होकर आई.ए.एस. ऑफिसर बनी और उसने अपने गाँव एवं परिवार का नाम रोशन किया। ठाकुर साहब ने आँख बंद करके खुशी के साथ कहा कि अब विश्वास हो रहा है कि जरूरी नहीं कि बेटा ही हो, बेटी भी पढ़-लिखकर घर, समाज का नाम रोशन कर सकती है।

श्याम की कहानी सुनकर अनजान व्यक्ति ने कहा कि तुमने मुझे एक अच्छा मैसेज दिया है, अब यह मैसेज औरों तक भी पहुँचनी चाहिए जो ऐसी सोच रखते हैं।

अनजान व्यक्ति की बात सुनकर श्याम ने हंसते हुए कहा कि मुझे भी विश्वास नहीं हो रहा है कि आप ऐसी बात कहेंगे, क्योंकि वह अनजान व्यक्ति भी ऐसी सोच रखने वाला व्यक्ति था। अब उसकी भी आंखे खुल गयी थी और वह अनजान व्यक्ति श्याम का बचपन का बिछड़ा हुआ खास मित्र था।

पर्यावरण

प्रकृति

प्राची त्रिपाठी
बी.एड. द्वितीय वर्ष

महात्मा गाँधी ने कहा है- "Earth provides enough to satisfy every man's needs, but not every man's greed."

महात्मा गाँधी के इन शब्दों ने हमें न केवल प्रकृति की महत्ता का ज्ञान करा दिया अपितु स्वयं के बारे में निरीक्षण करना भी आवश्यक बताया। प्रकृति पृथ्वी के अस्तित्त्व का एक मात्र जरिया है। प्रकृति है तो हम है, सभी प्राणी हैं, जीवन है।

प्रकृति का जिस तरह विनाश होता जा रहा है उसका मात्र और मात्र एक कारण मनुष्य जाति है। प्रकृति का विध्वंस मतलब स्वयं का विध्वंस। प्रकृति शांत, ममतामयी, करुणामयी, स्नेही, जीवनदायिनी संतुलन को बनाये रखती है। परंतु इन सब के बावजूद मनुष्य बिना सोचे विचारे सिर्फ वर्तमान की अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण करने में लगा है। उसे वह सभी चीजें चाहिए जो भौतिक सुख-सुविधा दे सकें। वह अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाता ही जा रहा है, अपनी भावी पीढ़ियों, भविष्य, अन्य प्राणियों को अनदेखा कर अपने स्वार्थ सिद्धि में लगा है। वह न केवल एक भोगी, लालची, भौतिकवादी अपितु निर्दयी होकर अशांति की ओर भागता ही चला जा रहा है।

प्रकृति का विनाश उसके कर्मों का ही परिणाम है। वह भूकम्प, आँधी, तूफान, सुनामी, बाढ़ जसी आपदा को लगातार झेलता ही आ रहा है, बावजूद इसके वह और चाहता है, वह प्रकृति को चुनौती पेश कर रहा है बिना परिणाम को जाने हुए।

प्रकृति मानव के वार को सहे जा रही है परंतु मानव तनिक भी दूरगामी भविष्य की चिंता किये बिना प्रकृति के संतुलन को विनष्ट करता जा रहा है।

अतः समस्त मानव जाति को कुछ करने से पहले उसमें पहले प्रकृति के दृष्टिकोण को देख लेना चाहिए तत्पश्चात् अगला कदम बढ़ाना चाहिए अन्यथा हम पृथ्वी के संतुलन को पूरी तरह से असंतुलित कर देगें। जिसके परिणाम भयावह होंगे।

आत्मविश्वास

लगन बनाती है विजेता

कामना
बी.एड. प्रथम वर्ष

कछुए एवं खरगोश की कहानी तो सबने सुनी होगी। प्रतियोगिता में खरगोश की योग्यता कछुए से कहीं अधिक थी, फिर भी खरगोश पराजित हुआ।

योग्यता हर किसी में होती है, किसी में कम, किसी में ज्यादा। व्यक्ति के पास यदि विशेष प्रतिभा है लेकिन काम करने की लगन नहीं है तो वह ज्यादा कुछ नहीं कर सकता क्योंकि उस विशेष प्रतिभा का अहंकार उन्हें पर्याप्त प्रयास नही करने देता। वहीं दूसरी तरफ साधारण व्यक्ति असाधारण लगन से अपने जीवन में कुछ न कुछ अच्छा कर जाता है। उनकी लगन उन्हें आसमान की ऊँचाईयों तक पहुँचाती है।

लगन की विशेषता यह है कि यह व्यक्ति की कमजोरी को भी उसकी ताकत में बदल देती है। किसी नए कार्य को सीखने के लिए या किसी कार्य को पूरा करने के लिए, अपने लक्ष्य को पाने के लिए लगन का होना अति आवश्यक है। लगन ही व्यक्ति के अंदर हौसला एवं आत्मविश्वास बढ़ाती है। शनैः शनैः ही सही आपकी लगन ही आपको विजेता बनाती है।

मेरा आसमाँ

बिन्दु
बी.एड., द्वितीय वर्ष

छू लूँगी आसमां को
पंख तो पहले लगने दो
नन्ही सी जान हूँ
कुछ जान तो लेने दो
पाँव चलेंगे आसमां पर
पहले जमीं पर चलने दो
मत सोचो की खत्म हुआ
शुरू तो पहले होने दो।
हार-जीत तो होती है
कदम बढ़ाना पड़ता है
मंजिल सबकी होती है
राह बनाना पड़ता है
मत रोको जग मशाल को
लौ किरण अब जलने दो।।

मानव प्रेम

ज्योति मिश्रा
बी.एड. द्वितीय वर्ष

एक मानव का प्रेम है देखो
पाना दुर्लभ दुनिया में
यदि मिल जाए उसे बचाना
और भी दुर्लभ दुनिया में
प्रेम के अपने रूप कई हैं
विविध रूप में दिखता है
हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई
वर्ग-जाति में बँटता है।
सम्बन्धों में बंधा हुआ दिखता है
माँ-बाबा, बेटा-बेटी और
भाई-बहन में बँटता है
कहीं अजनबी कोई किसी का
जीवन साथी बनता है
प्रेम के कारण जीवन सारा
साथ-साथ ही गुजरता है
हो कोई परिस्थिति सुख-दुःख हो
दोनों का बँट जाता है
राधा ने किया प्रेम कृष्ण से
जोगन मीरा बन गई थी
प्रेम में ही रुक्मिणी-अरुन्धती
चैन की नींद न पाई थी
पर आज प्रेम का रूप परस्पर
छिन्न-भिन्न हो दिखता है
अब मानव का प्रेम भी देखो
कितने रंग बदलता है
मानव में जब बिना स्वार्थ
कोई निश्छल भावना जगती है
उसके लिए कुछ करने को जब
मन में इच्छा पलती है
लाभ-हानि को सोचे बिन जब
कदम मदद को बढ़ते हैं
मानव प्रेम के स्वच्छ रूप का
स्पर्श यहीं हम करते हैं।।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

कोमल सोनकर
बी.एड., प्रथम वर्ष

मत मारो तुम कोख में इसको
इसे सुंदर जग में आने दो
छोड़ो तुम अपनी सोच ये छोटी
इक माँ को खुशी मनाने दो
बेटी के आने पर अब तुम
घी के दिए जलाओ
आज से संदेशा पूरे जग में फैलाओ
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ।
लक्ष्मी का कोई रूप कहे है
कोई कहता दुर्गा काली
फिर क्यों न कोई चाहे घर में
इक बिटिया प्यारी-प्यारी
धन्य ये कर दे जीवन सबका
जो तुम इस पर प्यार लुटाओ
आज ये संदेशा पूरे जग में फैलाओ
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ।
ये आकाश में गोते लगाती
यह तो कहलाती मर्दानी
यह तो है कल्पना चावला
यही तो है झाँसी की रानी
इनको देकर पूरी शिक्षा
अपना कर्तव्य निभाओ
आज ये संदेशा पूरे जग में फैलाओ
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ।

गाथा वीर जवान की

पूजा द्विवेदी
बी.एड. प्रथम वर्ष

आज एक कलाम, हमारे देश के फौजियों के नाम
जिनसे है हिन्दुस्तान का मान-सम्मान
अन्दर लड़ते हम हिन्दू हम मुसलमान
और इन सबसे बेनाम हमरे वीर जवान
जिनकी धमनियों में बहते रक्त की जगह शोले
जिनकी शौर्य की गाथा से जग गाता
दुश्मनों के दिल जिनके नाम से काँपते
करती हूँ उनको शत्-शत् नमन
शहीदो की शहादत में नाम बढ़ते जा रहे
और नेता उन पर सियासत खेलते जा रहे
लगी कहीं पर अश्कों की झड़ी
और नेताओं को एक-दूसरे पर कटाक्ष करने की पड़ी
आज फिर कोई आएगा अपने घर
कफन तिरंगा का लपेटकर
उन शहीदों की शहादत को याद कर
करती हूँ उनको शत्-शत् नमन

मेरा हिन्दुस्तान

आयुषी जायसवाल
बी.एड. प्रथम वर्ष

जहाँ शिवाजी ने मुगलो को नाकों चने चबवाये थे
जहाँ बचपन में ही भरत शेरों के दांत गिन आये थे
जहाँ कन्हैया की बंसी ने मीठे स्वर छुए थे
जहाँ की धरती में पुरुषों में सर्वोत्तम श्रीराम हुए थे
जहाँ नदियों की पूजा होती, सम्मान पाती नारियां
जहाँ की धरती पर गूंजी थी, कान्हा की किलकारियां
जहाँ कोयले कूं कूं करके गाती सुबह का गान है
जहाँ के वेदों ग्रंथों में सिमटा जीवन का ज्ञान है
वो मेरा हिन्दुस्तान है, वो मेरा हिन्दुस्तान है।
जहाँ राम नाम के पत्थर से सागर पर थे पुल बनाये
जहाँ ऋषि अगस्त्य क्रोध में, सारा समुद्र ही पी आये
जहाँ की सभ्यता युगों युगों सदियों साल पुरानी है
जहाँ की संस्कृति श्रेष्ठ, सारे वीर स्वाभिमानी है
जहाँ की धरती का विस्तार लंका और गांधार है
जहाँ चहुँ दिशाओं में फैले, धामों का आधार है
जहाँ की पावनता का गाता सारा जग गुणगान है
जहाँ देश ही पहले है, फिर कोई भगवान है
वो मेरा हिन्दुस्तान है, वो मेरा हिन्दुस्तान है।।

औरत

तृप्ति कौशल
एम.एस-सी. प्रथम वर्ष

तन्हा हैं तो क्या हुआ, मजबूर तो नहीं
माँ-बाप साथ नहीं तो क्या, दूर भी तो नहीं
तुम रौब क्यों जताते हो हम पर, अपने मर्द होने का
हम औरतें हैं तो क्या, तुमसे कमजोर तो नहीं
सोच तुम्हारी छोटी है, बुरे हम तो नहीं
जरूरत तुम्हें हमारी है, तुम बिन अधूरे हम तो नहीं
नजरों में अपनी शराफत तुम बसा लो
सहूलियत सिखाने की जरूरत हमें तो नहीं
छोड़ दो तमन्ना उन्हें कफस में रखने की
कैद में रख पाना उन्हें अब तुम्हारे बस में तो नहीं
फक़त इल्तजा होती है, उन्हें भी इज्जत पाने की
जो वो भी ना दे पाये, तो तुम्हें भी पैदा होने का हक तो नहीं।।

बचपन लौट आया

दीप्ति यादव
बी.एड. द्वितीय वर्ष

आज दादी को ध्यान से देखा तो महसूस हुआ
बचपन लौट आया
वो लड़खड़ा कर चलना, वो खुद में बड़बड़ाना
किसी का हाथ पकड़ कर चलना, तो किसी से रूठ जाना
वो दाँतो का टूट जाना, वो खाने में नखरे दिखाना
वो रूठना, वो मनाना
सब वैसा ही तो है, जैसा बचपन में होता है
शायद दादी का बचपन लौट आया
बात इतनी सी थी, पर शायद समझने में देर हुई
बचपन दो बार आया।
एक जन्म के बाद कुछ सालों तक, एक बूढ़े होने पर
कल जो किया छोटी उम्र में वही आगे करते हैं बड़े होने पर
कौन कहता है कि बचपन लौट कर नहीं आता
आज दादी को देखा तो महसूस हुआ
दादी का बचपन लौट आया।।

जब-जब उठाओगे आवाज

दिव्या मिश्रा
बी.एड. प्रथम वर्ष

जब-जब उठाओगे आवाज किसी जुल्म के खिलाफ
कीमत तो चुकानी ही पड़ेगी
जिंदा लाशों की इस दुनिया में
खामोशी तोड़ने की सजा तो पानी ही पड़ेगी
जब छोड़ देंगे लोग साथ तुम्हारा
तब अकेले जीने की आदत तो लानी ही पड़ेगी
खिलते हुए जख्मों के साथ चेहरे पर मुस्कुराहट लिए
आंसू की नदी तो बहानी ही पड़ेगी
जब झूठ के अंधेरे में डर लगने लगे
तब सच की मशाल तो जलानी ही पड़ेगी
खून की बारिशों में भीगते हुए
कांटो के बीच राह तो बनानी ही पड़ेगी
जब सर पर कफन बांधकर निकल पड़े हो
फिर सुनहरे लम्हों की याद तो भुलानी ही पड़ेगी
जब हौसले दम तोड़ने लगे
तब जीत की इक आस तो जलानी ही पड़ेगी
टूट के, बिखर के, हर प्रहार सह के
फिर से लड़ने की हिम्मत तो जुटानी ही पड़ेगी
जब कयामत की धुन बजने लगे फिर
जिंदगी की सेज पर मौत तो सजानी ही पड़ेगी
हैवानियत की इस जंग में इनसानियत की खातिर
तुम्हें अपनी जान तो लुटानी ही पड़ेगी।

हर इंसान अकेला है

फरहीन मेंहदी
बी.एड. प्रथम वर्ष

कही खुशियां तो कहीं गम का मेला है
इस दुनिया में हर इंसान अकेला है
कोई दुःख से परेशान
तो कोई सुख से हैरान है
इस दुनिया में हर कोई
कुछ दिन का मेहमान है
फिर भी लोग ढेर सारे रिश्ते नाते बनाते हैं
कुछ को तोड़ते हैं और कुछ को निभाते हैं
सब जानते हैं कि ऊपर वाले ने यह खेल खेला है
इस दुनिया में हर इंसान अकेला है
खाली हाथ आए थे खाली हाथ जाना है
आज यहाँ हैं कल न जाने कहाँ जाना है।।

नन्ही सी कली

अंजना कुमारी
बी.एड., प्रथम वर्ष

एक नन्ही सी कली, धरती पर खिली
लोग कहने लगे पराई है पराई
जब तक कली ये डाली से लिपटी रही
आँचल में मुँह छिपा कर, दूध पीती रही
फूल बनी धागे में पिरोई गई
किसी के गले में हार बनते ही
टूट कर बिखर गई
ताने सुनाये गये दहेज में क्या लायी है
पैरों से रौंदी गई
सोफा मार कर घर से निकाली गई
कानून और समाज से माँगती रही न्याय
अनसुनी कर उसकी बातें
धज्जियाँ उड़ाई गई
अंत में कर ली उसने आत्महत्या
दुनिया से मुँह मोह लिया
वह थी
एक गरीब माँ-बाप की बेटी।।

आलेख

छंद का अर्थ, स्वरुप और कविता में उसका महत्त्व

डॉ. आशा उपाध्याय
हिन्दी विभाग

छंद की व्युत्पत्ति **'छवि संवरणे'** और **'चदि आह्लादने दीप्तौ च'** से मानी जाती है। निरूक्त दैवतकांड ७/१२ में लिखा है **''मन्त्रः मननात् छन्दांसि छादनात्''** अर्थात् मनन और मंत्र और आच्छादन से छंद बनता है। पहली परिभाषा के अनुसार छंद वह रचना विधान है जो अपने द्वारा कथ्य को, सम्प्रेषण को आच्छादित करता है और दूसरी परिभाषा के अनुसार छंद रचना को हर्ष और दीप्ति देता है। दोनों परिभाषाओं के अर्थ एक दूसरे से जुड़े हैं।

उपनिषद और वेदों में छंद को रस, प्राण और इन्द्रिय के पर्याय रूप में देखा गया है। **रसो वै छन्दासि प्राणाः वै छंदासि 'इन्द्रियं वीर्ये छन्दासि,** अथर्ववेद (90/8/32) अथवा **छंद - देवस्यू पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।** सजीव अर्थ को धारण करने वाला हर लयात्मक विन्यास छंद है। यद्यपि रूढ़ अर्थ में 'छंद' शब्द काव्य तक सीमित माना गया है।

पाणिनी ने छंद को परिभाषित करते हुए लिखा कि **''छंदः, पादौ तु वेदस्य''** (छन्द वेद के चरण हैं) इसे हम आधुनिक संदर्भ में इस रूप में व्याख्यायित कर सकते हैं कि छन्द काव्य-पाठ की गति के सूचक होने के साथ-साथ विचार और संवेदना के भी वाहक होते हैं। हम यों कह सकते हैं कि छंद का ही दूसरा नाम नियमानुशासित लय-योजना है। समकालीन रचनाकारों ने इसी छंद को लय रूप में परिवर्तित कर उसके महत्त्व को स्वीकार किया है। लय को छंद का सूक्ष्म रूप कहा जा सकता है।

छंद शब्द जिस धातु से उत्पन्न है उसके तीन अर्थ है - (1) ढंकना या छिपाना (2) अच्छा लगना या प्रिय लगना (3) मन में कोई अभिप्राय रखना। छंद और कविता का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। हम छंद को परिधान और कविता को आकृति भी मान सकते हैं। छंद कविता को नाद सौन्दर्य प्रदान करता है। आई.ए. रिचड्र्स ने भी छंद को 'शरीर में व्याप्त चक्रीय उत्तेजना' से जोड़ा है। भारतीय साहित्य में तो शुरू से ही छंद को मनुष्य के प्रति गहरी आंतरिकता से जोड़ा गया है। आधुनिक चेतना ने साहित्य की अनुभूति और अभिव्यक्ति की चेतना के साथ-साथ छान्दस अवधारणा में भी परिवर्तन किया। लेकिन इधर कुछ वर्षो में कविता में छंद की मांग तेजी से उठ रही है। निराला ने स्पष्ट का था ''मुक्त छंद तो वह है जो छंद की भूमि में रहकर मुक्त है।'' ''छंद का सार लय है इसलिए कविता में लय का जीवित रहना प्रकारान्तर से छंद का ही जीवित रहना है। लय क्या है ? ब्रेवर ने स्वराघात और निराघात (acent and non accent) के अनवरत प्रवाह से उत्पन्न ध्वनि तरंग को लय कहा है। बेंजामिन हुर्शोवस्की का कहना है कि ''व्यावहारिक रूप से कविता में लिखी गयी हर चीज लय की रचना में योग देती है।'' शब्द की बहुकोणी संरचना, स्वर का प्रसार, शब्दार्थ, भाव परिवेश, ध्वनि सान्निध्य, व्याकरणिक चिह्न, पंक्ति का संकेत और विस्तार, पंक्ति का स्थान जैसे समस्त साधन लय की संरचना में सार्थक भूमिका निभाते हैं।

कुछ लोग 'अर्थ की लय' और 'गद्य की लय' की बात करते हैं लेकिन यह समझना होगा कि लय न तो अकेले शब्द की होती है न एकान्त अर्थ में। शब्द और अर्थ के लय का न तो रचनात्मक महत्त्व है और न आस्वादनगत। अर्थ की लय को महत्त्व देने वाले आचार्यों का कहना है कि ''यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या कोई ऐसी रचना भी है जिसमें अर्थ की अन्विति न हो। देखा जाय तो शब्द-लय में ही अर्थ-लय छिपा होता है। अज्ञेय ने लिखा है- ''छंद का बाह्य रूप वाक्य रचना या योजना अन्विति पर निर्भर करता है और आन्तरिक रूप लय पर। अनुभूति के खरेपन तथा उक्ति की प्रभावशीलता कवि के आन्तरिक अनुशासन से बंध कर काव्य-लय का निर्माण करते हैं।''

तीसरे सप्तक के कवि प्रयाग नारायण त्रिपाठी ने लिखा है ''कविता में, चाहे वह आज की ही हो, चाहे आगामी कल की, यदि लय नहीं है तो मैं उसे कविता नहीं कहूंगा।'' यह सत्य है कि गद्य यथार्थ की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है लेकिन कविता में उसका समावेश संरचनात्मक नहीं, संचेतनात्मक दृष्टि से होना चाहिए। अज्ञेय ने लिखा भी है कि 'आज की कविता बोलचाल की अन्विति मांगती है, गद्य की लय नहीं मांगती।'' 'गद्य की लय' या 'अर्थ की लय'-सार्थक तभी होगी जब कविता में लय होगी। यह संभव नहीं कि हम कविता लिखें गद्य की तरह और पढ़ें उसे लयात्मक ढंग से।

रीतिकाल में छंदों का एक निश्चित क्रम था। आधुनिक काल में कवित्त, सवैया और दोहा के अतिरिक्त अन्य कई नये छंद बंगला, अंग्रेजी और संस्कृत के सम्पर्क में आने के बाद लिये गये। भारतेन्दु युग में इसका उदाहरण मिलता है। द्विवेदी युग में खड़ी बोली हिन्दी कविता के लिये उपयुक्त छंद की खोज ने व्यापक रूप धारण कर लिया। फारसी, उर्दू के छंदों को हिन्दी में प्रचलित करने की चेष्टा भी इस युग में की गयी। छायावाद ने गीतों को नया उत्कर्ष प्रदान किया। निराला ने जब 'मुक्त छंद' की बात की तब उनका तात्पर्य मानव जाति की मुक्त चेतना से था। निराला की दृष्टि में 'मुक्त छंद' तो वह है जो छंद की भूमि में रह कर भी मुक्त है। .....मुक्त छंद का समर्थक उसका प्रवाह ही है। वही उसे छंद सिद्ध करता है और उसका नियम-राहित्य उसकी मुक्ति।" निराला ने उन्मुक्त प्रवाह युक्त छंद को 'मुक्त छंद' कहा है। छायावाद और उसके बाद छंदों के रूढ़ विधान को तोड़ा गया इस शर्त पर कि लय का आधार बना रहे। नवगीत ने एक तरफ लोकगीत और दूसरी तरफ कविता की शक्ति को संचित किया।

समकालीन कविता और छंद पर चर्चा करते समय मुक्त छंद के इतिहास को भी जानना जरूरी हो जाता है। निराला से शुरू हुई मुक्त छंद की यह प्रवृत्ति आज तक जारी है। देखा जाय तो मुक्त छंद के हिमायती रचनाकारों द्वारा इस दृष्टिकोण को अपनाने के पीछे रचना को 'तुक' के अत्याचार से मुक्त करने का बीड़ा था। मुक्त छंद में यदि तुकान्तता का कोई आग्रह नहीं है तो निषेध भी नहीं है। कविता में कथ्य ही मुख्य है किन्तु कई बार कथ्य और छंद में द्वन्द्व हो सकता है। मुक्त छंद इन दोनों से रचना की रक्षा करता है। पंत ने भले ही लिखा हो 'खुल गये छंद के बंध प्रास के रजत पाश। अब युगवाणी उन्मुक्त और बहती अयास।' तब भी उन्होंने छंद में अपनी बात रखी।

प्रगति-प्रयोग के युग में भी छंद के स्तर पर अधिक मतभेद नहीं दिखायी देता। अज्ञेय ने छंद-प्रयोग के सन्दर्भ में लिखा भी है- "मुक्त छंद अनुशासन रहित पद-रचना नहीं है, वह छंद से मुक्त नहीं है बल्कि मुक्ति युक्त छंद है और वह मुक्ति एक साधारण अनुशासन नहीं है। वास्तविक छंद मुक्ति के लिए लय और उसके साथ संरचनात्मक गठन की अनिवार्य आवश्यकता है। इसीलिए मैं बल देकर कहना चाहता हूँ कि इस दिशा में नयी प्रवृत्तियों की उदासीनता खेदजनक है।" अज्ञेय ने मात्रा और वर्णों के स्थान पर बलाघात को लय की इकाई के रूप में स्वीकार करने की बात कही है। मुक्त छंद से तात्पर्य है छंदों के अनुशासन में रहकर अवांछित छंदों से मुक्त होना।

विद्वानों ने मुक्त छंद को दो भागों में बांटा है (1) लयाश्रित (2) लयवर्जित। लयवर्जित कविता को गद्य कविता कहा जाता है। लयाश्रित कविता में पुनरावर्त्ती नियमित लयों का विधान न होने पर भी प्रचलित लयों का आधार लेकर ही उन्मुक्तता का आभास होता है। जिस तरह शब्द और अर्थ अलग नहीं किये जा सकते उसी तरह छंद को भाषा से अलग नहीं किया जा सकता। कई विद्वानों का ऐसा विचार है कि यदि मुक्त छंद से हमारी अभिव्यक्ति का विस्तार होता है तो उसका प्रयोग उचित है केवल आधुनिकता के दिखावे के लिये इसका प्रयोग अनुचित है।

लयात्मक कविता में स्वनिर्मित बंधन के बावजूद जो स्वाधीनता कवि को प्राप्त है, वह छंदबद्ध कविता में कवि को नहीं मिल सकता। छान्दस कविता में बलाबल, वर्ण और मात्राओं के नियमन होते हैं जबकि लयात्मक कविता वर्ण, मात्रा, गति आदि के नियम से बंधी नहीं होती। इलियट ने भी कहा है– 'बेहतर कवि के लिये छन्द-मुक्ति जैसी या कला में आज़ादी जैसी कोई चीज नहीं होती।" जितना अनुशासन कविता को कविता बनाये रखने के लिये अनिवार्य है, उतना नये कवि को परम्परा से अथवा अपने संवेदनशील सजग व्यक्तित्व से अर्जित करना होगा। जगदीश गुप्त के अनुसार 'युग की संवेदनाओं के समर्थ वाहक होने के लिये युग से ऊपर उठना अत्यन्त आवश्यक है।' उन्होंने छंद को जीवनी शक्ति के प्रतीक रूप में स्वीकार किया है। इसीलिए वे छंद को लय के रूप में देखते हैं और शब्द-लय के साथ अर्थ-लय पर भी बल देते हैं। डॉ. जगदीश गुप्त ने इस बात को स्वीकार किया है कि जहां लय नहीं वहां छंद नहीं। छन्द का सम्बन्ध कविता की वाचिकता से है। नये तकनीकों की वजह से कविता और छंद का सम्बन्ध टूटता जा रहा है। प्रत्येक भाषा का अपना संगीत होता है और संगीत के अनुसार उसे अपना छंद निर्मित करना पड़ता है।

दलित-सत्ता

सुजाता निषाद
एम.ए. प्रथम वर्ष, हिन्दी

आज के युग में दलित विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है। भारतीय साहित्य में इसकी मुखर अभिव्यक्ति हो रही है। दलित साहित्य को लेकर कई लेखक संगठन बन चुके है और आज यह एक आंदोलन का रूप ले जा रहा है। स्वाभाविक रूप से साहित्य समाज और राजनीति पर उसका व्यापक असर पड़ रहा है।

दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया। जिसे कठोर और गन्दे काम ग्रहण करने के लिए बाध्य किया गया है जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया है। इसके अन्तर्गत वही जातियाँ आती है जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है। जिसमें दलितों ने स्वयं पीड़ा को वाणी दी है। दलित साहित्य का वैचारिक आधार है डॉ. भीमराव आंबेडकर का जीवन संघर्ष, ज्योतिबा फूले तथा महात्मा बुद्ध का दर्शन उसकी दार्शनिक पृष्ठ भूमि। ज्योतिबा फूले ने स्वयं क्रियाशील रहकर सामंती मूल्यों और सामाजिक गुलामी के विरोध का स्वर तेज किया था। ब्राह्मणवादी सोच और वर्चस्व के विरोध में उन्होंने आन्दोलन खड़ा किया था। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने अनेक स्थानों पर जोर देकर कहा कि दलितों का उत्थान राष्ट्र का उत्थान है। दलित चिंतन में राष्ट्र पूरे भारतीय परिवार एवं कौम के रूप में है जबकि ब्राह्माणों के चिंतन में राष्ट्र इस रूप में मौजूद नही है। उनके वहां एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना है, जिसमें सिर्फ द्विज है यहाँ न दलित है, न पिछड़ी जातियां है और न अल्पसंख्यक वर्ग है इसलिए हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू राष्ट्रवाद दोनों खण्डित चेतना के रूप में है। दलित विमर्श के केन्द्र में वे सारे सवाल है, जिनका सम्बन्ध भेदभाव से है, चाहे ये भेदभाव जाति के आधार पर हो, रंग के आधार पर हो नस्ल के आधार पर हों या फिर धर्म के आधार पर क्यों न हो ? जाति व्यवस्था द्वारा जो श्रम विभाजन किया गया है, वह पसन्द के आधार पर विभाजन नहीं है। डॉ. आम्बेडकर ने अपनी किताब 'जाति का उन्मूलन' में इस विषय पर विस्तार से चर्चा की है। जाति व्यवस्था हिन्दुओं को ऐसा पेशा अपनाने की इजाजत नही देती, जो पीढ़ीगत उनका पेशा नहीं है। डॉ. अम्बेडकर की मान्यता थी कि संपत्ति की बराबरी ही वास्तविक सुधार नहीं है। दलित चिन्तकों के अनुसार वास्तव मे जिसे हम नव-जागरण कह सकते हैं उनकी लहर बंगाल से नहीं अपितु महाराष्ट्र से चली। वह लहर थी दलित मुक्ति आन्दोलन की, जिसने न सिर्फ भारत का बल्कि पूरे विश्व का ध्यान आकृष्ट किया था। इस लहर को पैदा करने वाले थे। महात्मा ज्योतिबा फूले ने 1873 में सत्य शोधक समाज की स्थापना की थी और इसी वर्ष उनकी क्रान्तिकारी पुस्तक गुलामगीरी प्रकाशित हुई थी। इस समय तक रानाडे का प्रार्थना समाज अस्तित्त्व में आ चुका था। इसके दो साल बाद 1875 में दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। दलित आन्दोलन जिन महापुरुषों से शक्ति ग्रहण करता है उनमें ज्योतिबा फूले के अलावा केरल के नारायण गुरु (1854), तमिलनाडु के पेरियल रामास्वामी नाथकर (1879-1973), उत्तर भारत के स्वामी अछूतानन्द (1879-1933), बंगाल के चाँद गुरु (1850-1930), मध्य प्रदेश के गुरु धालीवाल (1756) आदि प्रमुख हैं। मुंबई के विधान परिषद ने प्रस्ताव पारित किया कि दलित वर्ग के लोगों के लिए सार्वजनिक सुविधाएँ और संस्थाओं के उपयोग का समान अधिकार होगा। पहाड़ में अछूतों का पानी के लिए सत्याग्रह इसी अधिकार को प्राप्त करने के लिए था। इसने तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्य में राजनीति के तीसरे ध्रुव दलित राजनीति को जन्म दिया और दलितों को सत्ता में भागीदारी दिलाई १९२७ में ब्रिटिश सरकार ने भारत की संवैधानिक समस्या के सुलझाने के लिए साइमन कमीशन नियुक्त किया।

कांग्रेस, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा आदि सब ने इस कमीशन का विरोध किया और जहां भी कमीशन गया साइमन गो बैक के नारे लगाए, किन्तु डॉ. आम्बेडकर के नेतृत्व में दलितों ने कमीशन का समर्थन किया और मांग की कि हिन्दूओं से अलग उन्हें भी एक विशिष्ट अल्पसंख्यक वर्ग माना जाए और उनके लिए मुसलमानों की तरह का प्रतिनिधित्व दिया जाये। इतना ही नहीं, भारत के भावी संविधान की रूपरेखा तय करने के लिए जब लंदन में गोलमेज कांफ्रेंस की घोषणा हुई तो इसमें दलितों के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. आम्बेडकर और आर. श्री निवास को आमंत्रित कया गया था। इस कांफ्रेंस में आम्बेडर ने दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग की थी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने इसे स्वीकार कर लिया था। कांग्रेस और हिन्दू महासभा ने इसका विरोध किया। गाँधी जी उस समय पूना के जेल में थे। उन्होंने जेल में ही दलितों के पृथक अधिकारों के खिलाफ आमरण अनशन शुरू कर दिया। अंततः तमाम दबावों के बाद समझौता हुआ जिसे डॉ. भीमराव आम्बेडकर और गाँधी जी ने अंतिम रूप दिया। यह समझौता 1932 में हुआ जिसे पूना-पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इसके बाद ही दलित राजनीति में गाँधी जी मॉडल का उदय हुआ। गाँधी जी ने दलितों को हरिजन नाम दिया।

शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएं

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय अपने चारों संकाय, दामोदर दास खन्ना कला संकाय, सरोज लाल जी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय, नन्द किशोर खन्ना वाणिज्य संकाय एवं डॉ. मधु टंडन बी.एड. संकाय के माध्यम से निरन्तर विविध विधाओं की उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया में संलग्न है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर वर्ग के अध्ययनरत लगभग तीन हजार छात्राओं के सर्वतोन्मुखी उन्नयन हेतु महाविद्यालय निरन्तर उच्च कोटि का शैक्षिक वातावरण और छात्र सहयोगी सेवाएं प्रदान करता रहा है।

छात्राओं के अकादमिक उन्नयन हेतु महाविद्यालय में ''श्यामनाथ कक्कड़'' महाविद्यालय केन्द्रीय **पुस्तकालय** है। पुस्तकालय में लगभग 27000 पुस्तकें, श्रेष्ठ उपन्यास, अमूल्य संदर्भ ग्रन्थ और इनसाइक्लोपीडिया उपलब्ध हैं। DELNET और INFLIBNET के अतिरिक्त 'National Digital Library' के माध्यम से यहाँ न केवल E-Books के अध्ययन की सुविधा है बल्कि जरुरतमंद छात्राओं के लिए कम से कम मूल्य में फोटोकॉपी कराने और बुक बैंक से निःशुल्क पुस्तकें प्राप्त करने की व्यवस्था भी है। देश विदेश की खबरों से रु–ब–रु होने के लिए 15 समाचार पत्र, 35 पत्र–पत्रिकाएं और 50 से भी अधिक जर्नल्स पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। केन्द्रीय पुस्तकालय छात्राध्यापिकाओं के अध्ययन की सुविधा के अतिरिक्त बी.एड. संकाय में भी 3,000 पुस्तकों से युक्त विभागीय पुस्तकालय है।

महाविद्यालय सदैव से ही **प्रतिभाशाली छात्राओं** की मेधा को सम्मानित करता रहा है। इसी क्रम में वार्षिकोत्सव 'उदिता' में मुख्य अतिथि हरीश चन्द्र रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक श्री पिनाकी मजूमदार द्वारा सत्र 2016–17 में प्रत्येक संकाय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया –

छात्रा का नाम	संकाय	पदक
सकीना फातिमा	कला	मनोहर दास खन्ना स्मृति स्वर्ण पदक
अरशी फातिमा	विज्ञान	डॉ. मधु टण्डन स्मृति स्वर्ण पदक
अपराजिता पाण्डेय	वाणिज्य	गायत्री राजनारायण धवन स्मृति स्वर्ण पदक
सौम्या जयसवाल	बी.एड.	अशोक मोहिले स्मृति स्वर्ण पदक
कुलसुम जाफरी	बायोटेक्नोलॉजी	न्यायमूर्ति रामभूषण मेहरोत्रा स्मृति स्वर्ण पदक
नीलू मिश्रा	सर्वतोमुखी (सभी संकायो के मध्य)	डी.डी. खन्ना प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक

कला संकाय में बी.ए. प्रथम वर्ष में पूनम कुशवाहा, बुशरा रहमान और आकांक्षा सिंह, द्वितीय वर्ष में शिवानी त्रिपाठी, दीप्ति राजपूत एवं रहनुमा अंसारी तथा तृतीय वर्ष में सकीना फातिमा, स्वाति मिश्रा एवं सृष्टि मिश्रा ने श्रेष्ठता सूची में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया जिन्हें स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विज्ञान संकाय की श्रेष्ठता सूची में बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की सानिया रिज़वान, महनाज रिज़वी एवं अलीशा नसरीन, द्वितीय वर्ष की शादमा जुल्फिकार, आकांक्षा यादव एवं सौम्या तिवारी तथा तृतीय वर्ष की अरशी फातिमा, रिमशा सुल्ताना एवं रागिनी सिंह ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वाणिज्य संकाय में बी.कॉम. प्रथम वर्ष में श्रेष्ठता सूची में वर्निता श्रीवास्तव ने प्रथम, प्रज्ञा तिवारी ने द्वितीय एवं दीपज़ा सिंह व स्तुति मालवीय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया जबकि बी.कॉम. द्वितीय वर्ष में खदीज़ा नाबिया, अमीशा अग्रहरि एवं शिजा लाइक तथा तृतीय वर्ष में अपराजिता पाण्डेय, प्रिया गुप्ता एवं अर्शिया बानो ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन छात्राओं को स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक से सम्मानित करने के साथ ही सत्र विशेष में बी.कॉम. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी की ओर से ₹ 11000 की धनराशि पुरस्कार स्वरुप प्रदान की गयी।

बी.एड संकाय में छात्राध्यापिका सौम्या जायसवाल, प्रतिमा सिंह एवं शीतल गिरि गोस्वामी ने श्रेष्ठता सूची में क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। बी.एड. द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राध्यापिका अंजलि सिंह को भी वार्षिकोत्सव में सम्मानित किया गया।

प्रतिभाशाली छात्राओं की मेधा को सम्मानित करने तथा जरुरतमंद छात्राओं की शैक्षिक यात्रा को वित्तीय बाधा से मुक्त करने के लिए महाविद्यालय में **छात्रवृत्ति**, पुरस्कार एवं पदक प्रदान करने की व्यवस्था है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा समाज कल्याण छात्रवृत्ति, भारत सरकार शिक्षा निदेशालय, श्रम मंत्रालय की छात्रवृत्ति, मुस्लिम ट्रस्ट, के.पी. ट्रस्ट द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति हेतु छात्राएं महाविद्यालय कार्यालय से सहयोग प्राप्त कर प्रति वर्ष आवेदन करती है। सम्बद्ध विभाग द्वारा संस्तुत एवं अनुमोदित छात्राओं की छात्रवृत्ति बैंक खाते में सीधे हस्तांतरित कर दी जाती है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में 2017–18 से प्रारम्भ न्यायमूर्ति रामभूषण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति में लगभग 40 छात्राओं को, श्रीमती जगरानी खन्ना एवं श्याम नारायण खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति, श्रीमती विमल टंडन एवं रुप किशोर टंडन स्मृति छात्रवृत्ति एवं श्रीमती शांति खन्ना व बाल मुकुन्द खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति क्रमशः 16–16 तथा 15 छात्राओं को प्रदान की गयी। 'O' Level कम्प्यूटर कोर्स, Tally कोर्स तथा CCC कोर्स हेतु तथा कला संकाय में चित्रकला एवं संगीत विषय की मेधावी और जरुरतमंद लगभग 20 छात्राओं को श्रवण टंडन स्मृति छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। सत्र 2016–17 से प्रति वर्ष आयोजित होने वाली यशः शेष वी.एस. भटनागर स्मृति पेन्टिंग एवं फोटोग्राफी प्रतियोगिता में विजित प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। सत्र 2017–18 में कला संकाय में 80% तथा वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय में 90% से अधिक अंक अर्जित करने वाली नव प्रवेशी छात्राओं को 90% उपस्थिति की शर्त पूरा करने पर पूर्ण शुल्क वापसी का प्रावधान किया गया। छात्रवृत्ति प्रदान करने में दानदाताओं के सहयोग से सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी द्वारा 57 स्थायी छात्रवृत्ति तथा 33 अन्य देय के रुप में 100 से अधिक छात्राओं को लगभग ₹ 2 लाख छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। इस वर्ष वाणिज्य संकाय की छात्रा साक्षी सिंह की नानी श्रीमती अवधेश सिंह द्वारा सभी संकायों में सर्वोत्तम प्रेसिडेन्ट अवार्ड प्राप्त करने वाली छात्रा हेतु श्री केदार नाथ सिंह सूर्यवंशी स्मृति छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। इस प्रकार लगभग 4 लाख 50 हजार रुपये की छात्रवृत्ति मेधावी और जरुरतमंद छात्राओं को प्रदान कर छात्राओं की सफलता का मार्ग प्रशस्त किया गया। सोसायटी और महाविद्यालय निरन्तर दानदाताओं के सहयोग की अपेक्षा करते हुए छात्रवृत्ति क्षितिज को विस्तार प्रदान करने के लिए संलग्न और संकल्पबद्ध है।

किसी भी शैक्षिक संस्थान के लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है अनुशासन। छात्राओं में अनुशासन व्यवस्था बनाये रखने हेतु प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी **प्रॉक्टोरियल बोर्ड** का गठन किया गया। मुख्य कुलानुशासक (Chief Proctor) और उप–कुलानुशासक के अलावा प्रत्येक संकाय से प्रॉक्टर नामित कर महाविद्यालय नियमों की जानकारी प्रदान करने के लिए स्नातक और परास्नातक स्तर पर प्रॉक्टोरियल मीट का आयोजन किया गया। प्रॉक्टोरियल बोर्ड द्वारा छात्र परिषद के गठन हेतु सत्र के आरम्भ में मतदान कराया गया। मतगणना के उपरान्त कायनात फात्मा (अध्यक्ष), निखा केसरवानी उपाध्यक्ष, तरन्नुम बानो (सचिव) तथा फरज़ान शमीम (संयुक्त सचिव) नामित हुई। इन पदाधिकारियों के सहयोग हेतु कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय से छात्र प्रतिनिधियों का चयन किया गया। पद अलंकरण समारोह में समस्त प्रतिनिधियों को सैश एवं बैज प्रदान करने के साथ ही सत्र भर अनुशासन व्यवस्था में सहयोग हेतु शपथ ग्रहण कराई गई। साथ ही बी.एड. संकाय में भी अलग से छात्रा परिषद का गठन किया गया जिसमें अध्यक्ष पद पर श्रेया गुप्ता, उपाध्यक्ष के रूप में संचिता यादव, सचिव के रूप में दीप्ती यादव एवं संयुक्त सचिव पद पर कुशला श्रीवास्तव चयनित हुई।

छात्र परिषद के तत्वावधान में ट्रैफिक नियमों की जानकारी प्रदान करने और सुरक्षित ड्राइविंग के प्रति छात्राओं को जागरुक करने के लिए ट्रैफिक नियमों एवं सुरक्षित ड्राइविंग का प्रत्यक्ष प्रदर्शन (Live Demonstration) किया गया। यह कार्यक्रम होंडा मोटर कम्पनी के सहयोग से आयोजित किया गया। छात्र परिषद में 'अनुशासन और सफलता' 'अधिकार और कर्त्तव्य' तथा 'स्वतंत्रता एवं उत्तरदायित्व' विषय पर आलेख प्रतियोगिता आयोजित की गयी। छात्राओं को अपने अधिकारों और संवैधानिक नियमों की जानकारी देने के उद्देश्य से नारी सुरक्षा सप्ताह पर विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। सभी संकायों की छात्राओं के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ 'तनावमुक्त परीक्षा' पर चर्चा कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में आयोजित सभी अकादमिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्र परिषद ने अपने प्रतिनिधियों की सहायता से अनुशासन व्यवस्था सुनिश्चित की।

छात्र कल्याण परिषद द्वारा छात्राओं की समस्याओं का समाधान करने के साथ ही कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। शिक्षक दिवस के अवसर पर बी.एड. की छात्राओं के निर्देशन में सभी संकायो की छात्राओं ने मिलकर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

नवप्रवेशी छात्राओं के स्वागत के लिए फ्रेशर्स कार्यक्रम 'नवोत्कर्ष' का आयोजन किया गया। सीनियर छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं लघु नाटिका 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं' का प्रस्तुतिकरण किया गया। इस कार्यक्रम में बी.ए. की नवप्रवेशी छात्रा प्रियंका शुक्ला 'मिस फ्रेशर' चयनित हुई। सत्र के अंत में जूनियर छात्राओं ने सीनियर्स को भावभीनी विदाई देते हुए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विदाई समारोह 'आशीष तरंग' में विज्ञान संकाय की छात्रा हिमांशी केसरवानी को 'मिस एस.एस.के.' का खिताब प्राप्त हुआ। छात्र कल्याण परिषद, छात्र परिषद एवं सामाजिक विज्ञान परिषद के सम्मिलित तत्वावधान में 'सीक्रेट सुपर स्टार' फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

छात्राओं के उन्नयन एवं उन्हें गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में नियमित कार्यक्रमों के अतिरिक्त "Spoken English and Personality Development" पर दो माह का कोर्स चलाया गया। 23 अक्टूबर से 23 दिसम्बर 2017 के मध्य चलने वाले इस कोर्स में 96 छात्राओं ने भाग लिया। प्रभावी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के फलस्वरुप निश्चय ही इस कोर्स के माध्यम से छात्राओं के व्यक्तित्व विकास एवं रोजगार प्राप्त करने की सम्भावना में वृद्धि हुई।

'स्वस्थ युवा स्वस्थ समाज' के उद्देश्य से महाविद्यालय में **स्वास्थ्य सेवा प्रकोष्ठ** क्रियाशील है। महिला चिकित्सक डॉ. वन्दना राज नियमित रुप से प्रकोष्ठ में छात्राओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण करती है। समय–समय पर छात्राओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं एवम् उससे बचाव के प्रति जागरुक किया जाता है। इस दिशा में अगस्त माह में मच्छरों से जनित रोगों के कारण एवम् उपायों से सम्बन्धित व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. मनीष राज अतिथि चिकित्सक के रुप में आमंत्रित थे। अक्टूबर माह में डॉ. मीरा भार्गव द्वारा 'स्त्री रोगों के कारण एवम् बचाव' विषय पर व्याख्यान दिया गया। नवम्बर माह में एड्स एवम् पल्स पोलियो से सम्बन्धित व्याख्यान तथा रैली का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में सत्र पर्यन्त **विस्तार कार्य समिति** द्वारा विविध विषयों पर व्याख्यान, रैली, प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। महाविद्यालय की छात्राओं ने विस्तार कार्य के अंतर्गत जी.एस.टी., पोलियो से बचाव के प्रति जागरुकता रैली निकाली। स्वच्छ गंगा, हरित पर्यावरण, पॉलिथीन मुक्त समाज का संदेश प्रसारित करने के उद्देश्य से संगम तट पर रैली निकाली गई।

विस्तार कार्य समिति ने देश भर में व्याप्त स्वच्छता अभियान में सहयोग हेतु न केवल महाविद्यालय की छात्राओं को स्वच्छता की शपथ दिलायी वरन् छात्राओं को वास्तव में स्वच्छता अभियान में सक्रिय सहयोग हेतु प्रेरित भी किया जिसके फलस्वरुप छात्राओं ने न केवल महाविद्यालय परिसर की स्वच्छता को बनाये रखने में अपना सहयोग दिया बल्कि राज अन्ध विद्यालय इसराजी देवी शिक्षण संस्थान, करैली में स्थित कुष्ठ आश्रम में जाकर भी स्वच्छता कार्यक्रम चलाया।

महाविद्यालय 'पॉलीथीन मुक्त' परिसर के प्रति कटिबद्ध है। IQAC समन्वयक डॉ. रीता चौहान ने छात्राओं को पॉलीथीन प्रयोग न करने का संकल्प दिलाया एवं पॉलीथीन से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण के बारे में जानकारी दी। ग्लोबल ग्रीन संस्था के सहयोग से पॉलीथीन के दुष्प्रभाव पर आधारित बहुचर्चित फिल्म 'पॉलीथीन का दंश' छात्राओं को दिखायी गयी। इसके साथ ही बी.एड. छात्राध्यापिकाओं द्वारा वॉल मैगजीन पर भी 'Say No to Polythene' का संदेश प्रदर्शित किया गया। विस्तार कार्य के अंतर्गत 'Clean City, My Dream City' विषय पर अन्तर्महाविद्यालयीय पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय और सभी संघटक महाविद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

एक स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज की कल्पना स्वच्छ पर्यावरण में ही की जा सकती है, इसी विचार से पर्यावरण संरक्षण में सहयोग देने हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

महाविद्यालय केवल अपने यहाँ नामांकित छात्राओं की शिक्षा तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह पूरे समाज को साक्षर एवं शिक्षित बनाने में यथासम्भव योगदान करने का प्रयत्न करता है। इसी विचारधारा से विस्तार कार्य के अन्तर्गत महाविद्यालय की छात्राओं ने गरीब बच्चों को साक्षर बनाने का संकल्प लिया एवं इस कार्यक्रम के अंतर्गत छात्राएं चयनित बच्चों को साक्षर बनाने का कार्य लगातार संचालित कर रही हैं। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा प्रौढ़ नागरिकों को साक्षर करने के

जानकारी एवं प्रशिक्षण भी दिया। समिति द्वारा वर्ष भर विविध विषयों पर विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए, जैसे सिंडिकेट बैंक की सहायक प्रबन्धक कुमारी जीनत द्वारा महिला अल्प बचत योजना एवं ई बैंकिग पर, डॉ. वन्दना राज द्वारा पल्स पोलियो पर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शिक्षा शास्त्र विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. आकांक्षा सिंह द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के महत्व पर, कैरियर लॉन्चर की कैरियर काउंसलर सुश्री सुयुक्ति सिंह द्वारा 'Choosing Career in life' पर, ग्लोबल ग्रीन संस्था के संजय पुरुषार्थी द्वारा 'गंगा का महत्व' एवं विवेक रंजन द्वारा 'वर्षा जल संचयन' पर तथा समाज कल्याण विभाग के चाइल्ड डेवलपमेन्ट प्रोजेक्ट ऑफिसर श्री राजेश गुप्ता द्वारा 'बाल शिक्षा' के महत्व पर व्याख्यान दिए गए। विस्तार कार्य के अंतर्गत ही इलाहाबाद बैंक कल्याणी देवी शाखा द्वारा एक दिवसीय शिविर लगाकर छात्राओं को खाता खुलवाने की जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद बैंक, कल्याणी देवी शाखा के मुख्य प्रबन्धक एस.आर. बरखेदिया तथा उनकी टीम द्वारा विविध बैंक खातों, मोबाइल एवं इंटरनेट बैंकिंग सेवाओं पर व्याख्यान भी दिया गया। ''सेवा ही परम धर्म है।'' इस विचारधारा को आत्मसात् करते हुए महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा विस्तार कार्य के अंतर्गत करेली स्थित कुष्ठ आश्रम एवं राज अन्ध विद्यालय में जाकर खाद्य सामग्री एवं दैनिक जीवन की अन्य उपयोगी वस्तुओं का वितरण किया गया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशों का पालन करते हुये अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया और इसी क्रम में महाविद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं व्याख्यान आयोजित किये गए।

महिला प्रकोष्ठ वर्ष भर विविध कार्यक्रमों के माध्यम से छात्राओं के सर्वांगीण विकास एवं अधिकारों के प्रति उन्हें सजग बनाने में प्रयत्नशील रहा। 7 सितम्बर 2017 को 'स्टार प्लस' चैनल ने महाविद्यालय में 57वें हिन्दुस्तान अनोखी क्लब कार्यक्रम का अयोजन किया जिसका विषय था – ''बैंड, बाजा एवं बधाईयां''। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे मेहंदी प्रतियोगिता, समूह नृत्य प्रतियोगिता, विविध राज्यों के दुल्हन वेशभूषा प्रस्तुति प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गई जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा पुरस्कार एवं प्रशंसा अर्जित की। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला प्रकोष्ठ द्वारा महाविद्यालय में "Rejurvenating Spirits of women to Fly" विषय पर एक विशेष परिचर्चा आयोजित की गयी। इलाहाबाद के पूर्व आयुक्त श्री बादल चटर्जी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो. अनीता गोपेश एवं शल्य चिकित्सक डॉ. अंजु गुप्ता इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे। इन सभी ने नारीत्व के वास्तविक अर्थ एवं नारी सुरक्षा के विविध आयामों के सम्बन्ध में चर्चा की। इस अवसर पर अतरसुइया थानाध्यक्ष श्री प्रभात कुमार भी उपस्थित थे जिन्होंने महाविद्यालय की छात्राओं एवं कर्मचारियों को पुलिस सुरक्षा एवं सहायता का आश्वासन दिया।

शिक्षक और अभिभावक किसी भी विद्यार्थी के जीवन का अभिन्न अंग होते है। अतः विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है कि शिक्षकों एवं अभिभावको के मध्य परस्पर वार्तालाप की व्यवस्था की जाए। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय के प्रत्येक संकाय में **शिक्षक अभिभावक संघ** द्वारा बैठक आयोजित की गई। इसमें अभिभावकों को महाविद्यालय में सम्पन्न होने वाली विविध प्रतियोगिताओं एवं क्रियाओं जैसे एन.एस.एस., कम्प्यूटर शिक्षा, एन.सी.सी., रेन्जरिंग, दामोदर श्री एवं विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों के बारे में सूचित किया गया। साथ ही उनसे छात्राओं की न्यूनतम 75% उपस्थिति सुनिश्चित कराने हेतु सहयोग का आग्रह किया गया। अभिभावकों की ओर से कई महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए जिन्हें भावी योजना में सम्मिलित करने का आश्वासन दिया गया।

महाविद्यालय के संस्थापक माननीय प्रो. दामोदर दास खन्ना जी के सम्मान में प्रतिवर्ष महाविद्यालय में **स्टाफ क्लब** द्वारा 'प्रेसिडेन्ट डे' का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय के शिक्षक, शिक्षिकाओं तथा शिक्षणेतर कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग कार्यक्रम इस अवसर का मुख्य आकर्षण है। इस कार्यक्रम की संकल्पना प्रो. डी.डी. खन्ना जी की ही देन है। इस वर्ष भी कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. अल्पना अग्रवाल के निर्देशन में 'प्रेसिडेंट डे' का अयोजन किया गया। शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा प्रस्तुत विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे एकल गीत, एकल नृत्य, समूह गीत, कविता पाठ ने छात्राओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। लघु नाटिका 'तलाक की तैयारी' तथा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं' विषय पर आधारित नाटक इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण

विस्तृत आयाम प्रदान करते हुए Eco Club द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक विशाल रैली निकाली गई। इस रैली में छात्राओं ने पर्यावरणीय मुद्दों से सम्बन्धित नारों के द्वारा लोगों में जागरुकता फैलाने का प्रयास किया। Eco Club के प्रतिनिधियों ने महाविद्यालय परिसर को पॉलीथिन मुक्त बनाने हेतु सम्पूर्ण परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया। साथ ही छात्राओं ने परिसर में कार्यक्रम वृक्षारोपण कार्य में भी भाग लिया। छात्राओं में विविध प्राकृतिक आपदाओं के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने हेतु 13 अक्टूबर 2017 को 'International Day for Natural Disaster Reduction' विषय पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति कराई गई। सभी संकायों की छात्राओं ने इस विषय पर पावर प्वाइंट के माध्यम से अपने प्रपत्र प्रस्तुत किए।

छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए महाविद्यालय सदैव से ही उन्हें उत्तम शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएं प्रदान करने हेतु तत्पर रहा है। छात्राओं की शैक्षिक विकास यात्रा को निरन्तर अग्रसर करने के संकल्प पर कायम रहते हुए महाविद्यालय में पिछले सत्र से आरम्भ हुई परास्नातक कक्षाओं के सफलतापूर्वक संचालन के साथ ही सत्र 2017–18 से दो नये विषय भूगोल एवं राजनीति विज्ञान में स्नातक कक्षाएं प्रारम्भ हुईं।

अध्ययन, शोध और विस्तार गतिविधियों में उच्च स्तर की उपलब्धिपरक रिपोर्ट का मूल्यांकन करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महाविद्यालय का चयन 'उत्कृष्टता की संभाव्यता वाले महाविद्यालय' (College with Potential for Excellence) के द्वितीय चरण के लिए किया है और ₹ 1,20,00,000 (₹ एक करोड़, बीस लाख रूपये) की अनुदान धनराशि स्वीकृत की है। यह योजना पांच वर्षों की अवधि के लिए है। हर्ष का विषय है कि इस अनुदान की पहली किश्त के रूप में ₹ 72,96,000 की धनराशि प्राप्त हो चुकी है। महाविद्यालय के लिए यह एक बडी उपलब्धि है। पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं, शैक्षिक उपकरणों, अध्ययन–अध्यापन के लिए सहायकसामग्री, शोध परियोजनाओं, प्रोद्योगिकी, शैक्षिक एवं विस्तार गतिविधियों के उन्नयन हेतु इस धनराशि को व्यय किया जाना है।

उल्लेखनीय है कि विगत वर्षों में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सी.पी.ई. योजना के तहत महाविद्यालय को चयनित करते हुए एक करोड़ रूपय की धनराशि का अनुदान मिला था। इस योजना की सफलतापूर्वक समाप्ति के बाद महाविद्यालय ने पुनः अगले चरण के लिए आवेदन प्रस्तुत किया था।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा महाविद्यालय को 3.46 सीजीपीए के साथ 'ए' ग्रेड प्राप्त है। सी.पी.ई. के दूसरे चरण के लिए महाविद्यालय का चयन गौरवपूर्ण उपलब्धि है। यूजीसी द्वारा स्वीकृत इस धनराशि से निश्चय ही महाविद्यालय में अध्ययन–अध्यापन, शोध, शैक्षिक और विस्तार गतिविधियों में गुणवत्ता लाते हुए प्रगति के नए अध्याय जुडेंगें।

शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएँ

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह – 2017

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी और सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में संकल्पित यह परम विशिष्ट सम्मान है। सारस्वत खत्री पाठशाला एवं उससे संचालित शिक्षण संस्थाओं (नवीन शिशु वाटिका, टैगोर पब्लिक स्कूल, शिवचरण दास कन्हैया लाल इंटरमीडिएट कॉलेज तथा सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय) के उन्नायक स्मृतिशेष प्रो. दामोदर दास खन्ना की स्मृति को समर्पित है यह सम्मान। इस राष्ट्रीय सम्मान के लिये उच्च शिक्षा स्तर पर 'अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता' के आयोजन का निर्णय सोसायटी द्वारा दो अक्टूबर 2011 से लिया गया है। वर्ष 2017 के 'दामोदर श्री' राष्ट्रीय सम्मान के मुख्य अतिथि थे – पद्मश्री प्रो. दिनेश सिंह (पूर्व कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय)। उन्होंने दामोदर श्री व्याख्यान माला के अन्तर्गत सातवां व्याख्यान दिया। अध्यक्ष थे – प्रो. आर. एल. हांगलू (कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) और विशिष्ट अतिथि थे श्री चेतन मेहरोत्रा (एक्ज़क्यूटिव ट्रस्टी–सार–ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई)।

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक निबन्ध प्रस्तुति सत्र की मुख्य अतिथि थीं– 1. प्रो. कृष्णा मिश्रा (निवर्तमान, रसायन विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)। उनके विशिष्ट योगदान के लिऐ इस अवसर पर उन्हें सम्मानित भी किया गया। विशिष्टता सम्मान–2017 के निबन्ध का विषय था – **'सुन्दर घर'**। इस प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त कश्मीर, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल, केरल, कर्नाटक, गुजरात, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, सिक्किम, तमिलनाडु, झारखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, नगालैंड और छत्तीसगढ़ के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों से 250 निबन्ध प्राप्त हुए। इन निबन्धों का मूल्यांकन तीन चरणों में किया गया।

इन निबन्धों के लिए गठित प्रथम एवं द्वितीय चरण की निर्णायक समिति के कुल 12 सदस्य थे –

1. माननीय न्यायमूर्ति श्री ए.पी. साही (इलाहाबाद उच्च न्यायालय), 2. प्रो. आर.के. नायडू (निवर्तमान, मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 3. प्रो. के.के. भूटानी (निदेशक, यू.पी.टेक, कम्प्यूटर) 4. प्रो. ए.ए. फातमी (उर्दू विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 5. प्रो. प्रतिमा गौड़ (जन्तु विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 6. प्रो. मृदुला त्रिपाठी (संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 7. प्रो. नमिता पाण्डे (मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 8. प्रो. अनिता गोपेश (जन्तु विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 9. प्रो. कोमिला थापा (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 10. प्रो. संजोय दत्ता रॉय (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 11. प्रो. यू.सी. श्रीवास्तव (जन्तु विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 12. प्रो. अलका अग्रवाल (निवर्तमान अर्थशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

इन निबन्धों को दो चरणों में निर्णायक मंडल ने जांचा–परखा और जिन दस प्रतिभागियों को अंतिम निर्णय सूची के लिए नामित किया उनके नाम हैं –

1. जावेरिया कौसर, B.A. IIIrd year, Maris stella College Vijayawada, Andhra Pradesh)
2. प्रखर त्रिपाठी, D.Phil. (Pol. Science) University of Allahabad
3. सृष्टि कोटांग्ले, Bachelor of Engineering (CSE) Rajiv Gandhi College of Enginering and Research, Nagpur, Maharashtra.
4. अनहद नरायन, B.A. LLB, NLU Bangaluru, Karnataka.
5. ईशान शर्मा, M.Sc. (ECO), BE (CS) BITS PILANI, Rajasthan
6. सचिन प्रकाश, PGDMC IIM Shillong, Meghalaya.
7. प्रीति श्री दाश, B.A. LLB (Hons), National University of Advance legal Studies Kochi, Kerala.
8. अपूर्वा लूनिया, MBBS, MG Medical College Jaipur, Rajasthan
9. मानसी बेनिवाल, B.A.LLB, National University of Advance Legal Studies, Kochi, Kerala.
10. अभिश्रुत सिंह, B.A. LLB 3rd year, National Institute of Study & Research in Law, Ranchi, Jharkhand.

इन सभी प्रतिभागियों को दो अक्टूबर 2017 को महाविद्यालय परिसर में निबन्ध प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। इन्हें निबन्ध प्रस्तुति के साथ–साथ निर्णायकों के प्रश्नों और जिज्ञासाओं का भी समाधान करना था। तीसरे और अन्तिम चरण के निर्णायक मंडल में दो चरणों के निर्णायकों के अतिरिक्त अन्य दो सम्मानित निर्णायकों को भी रखा गया। उनके नाम हैं – 1. प्रो. सुशीला सिंह (निवर्तमान, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) 2. प्रो. शकील समदानी (डिपार्टमेन्ट ऑफ लॉ, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय)

अंतिम चरण में पुरस्कार के लिए जिन पाँच प्रतिभागियों का चयन किया गया उनके नाम हैं –

1. जावेरिया कौसर – **'दामोदर श्री' सम्मान** एवं **₹ दो लाख का नगद पुरस्कार।**
2. अनहद नरायन – **प्रथम उपजेता – ₹ एक लाख का नगद पुरस्कार।**
3. प्रीति श्री दास – **द्वितीय उपजेता – ₹ 50 हजार का नगद पुरस्कार।**
4. मानसी बेनिवाल – **विशेष पुरस्कार (संयोजन समिति द्वारा निर्णीत) – ₹ 30 हजार का विशेष नगद पुरस्कार।**
5. अपूर्वा लूनिया – **सर्वश्रेष्ठ स्नातक वर्गीय प्रतिभागी – ₹ 30 हजार का नगद पुरस्कार।**

इस अवसर पर 'DAMODARSHREE THE JOURNEY' स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया।

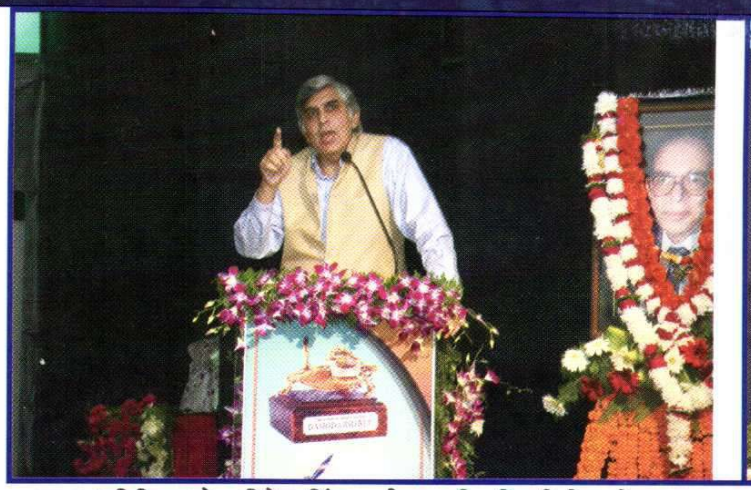

मुख्य अतिथि - प्रो० दिनेश सिंह, पूर्व कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

स्मारिका लोकापर्ण

विजयी प्रतिभागी अतिथिगण के साथ

सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती छात्राएं

अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

ASHISH TARANG

पुलिस थाना
चन्द्रलोक पुलिस स्टेशन

आख्या–2

अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियां

छात्राओं की अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभागिता और उपलब्धियों से न केवल महाविद्यालय गौरवान्वित होता है बल्कि छात्राओं को सर्वतोमुखी विकास का अवसर भी प्राप्त होता है। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर महाविद्यालय की छात्राओं ने सत्र पर्यन्त राष्ट्रीय, प्रादेशिक, जिला, अन्तर इकाई, विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर की विविध अकादमिक और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं पुरस्कार भी प्राप्त किये। छात्राओं की कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियों का विवरण इस प्रकार है–

यूनाइटेड नेशन्स इन्फॉरमेशन सेन्टर ऑफ इन्डिया एण्ड भूटान तथा श्री राम चन्द्र मिशन एवं हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में महाविद्यालय के कला, विज्ञान, वाणिज्य और बी.एड. संकाय से 100 छात्राओं ने भाग लिया। निबन्ध का विषय था – **'ज्ञान का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञानता नहीं बल्कि ज्ञान का भ्रम है'**। यह प्रतियोगिता 11 भाषाओं में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की गयी थी। प्रतियोगिता में महाविद्यालय छात्राओं की उपलब्धि सराहनीय रही :

• **ज्ञानवी केशरवानी** (बी.कॉम. प्रथम वर्ष)	राष्ट्रीय स्तर पर 9 वॉ स्थान
• **भानुजा पाठक** (बी.एस.सी. प्रथम वर्ष)	प्रदेश स्तर पर 9 वॉ स्थान
• **अक्षिता गुप्ता** (बी.एस.सी. प्रथम वर्ष)	प्रदेश स्तर पर 10 वॉ स्थान
• **खदीज़ा नाबिया** (बी.कॉम. तृतीय वर्ष)	प्रदेश स्तर पर 11 वॉ स्थान

इसके अतिरिक्त बी.एड संकाय की छात्राध्यापिका **अपर्णा यादव, समरा खान, अनुभूति सहाय, सचिता व राधिका सहाय, बी.एस–सी. की छात्रा स्तुति श्रीवास्तव, शिवानी पाठक व सुरभि सिंह, एम.एस–सी. की स्मिता पटेल तथा बी.कॉम. की आराधना श्रीवास्तव** को प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ।

क्षितिन्द्र नाथ मजूमदार विजुअल एण्ड क्रिएटिव आर्ट फाउन्डेशन द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में महाविद्यालय के चित्रकला विभाग की 10 छात्राओं ने भाग लिया तथा प्रज्ञा पाण्डेय, फिरदौस अशरफ, सोनाली वर्मा एवं नीतू मौर्या को क्रमशः प्रथम, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम पुरस्कार प्राप्त हुए।

श्री रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम द्वारा आयोजित भजन प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की **निशा भट्ट को प्रथम पुरस्कार** प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम में ही आयोजित भाषण प्रतियोगिता में भी 5 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित **युवा कला संगम** 2017 में चित्रकला प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 22 छात्राओं ने प्रतिभागिता की एवं एम.ए. की **सुनैना रस्तोगी** को प्रथम पुरस्कार के रूप में ₹ 11,000 की धनराशि प्राप्त हुई।

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (NCZCC) में **'नव आकार'** अंतर्राष्ट्रीय समूह के अधीन आयोजित राष्ट्रीय कला कैम्प एवं प्रदर्शनी में 5 छात्राओं ने भाग लिया। एम.ए. की मुस्कान रस्तोगी को **'बेस्ट वर्क'** का पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा **मुस्कान रस्तोगी व फिरदौस अशरफ की बनायी पेन्टिंग** (कलाकृति) प्रदर्शनी में क्रमशः **₹** 4500 व **₹ 3000 में विक्रय हुयी।**

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित संगोष्ठी में महाविद्यालय की 2 छात्राओं ने भाग लिया एवं बी.ए. द्वितीय वर्ष की पल्लवी सिंह को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

युवा मोर्चा महानगर प्रयाग में आयोजित भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय की 10 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में आयोजित संस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता में 4 छात्राओं ने भाग लिया जिसमें बी.ए. तृतीय वर्ष की **शिवानी त्रिपाठी** को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में ही **'हिन्दी पखवाड़े'** के अधीन आयोजित कविता, निबन्ध एवं कहानी लेखन प्रतियोगिता में 26 छात्राओं ने भाग लिया। **शाइना सिद्दीकी** को **कहानी लेखन** में **तृतीय पुरस्कार** एवं कविता लेखन में **नेहा मेहरोत्रा व**

शिल्पी यादव को क्रमशः **द्वितीय व तृतीय पुरस्कार** प्राप्त हुआ।

आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज द्वारा आयोजित कवि गोष्ठी में 2 छात्राओं ने, निबन्ध प्रतियोगिता में 26 छात्राओं ने तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता में भी 2 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में **हाफिजा खनम** को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

यूनाइटेड इस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट द्वारा आयोजित **'ज्ञान मंथन'** कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित एड मेनिया, एक्सटेमपोर, फेस पेन्टिंग, कोलाज आदि विविध प्रतियोगिताओं में 28 छात्राओं ने भाग लिया। चित्रकला विभाग की **आरती मिश्रा** व **नीतू मौर्या** को कोलाज प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार तथा वाणिज्य संकाय की वन्दिता अग्रवाल, सिमरन गुप्ता, साक्षी सिंह, अर्चिशा चौधरी व वसुन्धरा सिंह की टीम को एड मेनिया में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इलाहाबाद संग्रहालय में आयोजित पाँच दिवसीय राष्ट्रीय कला कार्यशाला में चित्रकला विभाग की 15 छात्राओं ने प्रतिभागिता की और पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज द्वारा आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में महाविद्यालय के चित्रकला विभाग की आरती मिश्रा व नीतू मौर्या को प्रथम पुरस्कार, मुस्कान रस्तोगी व सुनैना को द्वितीय पुरस्कार तथा मोहिना केसरवानी व दीपिका को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त छात्राओं ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में भी भाग लिया।

राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय द्वारा आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में 20 छात्राओं ने भाग लिया। **रानी सोनी** को **काव्य पाठ** में **तृतीय पुरस्कार**, **शिवांगी श्रीवास्तव** को वाद–विवाद प्रतियोगिता में **तृतीय पुरस्कार** एवं **नेहा** को लोक नृत्य में **प्रथम पुरस्कार** प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त **निकिता दासगुप्ता, रितिका श्रीवास्तव, अर्पिता वर्मा, काजोल साहू, शिवानी भट्ट, निशा भट्ट, काजल पटेल एवं अनुपमा** की टीम ने **लोकगीत प्रतियोगिता** में **तृतीय पुरस्कार** जीता।

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज में 29 जनवरी 2018 को आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में 11 छात्राओं ने भाग लिया। निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय तीनों पुरस्कार क्रमशः महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की छात्राओं श्वेता पाण्डेय, महविश खान एवं कोमल केशरी को प्राप्त हुए। स्वरचित कविता प्रतियोगिता में छात्राध्यापिका काशिफा नियाज़ एवं निखत खान को द्वितीय पुरस्कार मिला तथा तबस्सुम बानो एवं जोया रियाज खान को क्रमशः स्लोगन एवं एक्सटेमपोर प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुए।

त्रिवेणिका संस्कृत परिषद द्वारा आयोजित संस्कृत निबन्ध प्रतियोगिता एवं संस्कृत पठन प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष की शिवानी त्रिपाठी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त त्रिवेणिका संस्कृत परिषद द्वारा आयोजित संस्कृत समूह गीत प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान महाविद्यालय की छात्राओं को ही प्राप्त हुआ।

इलाहाबाद संग्रहालय द्वारा 'हमारी विरासत' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता हुई जिसमें महाविद्यालय के चित्रकला विभाग की 15 छात्राओं ने प्रतिभागिता की और पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्राप्त किया। इलाहाबाद संग्रहालय में ही आयोजित 'विरासत से जुगलबन्दी' नामक पाँच दिवसीय राष्ट्रीय कला कार्यशाला एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में

महाविद्यालय के सभी संकायों में विविध विभागों द्वारा सत्र पर्यन्त विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सरसय्यैद के जन्म शताब्दी के 200 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में महाविद्यालय के **उर्दू विभाग** द्वारा अन्तर्महाविद्यालयीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

19 सितम्बर 2017 को **संस्कृत विभाग** एवं **दर्शनशास्त्र विभाग** के संयुक्त तत्वावधान में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. ऋषिकान्त पाण्डेय का 'गीता का नैतिक दर्शन' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

संस्कृत विभाग द्वारा 'वर्तमान संदर्भ में संस्कृत की उपादेयता' विषय पर अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय और सभी संघटक महाविद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

नाम	कक्षा	संस्थान	स्थान
शिवानी त्रिपाठी	बी.ए. III	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	प्रथम
चन्दन पाण्डेय	बी.ए. II	ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज	द्वितीय
ऋचा पाण्डेय	बी.ए. I	इलाहाबाद डिग्री कॉलेज	द्वितीय
कोमल मिश्रा	बी.ए. I	श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कालेज	तृतीय
गार्गी मिश्रा	बी.ए. I	श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कालेज	तृतीय
कीर्ति तिवारी	बी.ए. III	राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय	तृतीय
कोमल	बी.ए. I	जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज	तृतीय
भवदत्त द्विवेदी	बी.ए. I	इलाहाबाद डिग्री कॉलेज	तृतीय
अल्का सिंह	बी.ए. I	यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज	तृतीय
प्रियंका सिंह	बी.ए. III	आर्य कन्या डिग्री कालेज	तृतीय
वैशाली मिश्रा	बी.ए. III	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय	सान्त्वना
गोल्डी भारती	बी.ए. III	ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज	सान्त्वना
अंजलि राय	बी.ए. I	यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज	सान्त्वना
सात्विक यादव	बी.ए. I	यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज	सान्त्वना
सौम्या यादव	एम.ए. I	चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय	सान्त्वना

अंग्रेजी विभाग में 21 सितम्बर 2017 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर लक्ष्मी राज शर्मा ने 'Nature of Literature' पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

अन्तरर्महाविद्यालयीय निबंध, काव्य पाठ, एक्सटेम्पोर स्पीच, कोलॉज तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता में विभाग की

छात्राओं ने प्रतिभागिता कर पुरस्कार प्राप्त किया। विभाग की ओर से छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण हेतु 'मनगढ़ ले जाया गया।

महाविद्यालय के **हिन्दी विभाग** में 'प्रेमचन्द और उनका युग' विषय पर प्रो. मुस्ताक अली, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय का एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रो. मुस्ताक ने प्रेमचन्द के साहित्य में आदर्श और यथार्थ, समकालीन प्रासंगिकता, किसानों की समस्या, महिलाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण आदि विषय पर चर्चा की एवं छात्राओं के जिज्ञासा भरे प्रश्नों का उत्तर भी दिया।

हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास में पालि भाषा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पालि भाषा में मुख्यतः बौद्ध धर्म के संस्थापक भगवान बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है। पाली साहित्य तथा भाषा की इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा एम.ए. की छात्राओं को सारनाथ के शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाया गया। छात्राओं ने सारनाथ में अशोक का चतुर्थ सिंह स्तम्भ, भगवान बुद्ध का मंदिर, धमेख स्तूप, चौखण्डी स्तूप, राजकीय संग्रहालय, जैन मंदिर इत्यादि दर्शनीय स्थलों का अवलोकन किया। अन्य अवसर पर विभाग में प्रो. मुश्ताक अली का 'प्रेमचन्द्र और उनका युग' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

महाविद्यालय के **समाजशास्त्र विभाग** में 3 नवम्बर 2017 को 'महिलाओं की समस्याएँ समसामयिक सन्दर्भ में' विषय पर सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद के समाजशास्त्र विभाग की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. हेमलता श्रीवास्तव के द्वारा व्याख्यान दिया गया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि महिला सशक्तीकरण की लड़ाई पुरुषों का विरोध करके नहीं बल्कि पुरुषो के सहयोग से ही लड़ी जा सकती है। विभाग में एम.ए. की छात्राओं द्वारा प्रोजेक्ट वर्क और प्रपत्र लेखन कार्य किया गया।

'भारत छोड़ो आंदोलन' के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में **मध्यकालीन इतिहास विभाग** में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'भारत छोड़ो' विषय पर सी.ई.आर.टी. के पूर्व सदस्य, परामर्शदाता तथा इस आंदोलन के प्रत्यक्षदर्शी 90 वर्षीय श्री प्रेमशंकर खरे ने विशेष व्याख्यान दिया। 'भारत छोड़ो आंदोलन' विषय पर एक अंतर्महाविद्यालय प्रश्नमंच प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय सहित सभी संघटक महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का परिणाम निम्न प्रकार रहा –

टीम	स्थान
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	प्रथम
इलाहाबाद विश्वविद्यालय	द्वितीय
ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज	तृतीय

इस प्रतियोगिता के अतिथि एवं निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष सी.एम.पी. पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद के मध्यकालीन इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सत्येन्द्र नाथ थे। 'भारत छोड़ो आंदोलन' विषय पर ही एक भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के सभी संकायों से छात्राओं ने सहभागिता की। मध्यकालीन इतिहास विभाग में ही "Allahabad School of History" विषय पर प्रोफेसर हेरम्ब चतुर्वेदी (विभागाध्यक्ष, मध्यकालीन/आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) का एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

प्राचीन इतिहास विभाग में "इतिहास लेखन में प्रोफेसर जी सी पाण्डे का योगदान" विषय पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रोफेसर प्रकाश सिन्हा ने विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने इतिहास की वैज्ञानिकता, तथ्य, मूल्यपरकता, और मूल्यात्मक ऐतिहासिक ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में प्रोफेसर पाण्डे के विचारों को स्पष्ट किया। प्रोफेसर प्रकाश सिन्हा का ही "नगरीकरण एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है" विषय पर भी एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रोफेसर सिन्हा ने अपने व्याख्यान में नगरीकरण के कारणों की चर्चा करते हुए नगरीकरण के विभिन्न चरणों को power point presentation के माध्यम से समझाया। प्राचीन इतिहास विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सेवानिवृत आचार्य प्रोफेसर ओमप्रकाश श्रीवास्तव का एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया जिसका विषय था 'प्रोफसर बृजनाथ सिंह यादव की इतिहास दृष्टि एवं इतिहास लेखन में उनका योगदान'। सी.एम.पी. पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद के डॉ शैलेश यादव ने इतिहास लेखन के प्रति प्राचीन भारतीयों के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया और प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन की समस्याओं पर प्रकाश

डाला।

दर्शनशास्त्र विभाग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो. ऋषिकान्त पाण्डेय का गीता दर्शन और लोक संग्रह विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। उन्होंने व्याख्यान के उपरान्त छात्राओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों का समाधान किया। श्रीमद्भगवद्गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ बनाने के प्रस्ताव के संदर्भ में पक्ष व विपक्ष में छात्राओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

दर्शनशास्त्र विभाग में ही धार्मिक सहिष्णुता, नैतिकता सफल जीवन का आधारस्तम्भ, तर्क और आस्था, गांधी दर्शन और युवा सोच, गीता दर्शन और सामाजिक चेतना विषय पर अन्तरइकाई प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में आर्य कन्या डिग्री कालेज, राजर्षि टंडन महिला महाविद्यालय, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज, काली प्रसाद प्रशिक्षण महाविद्यालय तथा एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय की छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

नाम	कक्षा	संस्था	स्थान
सचिन कुमार मिश्रा	बी.एड. प्रथम सेमेस्टर	के.पी. ट्रेनिंग कॉलेज	प्रथम
सौम्या यादव	एम.ए. पूर्वार्द्ध राजनीति विज्ञान	चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय	द्वितीय
सक्षम त्रिवेदी	बी.ए. पाँचवां सेमेस्टर	यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज	तृतीय
दिव्या पाण्डेय	बी.ए. द्वितीय वर्ष	एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज	सात्वना
प्रियांशी मिश्रा	बी.एड. प्रथम सेमेस्टर	के.पी. ट्रेनिंग कॉलेज	सात्वना
प्रियम्बदा त्रिपाठी	बी.ए. द्वितीय वर्ष	आर्य कन्या डिग्री कॉलेज	सात्वना
कु. कीर्ति तिवारी	बी.ए. द्वितीय वर्ष	राजर्षि टंडन महिला महाविद्यालय	सात्वना

शिक्षाशास्त्र विभाग के 'P.G. Association' द्वारा 15 अगस्त को 'स्वच्छ भारत' विषय पर प्रभात फेरी निकाली गयी। छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लेकर स्वच्छता का संदेश फैलाया । 'नदियों को मनुष्य जैसा दर्जा देने से प्रदूषण –मुक्ति मे सहायता मिलेगी' इस विषय पर विश्वविद्यालय स्तर पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 'Qualitative enhancement of teaching learning' विषय पर समूह परिचर्चा भी की गयी। साथ ही विभाग द्वारा छात्राओं को मनगढ़ (प्रतापगढ़) शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जाया गया जिसका विषय था 'Learning through observation' । इसके अतिरिक्त स्नातक एवं परास्नातक वर्ग की छात्राओं हेतु परीक्षा के तनाव को कम करने संबंधी प्रधानमंत्री से बातचीत कार्यक्रम का सजीव प्रसारण दिखाया गया।

मानवीय संवेदनाओं एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है चित्र। महाविद्यालय के **चित्रकला विभाग** द्वारा 'अभिव्यक्ति 2017' के अंतर्गत कला वीथिका में चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय न्यायमूर्ति श्री वी.के. शुक्ला द्वारा किया गया।

चित्रकला विभाग की छात्राओं द्वारा बनाए गए चित्र केवल महाविद्यालय परिसर तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि उन्हें अन्य संस्थाओं में भी काफी सराहना प्राप्त हुई। राज्य ललित कला अकादमी द्वारा 'निराला आर्ट गैलरी' इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी में विभाग की एम.ए. की छात्रा नीतू मौर्या की कलाकृति का चयन किया गया। 'चिकितुषी' कानपुर ग्रुप की ओर से आयोजित पाँच प्रदेशों की प्रदर्शनी में महाविद्यालय की एम.ए. की 13 छात्राओं के चित्रों का चयन हुआ। नवम्बर माह में संचारी ग्रुप द्वारा इलाहाबाद सांस्कृतिक पर्व 2017 'आवाज' के अंतर्गत चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था जिसमें चित्रकला विभाग की बी.ए. एवं एम.ए. की 30 छात्राओं ने 55 चित्रों की प्रदर्शनी लगाई। चित्रकला विभाग में बी.ए. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की छात्राओं हेतु क्रिऐटिव कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत कार्ड मेकिंग, बुक मार्क, डायरी कवर, लिफाफा इत्यादि सजावटी वस्तुओं का निर्माण सिखाया गया। इसके अतिरिक्त पिडिलाइट कलर कम्पनी की तरफ से एक तीन दिवसीय कलात्मक वस्तुओं के निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रशिक्षकों द्वारा विभिन्न कलात्मक वस्तुओं के निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया।

संगीत स्वर साधना एवं प्राणायाम का साधन है जिसे हृदय और भावनाओं में उतार लेने से मनुष्य का आत्मिक काया कल्प

हो सकता है। इसी उद्देश्य से **संगीत विभाग** में सत्र भर विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, वार्षिक उत्सव, राष्ट्रीय संगोष्ठी, दामोदरश्री, 'प्रेसीडेन्ट डे' इत्यादि अवसरों पर मनमोहक गीत, वन्दना, कव्वाली, भजन इत्यादि प्रस्तुत किए गए। संगीत विभाग द्वारा छात्राओं को राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों की प्रस्तुतियां दिखाने हेतु प्रसार भारती द्वारा अयोजित आकाशवाणी सम्मेलन, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा संचालित 'चलो मन गंगा यमुना तीर' एवं सांस्कृतिक मेले में ले जाया गया। जनवरी माह में वसंतोत्सव के उपलक्ष्य में संगीत विभाग में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजा मान सिंह तोमर विश्वविद्यालय, ग्वालियर की पूर्व कुलपति प्रो. स्वतंत्र बाला शर्मा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के अध्यक्ष प्रो. जयंत खोट, डॉ. रेनू जोहरी, श्री विजय चंद्रा विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित थे। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी संगीत विभाग में 'सप्त स्वर' अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें समूह गान के अर्न्तगत 'देशगान' प्रतियोगिता व 'एकल गान' के अन्तर्गत भजन प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में अन्य कई महाविद्यालय व इलाहाबाद विश्वविद्यालय से छात्राओं ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा :

क्र.सं.	प्रतियोगिता	प्रतिभागी	संस्था	स्थान
1.	सामूहिक गान ('देशगान')		एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद	प्रथम
			सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद	द्वितीय
			ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद	तृतीय
2.	एकल गान (भजन)	कु. काजल सिंह पटेल	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालाय, इलाहाबाद	प्रथम
		कु. वैशाली चौधरी	सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद	द्वितीय
		कु. प्रियंका त्रिपाठी	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	तृतीय

प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में आकाशवाणी के 'A' ग्रेड कलाकार, लोक संगीत गायक श्री उदय चन्द्र परदेशी एवं स्पीक मैके की संयोजक डॉ. मधु शुक्ल उपस्थित थीं।

सरोज लाल जी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय में **रसायन विज्ञान** विभाग में "Role of Nutrition in Human Health" विषय पर एक सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। 1 सितम्बर से 7 सितम्बर तक पूरे भारतवर्ष में मनाये जाने वाले 'National Nutritional week' के अवसर पर ही इस कार्यशाला का आयोजन किया गया था ताकि लोगों को स्वास्थ्य में पोषण की भूमिका के सम्बन्ध में जागरूक किया जा सके। कार्यशाला का उद्घाटन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. शेखर श्रीवास्तव ने किया। इस कार्यशाला में पोस्टर प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक, प्रश्नमंच प्रतियोगिता, पावर प्वाइंट प्रस्तुति इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किए गए। बी.एस–सी. की छात्राओं को रासायनिक परीक्षण द्वारा मिलावटी खाद्य सामग्री की पहचान करने का प्रशिक्षण दिया गया। सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज के रसायन विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अर्चना पाण्डेय ने पोषण के विविध पहलुओं पर विशेष व्याख्यान दिया। कार्यशाला के समापन समारोह में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. जगदम्बा सिंह ने विशेष व्याख्यान दिया एवं व्याख्यान के पश्चात् छात्राओं के साथ परिचर्चा भी की। रसायन विज्ञान विभाग में ही 'CHEM FEST 2018' का भी आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने विभिन्न मॉल्यूक्यूल्स के मॉडल बनाए एवं उनकी प्रदर्शनी लगायी। छात्राओं ने पावर प्वाइंट के माध्यम से अपने प्रोजेक्ट वर्क की प्रस्तुति की।

जन्तु विज्ञान विभाग में "Save Ozone, Save Earth" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का परिणाम निम्न रहा :

नाम कक्षा	स्थान	
ऐरम खान	बी.एस–सी. I	प्रथम
रितु कुशवाहा	बी.एस–सी. II	द्वितीय
फरज़ान शमीम	बी.एस–सी. I	तृतीय

जन्तु विज्ञान विभाग में ही "Concept of cell Biology" पर एम.एस–सी. की छात्राओं के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके साथ ही साथ एम.एस–सी. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं के लिए एक संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसका विषय था – 'Basics in Fish & Fisheries'.

स्वस्थ एवं हरित पर्यावरण की संकल्पना को प्रसारित करने के उद्देश्य से **वनस्पति विज्ञान विभाग** की एम.एस–सी. की छात्राओं ने महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया। विभाग द्वारा स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता फैलाने हेतु 'How to clean our country' विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में एम. एस–सी. तृतीय सेमेस्टर की सना हाशमी, प्रिया मिश्रा एवं खदिज़ा फातिमा को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। वनस्पति विज्ञान विभाग में 'Vital Activities in Plants' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में छात्राओं के ज्ञान को बढ़ाने हेतु पौधों की महत्त्वपूर्ण क्रियाओं जैसे प्रकाश संश्लेषण, परासरण, प्रस्वेदन इत्यादि के बारे में जानकारी दी गयी। 'New Horizons in Molecular Genetics' विषय पर छात्राओं के लिए एक संगोष्ठी का अयोजन किया गया जिसमें बी.एस–सी. एवं एम.एस–सी. की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया एवं पावर प्वाइंट के माध्यम से अपने प्रपत्र प्रस्तुत किए। वनस्पति विज्ञान विभाग में ही स्नातक वर्ग की छात्राओं के लिए प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें 'साहनी' एवं 'माहेश्वरी' टीम को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। विभाग द्वारा एम.एस–सी. की छात्राओं को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के 'Roxburgh Botanical Garden & Agharkar Botanical Museum' में जीवित एवं जीवाश्म वनस्पतियों के अध्ययन हेतु ले जाया गया। जहाँ प्रो. डी.के. चौहान एवं डॉ. यशवंत कुमार ने छात्राओं को इस सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की। विभाग में एक प्रोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसमें एम.एस–सी. द्वितीय सेमेस्टर की छात्राओं ने पोस्टर द्वारा वनस्पतियों के आर्थिक आयाम के बारे में जानकारी दी।

गणित विभाग की स्नातक वर्ग की 30 छात्राओं ने 'National Board of Higher Mathematics' द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित 'Madhava Mathematics Competition' में प्रतिभाग किया। पूर्व सत्र में 64 छात्राओं को इस राष्ट्रीय स्तर की गणित प्रतियोगिता में प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ। गणित विभाग द्वारा प्रश्नमंच (लिखित) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें बी.एस–सी. की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् रहा :

नाम	कक्षा	स्थान
समरीन बेग	बी.एस–सी. III	प्रथम
अलीना सोबिया	बी.एस–सी. II	द्वितीय
अंकिता तिवारी	बी.एस–सी. II	द्वितीय
साक्षी अग्रवाल	बी.एस–सी. II	तृतीय

बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की छात्राओं ने 'Green City Clean City' विषय पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लिया।

भौतिक विज्ञान विभाग में 9 सितम्बर 2017 को 'Laser Spectroscopic Tools for a Material Characterization' विषय पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. ए.के. राय का एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। भौतिक विज्ञान विभाग में ही एक कार्यशाला का अयोजन किया गया जिसमें बी.एस–सी. की सभी छात्राओं ने भाग लिया एवं कई रोचक मॉडल प्रस्तुत किए। Indian Association Physics Teachers (IAPT) देहरादून द्वारा आयोजित 'National Graduate Physics Examination (N.G.P.E.) में बी.एस–सी. की पाँच छात्राएं सम्मिलित हुई।

नन्द किशोर खन्ना वाणिज्य संकाय में प्रो. जी.सी. अग्रवाल मेमोरियल अन्तर महाविद्यालयीय प्रपत्र लेखन एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता पिछले आठ वर्षों से निरन्तर आयोजित की जा रही है। प्रपत्र लेखन का विषय था – 'Changing Dimensions of India's Foreign Trade Policy in Recent Years.' इस प्रतियोगिता में सभी संघटक महाविद्यालयों से प्रपत्र प्राप्त हुए। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

नाम	कक्षा	संस्थान	स्थान
मनीषा सिंह	बी.कॉम. III	जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज	प्रथम
शिजा लईक	बी.कॉम. III	एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	द्वितीय
सिमरन गुप्ता	बी.कॉम. III	एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	तृतीय
जैनब बुतुल	बी.कॉम. III	एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	सांत्वना

प्रश्न मंच प्रतियोगिता में आठ महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का परिणाम निम्न प्रकार रहाः

टीम	स्थान
एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	प्रथम
इलाहाबाद डिग्री कॉलेज ब्वायज़ विंग	द्वितीय
जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज	तृतीय

डॉ. मधु टण्डन बी.एड. संकाय में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें उपलब्धि परीक्षण के निर्माण तथा परीक्षण के विषय में बताया गया। द्वितीय सेमेस्टर की छात्राध्यापिकाओं के लिए त्रिदिवसीय शिक्षण सहायक सामग्री कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राध्यापिकाओं ने विभिन्न स्कूल शिक्षण विषयों से सम्बन्धित चित्र एवं मॉडल बनाए तथा उनकी प्रदर्शनी लगायी। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के तहत गंगा स्वच्छता पखवारा के अंतर्गत 'कबाड़ से जुगाड़' शीर्षक पर संगम तट पर कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें बी.एड. संकाय की 45 छात्राध्यापिकाओं ने प्रतिभागिता की। उक्त प्रदर्शनी के मुख्य अतिथि माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह (राज्य मंत्री) जल संसाधन नदी विकास व गंगा संरक्षण मंत्रालय तथा अपर नगर आयुक्त श्रीमती ऋतु सुहास थे। अतिथियों ने बी.एड. की छात्राध्यापिकाओं के कार्य की सराहना की। इलाहाबाद संग्रहालय में अभिनव ग्रुप आयोजित सृजन 06 कला प्रदर्शनी एवं विश्व महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कला प्रदर्शनी में भी छात्राध्यापिकाओं ने प्रतिभाग किया। इसके अतिरिक्त माघ मेला में आयोजित फोटोग्रैफी प्रतियोगिता, इलाहाबाद संग्रहालय में आयोजित चित्रकला प्रदर्शनी व कार्यशाला तथा श्री राम चन्द्र मिशन एवं यूनाइटेड नेशन्स इनफॉरमेशन सेन्टर फॉर इण्डिया एण्ड भूटान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता में भी छात्राध्यापिकाओं ने प्रतिभाग किया एवं प्रमाणपत्र प्राप्त किया। तृतीय सेमेस्टर की छात्राध्यापिकाओं द्वारा विभिन्न विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास किया गया। महाविद्यालय में अध्ययनरत अनेक छात्राध्यापिकाओं का विभिन्न विद्यालयों में शिक्षक पद हेतु चयन हुआ।

महाविद्यालय में सांस्कृतिक समिति के माध्यम से छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु सांस्कृतिक प्रतिभाओं को सत्र भर समय–समय पर मंच प्रदान किया जाता है। स्वतंत्रता दिवस, शिक्षक दिवस, नवोत्कर्ष, रामकृष्ण मिशन, दामोदरश्री, राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह, गणतंत्र दिवस समारोह कार्यक्रम में छात्राओं ने गणेश वंदना एवं सरस्वती वंदना की। महाविद्यालय वार्षिकोत्सव 'उदिता' में वंदन नृत्य, कव्वाली तथा श्री हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित नाटक 'इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर' का सफल मंचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. पिनाकी मजूमदार निदेशक हरीशचंद्र अनुसंधान संस्थान इलाहाबाद द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई। 'स्वतंत्रता दिवस' के अवसर पर वीर रस से ओत प्रोत' देशगान' की प्रस्तुति बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा कु0 काजल सिंह पटेल द्वारा की गई। गणतंत्र दिवस के अवसर पर छात्राओं द्वारा राष्ट्र निर्माण की भावना से ओत–प्रोत व प्रेरणा गीत की सामूहिक सुमधुर प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि 15 यू. पी. बटालियन एन.सी.सी इलाहाबाद के समादेश अधिकारी कर्नल प्रफुल्ल सिंह ने अपने उद्‌बोधन में सांस्कृतिक कार्यक्रम को भावपूर्ण व प्रेरणाप्रद तथा महाविद्यालय को और राष्ट्र निर्माण में सहयोगी माना।

आख्या–3

रेन्जर

रेंजरिंग प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में चारित्रिक श्रेष्ठता सेवा तथा समर्पण का भाव पोषित करना है। रेंजरिंग द्वारा छात्राएं न केवल अपने राष्ट्र के दायित्व के प्रति जागरुक होती है वरन् स्वस्थ शरीर के महत्व के प्रति भी सजग होती हैं। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु रेंजर्स शिविर का आयोजन किया जाता है।

सत्र 2017–18 मे भी रेंजर्स के तीन दिवसीय जॉच शिविर (18 से 20 जनवरी) का आयोजन किया गया। शिविर में प्रवेश के 56 और निपुण के 20 रेंजर्स को प्रशिक्षण दिया गया। रेंजर्स को दो टीम रानी लक्ष्मी बाई तथा सरोजनी नायडू में विभाजित कर बी.पी. सिक्स, वी फारमेशन, ध्वज गीत, झंडा गीत, तंबू गाड़ना, पुल बनाना एवं प्राथमिक चिकित्सा आदि का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में विभिन्न समसामयिक विषयों जैसे– नारी सशक्तिकरण, जी.एस.टी., आतंकवाद, बालश्रम, वृक्षारोपण, पर्यावरण पर मानवीय क्रियाकलापों का प्रभाव, भूमण्डलीकरण आदि पर भाषण एवं संवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शिविर के दूसरे दिन रेंजर लीडर डॉ. रेखा रानी ने छात्राओं को प्राथमिक चिकित्सा के विषय में बताया तथा भविष्य में किसी भी प्रकार की परिस्थिति के लिये स्वयं को तैयार रहने की प्रेरणा दी। रेंजर्स ने आर्ट एण्ड क्राफ्ट की प्रदर्शनी लगाई तथा एक तीली से भोजन भी बनाया। शिविर का निरीक्षण न्यायमूर्ति श्री अरुण टण्डन द्वारा किया गया। प्राचार्या डा. लालिमा सिंह ने छात्राओं को आशीर्वचन देकर उनका उत्साहवर्धन किया। लीडर ट्रेनर उषा कुशवाहा ने तथा रेंजर लीडर डा. रेखा रानी ने रेंजर्स को प्रशिक्षण दिया शिविर के आयोजन में डा. रुचि मालवीय तथा डा. जेबा नेकवी ने सक्रिय सहयोग दिया।

छात्र परिषद

Kaynat Fatima
President
B.A. III

Nikha Kesarwani
Vice Presedent
B.A. II

Tarannum Bano
Secretary
B.A. I

Farzan Shamim
Joint Secretary
B.Sc. I

क्रीड़ा विभाग
अन्तरमहाविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता

अन्तर्विश्वविद्यालयीय खो खो प्रतियोगिता 2017–18 छत्रपति साहू जी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय में प्रतिभाग करने वाली महाविद्यालय की छात्राएं (15.10.2017 से 17.10.2017 तक)

सोनी सिंह
बी.ए. तृतीय वर्ष

माहिम बेगम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

अनुपमा पाल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

शिवाक्षी कसेरा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

आयुषी सिंह
बी.ए. तृतीय वर्ष

रूबी पाल
बी.ए. प्रथम वर्ष

अन्तर्विश्वविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता 2017–18 महर्षिदयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में भाग लेने वाली महाविद्यालय की छात्राएँ

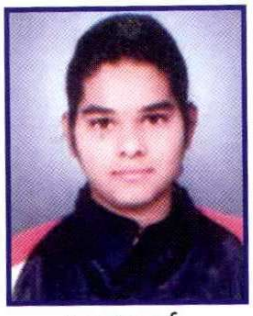

रत्ना शर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष

गुलफ्शा फातिमा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

अनुपमा पाल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कीर्ति अरोरा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

शिवांगी सिंह
बी.ए. द्वितीय वर्ष

बेस्ट इन स्पोर्ट्स प्रथम पुरस्कार
नाजिया फातिमा – बी.ए. प्रथम वर्ष

बेस्ट इन स्पोर्ट्स द्वितीय पुरस्कार
रुबीना बानो – बी.ए. द्वितीय वर्ष

स्पोर्ट्स

''पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब,खेलोगे कूदोगे होगे खराब''–यह कहावत आज निराधार हो गई है। माता–पिता आज जान गए है कि बच्चों के मानसिक विकास के साथ शारीरिक विकास भी होना चाहिए।

खेल वार्षिकोत्सव 2017–18 के अवसर पर विभिन्न खेल–कूद प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 08.01.2018 से 20.01.2018 तक कबड्डी, रस्साकसी, खो–खो, बैडमिण्टन तथा ऐथलेटिक्स का आयोजन किया गया। जिसमे की ओवर आल चैम्पियन का प्रथम खिताब यलो हाउस तथा ओवर आल चैम्पियन का द्वितीय खिताब ब्लू हाउस को मिला जिसमें की –

इण्टर हाउस प्रतियोगिता परिणाम (2017–18)

कबड्डी में ग्रीन हाउस प्रथम स्थान पर रहा तथा ब्लू हाउस द्वितीय स्थान पर रहा।

रस्साकसी में ग्रीन हाउस प्रथम पर रहा तथा ब्लू हाउस द्वितीय स्थान पर रहा।

खो–खो में यलो हाउस प्रथम स्थान पर रहा तथा ब्लू हाउस **द्वितीय स्थान पर रहा।**

बैडमिण्टन में

1. ग्रीन हाउस – प्रथम स्थान
2. यलो हाउस– द्वितीय स्थान
3. ब्लू हाउस– तृतीय स्थान

महाविद्यालय में खेल वातावरण निर्मित करने तथा खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के लिए सत्र भर खेल सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की जाती है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा चयनित महाविद्यालय की निम्न छात्राओं ने अन्तर्विश्वविद्यालयीय खो–खो एवं कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लिया।

एन सी सी

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर कर्नल प्रफुल्ल सिंह, समादेश अधिकारी १५ यू.पी. बटालियन ग्रुप एन सी सी इलाहाबाद से कैडेट द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर कैडेट लेते हुए

स्वच्छता ही सेवा पर रैली

एन सी सी

देश के युवाओं में चरित्र, साहचर्य, अनुशासन, नेतृत्व, धर्मनिरपेक्षता, रोमांच तथा निःस्वार्थ सेवा इत्यादि को साकार रुप में परिणत करने का सशक्त माध्यम नेशनल कैडेट कोर अर्थात् सम सैन्य अभ्यास है। कैडेट का सर्वांगीण विकास कर उनकी प्रतिभा को राष्ट्रोन्मुखी बनाने के लिए महाविद्यालय में विगत 10 वर्षों से निरन्तर एन सी सी 'बी' एवं 'सी' स्तर का प्रशिक्षण सुचारु रुप से दिया जा रहा है। जिसकी अवधि 3 वर्ष है। महाविद्यालय में 6 यू.पी गर्ल्स बटालियन एन सी सी इलाहाबाद की एक प्लाटून 55 कैडेट्स कार्यरत है। प्रशिक्षण में व्यक्तित्व के विकास हेतु ड्रिल हथियारों के प्रशिक्षण में .22 राइफल एल.एम. जी, एम एम जी, एस एल आर इत्यादि का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण, राष्ट्रीय एकता, लीडरशिप, सिविल अधिकारियों को मदद, नागरिक सुरक्षा, इकोलॉजी, प्राथमिक उपचार, स्वास्थ्य और स्वच्छता, समाज सेवा, साहसिक क्रिया–कलाप, पैराजंपिक मानचित्र का अध्ययन, पॉश्चर ट्रेनिंग, सिग्नलस व गृह परिचर्या इत्यादि विषयों की विस्तृत जानकारी के द्वारा अध्ययन कराया जाता है।

महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय है कि इस वर्ष से राष्ट्रीय स्तर पर थल सैनिक कैंप दिल्ली के लिए इलाहाबाद ग्रुप में आर्मी कोर से एकमात्र कैडेट अर्पिता बनर्जी बी.ए. तृतीय वर्ष का चयन हुआ है। मावलंकर शूटिग कम्पटीशन में इलाहाबाद ग्रुप में आर्मी कोर से एकमात्र कैडेट कु. दीपशिखा शुक्ला का प्रदेश स्तर से चयन हुआ, साथ ही इलाहाबाद ग्रुप में मण्डल स्तर पर सर्वश्रेष्ठ एन सी सी कैडेट का पुरस्कार भी कैडेट कु0 दीप शिखा शुक्ला को प्राप्त हुआ। कैडेट को एन सी सी निदेशालय उ0प्र0 की ओर से ₹4500/– धनराशि तथा एन सी सी किट प्रदान किया गया। **सत्र 2017–18 में उ. प्र. निदेशालय** द्वारा उत्तर प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ एन सी सी ऑफीसर का अवार्ड डा. कैप्टन रेखा रानी को प्राप्त हुआ। **इसी सत्र में लेफ्टिनेन्ट से कैप्टन रैंक पर पदोन्नति का अनुमोदन उ0प्र0 निदेशालय एन सी सी लखनऊ द्वारा किया गया। 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन एन सी सी के समादेश अधिकारी कर्नल सुनील चतुर्वेदी द्वारा कैप्टन रेखा रानी को तीन स्टार की रैंक लगाकर पदोन्नति प्रदान की गई।**

21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस हेतु 10 दिवसीय शिविर का आयोजन 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन द्वारा सम्पन्न कराया गया। जिसमें 600 कैडेट एवं महाविद्यालय से 23 कैडेट को योग का प्रशिक्षण डा. कैप्टन रेखा रानी द्वारा दिया गया। एडवांस लीडरशिप कोर्स आगरा के लिये कैडेट आंकाक्षा तिवारी, कैडेट **तृप्ति त्रिवेदी का चयन हुआ।** आर्मी अटैचमेंट लखनऊ के लिए महाविद्यालय से तीन कैडेट–कैडेट स्वाती यादव, **कैडेट रोशनी**, कैडेट आंकाक्षा तिवारी चयनित हुए। प्रदेश स्तर पर महाविद्यालय से इन्टीग्रेटेड ग्रुप कम्पटीशन में 6 कैडेट–कैडेट काजल सिंह पटेल, कैडेट माया त्रिपाठी, कैडेट आंकाक्षा तिवारी, **कैडेट शबा**, **कैडेट रोशनी** ने प्रतिभागिता की।

महाविद्यालय में दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. दिनेश सिंह एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद के कुलपति प्रो0 रतन लाल हांगलू के सम्मान में एन.सी.सी. कैडेट द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

कैडेट ने 'स्वच्छता ही सेवा' विषय पर महाविद्यालय से रैली का आयोजन किया जिसमें स्लोगन व स्वच्छता कार्य संपादित कर जन जन को जागरूक कर मन, वचन और कर्म की स्वच्छता पर बल दिया। गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि 15 यू.पी. बटालियन एन सी सी इलाहाबाद के समादेश अधिकारी कर्नल प्रफुल्ल सिंह द्वारा ध्वज शिष्टाचार के दायित्व का निर्वहन किया गया। मुख्य अतिथि ने उनके सम्मान में आयोजित गार्ड ऑफ कमान का निरीक्षण कर परेड कमान की सलामी ली।

आख्या–6

NSS

National Service Scheme, under the Ministry of Youth Affairs and Sports Govt.of India, popularly known as NSS was launched in Gandhiji's Birth Centenary year 1969, in 37 Universities involving 40,000 students with focus on the development of personality of students. Today the strength of NSS volunteers has increased in number all over the country and that is the clear indication that many of them have been benefited by the activities of NSS. In our College also four units of NSS have been running successfully under the supervision of four NSS Programme Officers Dr Jyoti Kapoor (unit -1), Dr Ruchi Gupta (unit -2) Dr Ruchi Malaviya (unit -3), Dr Zeba Naqvi (unit -4). In the session 2017-18 multifarious activities were organised by the NSS Programme Officers with the object of making students aware of their responsibilities towards social welfare. Some important programmes held during the year were-

- Cleanliness Oath ,lecture by the Principal Dr Lalima Singh, Dr Alpana Agrawal, Dr Manjari Shukla and Dr Rekha Rani and 'shram daan' by the NSS volunteers in College campus and slum areas during the 'Swachhta Pakhwara' (1st August -15th August), Commemoration of 75th anniversary of the Quit India Movement on 9th August 2017 by taking pledge to

create new India and taking out a rally on Swachhta and speech competition on the role of youth in nation building on International Youth Day on 12th August.

- Independence day was celebrated by taking out Prabhat Pheri and some NSS volunteers also participated in the Independence day ceremony at the University of Allahabad. 'Sadbhawana Pakhwara' (20th August -3rd September) was celebrated by organizing a motivational speech of the Principal Dr Lalima Singh and an impressive lecture by Dr Alpana Agrawal, rally, poetry, speech and patriotic song competition.
- Cleanliness oath, cleanliness drive in college campus, outside the college and Raj Andh Vidyalaya, plantation drive, participation of volunteers in elocution contest on "Health and Hygiene is the real wealth" and an awareness drive towards twin bin were held during the Swachhta Pakhwara from 1st to 15th September. Closing ceremony of Swachhta Pakhwara was conducted under the gracious presence of Dr Ashok Shroti Regional Director Govt. Of India and Dr Anshumali Sharma State Liaison Officer and various cultural programmes were also presented. On 8th September International Literacy

day, was observed, in which an inspirational lecture was delivered by Dr Neerja Sachdev. On 14th September adult education drive was carried out.NSS day was organised on 24th September.

- On 2nd October Gandhi Jayanti was celebrated by performing some cleaning activities, speech competition on Nations struggle towards Independence and an interactive session with Dr Zeba Naqvi on the life of Mahatma Gandhi. On 17th October an Intercollegiate poster competition on the theme of 'Clean City My Dream City' and On 27th October a lecture on "E banking and its security" by Ms Zeenat Fatima, Assistant Branch Manager of Syndicate Bank, was organised. On 30th October the NSS volunteers participated in run for unity which was flagged off from the University of Allahabad.
- In the month of November a meeting of NSS Advisory board was held on 3rd under the chairpersonship of the Principal Dr Lalima Singh. Meeting was graced by Dr Manju Singh, Dr Suman Seth, Dr Anita Gopesh, Dr Rita Chauhan Dr Meenu Agrawal and all programme officers. Swachhta drive in the Kushtha Ashram on 6th, lecture on traffic rules by Himanshu Kumar, Quami Ekta week from 19th to 25th and deliberations on "pulse polio" by Dr Vandana Raj on 20th November were other important events.
- In December Aids Day on 1st December, one day camp on 3rd and 4th December, Human rights day on 10th December were held. On 14th December the students watched the movie "Polythene Ek Dansh" organized by the Global Green Institution. On 16th the students participated in a speech competition on Swaraj organised by the NSS coordinator Dr Manju Singh in the University of Allahabad. From 17th to 23rd NSS special 7day camp on the theme of youth for the Digital India was held. Lectures of eminent academicians, various competitions rallies and shramdaan were organised toenlighten the students. Closing ceremony was celebrated under the gracious presence of the NSS coordinator Dr. Manju Singh.
- On 11th January Cleanliness rally on Sangam, on 12th Vivekananda Jayanti, on 13th Rangoli competition and on18th essay, speech and solo song competitions on the voter awareness and celebration of Republic day were important events in the month of January.
- On 8th March on the occasion of Women's day a discourse on Rejuvenating the spirit of women to fly was held. Dr Anita Gopesh, Dr Anju Gupta and Mr Badal Chatterjee were the guests for the function.

प्रेमचन्द्र का साहित्य और दलित चिंतन

रानी सोनी
एम.ए. प्रथम वर्ष - हिन्दी

प्रेमचन्द उन लेखकों में है जिनकी रचनाओं से बाहर के साहित्य-प्रेमी भी हिन्दुस्तान को जानते है। उन्होंने हिन्दुस्तान के बाहरी सम्मान को भी बढ़ाया है, हमारे देश को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गौरव दिया है। जिन पर सारा हिन्दुस्तान गर्व करता है, दुनिया की शान्ति प्रिय जनता उन पर गर्व करती है, सोवियत संघ के आलोचक मुक्त कण्ठ से उनके महत्त्व को उद्घोषित करते है। हम हिन्दी भाषी खास तौर पर उन पर गर्व करते है, क्योंकि वे सबसे पहले हमारे थे, जिन विशेषताओं को उन्होंने अपनी रचनाओं में झलकाया है, वे हमारी जनता की जातीय विशेषताएं थी।

हिन्दी साहित्य में आज जो समस्याएं उठ रही है, उन्हें हल करने में प्रेमचन्द का अध्ययन बहुत सहायता प्रदान करता है। प्रेमचन्द हिन्दुस्तानी कौम की भीतरी एकता कायम करने वाली एक जबर्दस्त ताकत थे, इस कौम को तोड़ने वालों के बड़े दुश्मन थे। प्रेमचन्द एक अत्यन्त सहृदय और परदुख कातर व्यक्ति थे, उन्होंने जीवन भर कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन अपने मन में उन्होंने कभी कटुता नहीं आने दी। उनके आँसू हृदय में छिपे रहते थे तरल आँखों में हँसी नाचा करती थी। प्रेमचन्द ने निराशावादी कवियों की तरह वेदना के गीत नहीं गायें, कठिनाइयों को चुनौती देते हुए उन्होंने उनका मुकाबला किया। मनुष्य में अटूट विश्वास यह उनके जीवंतता का प्रमुख स्रोत था। प्रेमचन्द ने अपने समय के सामाजिक जीवन को एक नयी गति दी और एक नई दिशा प्रदान की। **''प्रेमचन्द उन उपन्यासकारों में थे जो पेड़ का पत्ता देखकर संतोष न करते थे बल्कि उसकी जड़ें खोदकर देखते थे, चाहे वे पाताल तक ही क्यों न गई हो।''** प्रेमचन्द ने जहाँ **'सेवासदन'** में नारी-मात्र की उस वेदना का जिक्र किया जो उस समय की नारी झेल रही थी तो वही **'कर्मभूमि'** में उन्होंने अछूत किसानों और खेत मजदूरों की भूमि समस्या पर दृष्टि केन्द्रित की और उसमें उन्होंने लगान बंदी की लड़ाई को उनकी मुख्य लड़ाई बताया। इस प्रकार उन्होंने अपने समय के उस तबके को अपनी रचनाओं का नायक बनाया जो किसी समय में नाटको में हास्य पात्र अथवा नौकर के रूप में सामने आते थे।

आज साहित्यिकता को परखने तथा मापने के परिणामों में बदलाव आ रहा है और यही साहित्य और समाज के क्रमिक विकास की गति भी है जैसा आचार्य शुक्ल भी मानते है। प्रेमचन्द के साहित्य को परखने का नजरिया चाहे जो हो परन्तु जो चीजें उन्होंने अपने अनुभव तथा ज्ञान के स्तर पर अपनी रचनाओं में उड़ेला है उससे उनकी उस सामाजिक चेतना की ओर प्रकाश पड़ता है जिसमें कुछ सुगबुगाहट आरम्भ हो गयी थी। अपने अधिकार सम्मान के प्रति उस समाज में जागृति या कहें की पुनर्जागरण की स्थिति का आगमन हो रहा था। आज जो विमर्श दलित साहित्य तथा दलित साहित्यकार को लेकर चल रहा है उसमें यदि प्रेमचन्द को रखकर देखा जाय तो प्रेमचन्द किसी दलित साहित्यकार से कम नहीं आंके जा सकते क्योंकि उन्होंने जो देखा उसे हृदय से अनुभव किया वे पाप और पुण्य के राक्षस और देवता रचने वाले साहित्यकार नहीं थे। उन्होंने उस धड़कन को सुना जो करोड़ो अछूतों-दलितों के दिलों में हो रही है। उन्होंने उस अछूते यथार्थ को अपना कथा-विषय बनाया जिसे भरपूर निगाह से देखने का साहस ही बड़े-बड़े को न हुआ था। प्रेमचन्द की कहानी का आरम्भ किसी रमणी से आँखे लड़ जाने पर नही होता और न ही उस कहानी का अंत नायक-नायिका के विवाह से होता है, उनकी कहानी का आरम्भ एक सामान्य और दलित कुचले हुए व्यक्ति के अश्रुपूर्ण जीवन से होता है।

''दलित विमर्श आज के युग का एक ज्वलंत मुद्दा है। भारतीय साहित्य में इसकी मुखर अभिव्यक्ति हो रही है। दलित-साहित्य को लेकर कई लेखक संगठन बन चुके है और यह एक आन्दोलन का रूप लेता जा रहा है।'' भारतीय समाज में दलित मूलतः एक विजातीय सामाजिक समूह रहा है, जिसके तहत छह सौ से भी ज्यादा जातियों को शुमार किया जा सकता है। अतीत में यह समुदाय ब्राह्मणवाद की प्रकृति व संस्कृति द्वारा बनाए गये विशेषणों नीच, अधम, अछूत, असभ्य आदि के साथ जीने को बाध्य था। वह वर्ग तो मनुष्य के रूप में जन्म लेता था पर सम्मान व अधिकारों से पूरी तरह वंचित था। चाहे वह स्वतन्त्रता का आन्दोलन हो या चाहे दलितों, अछूतों तथा किसानों के साथ मिलकर उनका संघर्ष।

प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में दलितों के जीवन संघर्ष तथा प्रताड़ना का जो दृश्य उजागर किया है वह हमें उनके देखे और भोगे हुए जीवन का यथार्थ जान पड़ता है।

'प्रेमचन्द का झुकाव शुरू से ही यथार्थ जीवन की तरफ था। दिन पर दिन उनके यथार्थवादी चित्रण में गहराई आती गई। 'जीवन में साहित्य का स्थान' नामक लेख में उनका पहला ही वाक्य है- 'साहित्य का आधार जीवन है।'' रूढ़ियां भी ऐसी कि जिनमें सिर्फ जिंदा रहना मुनासिब था। प्रेमचन्द ने उस गाँव में रहने वाली साधारण जनता के हृदय को परखा था जो अन्दर और बाहर से भयभीत तथा डरी हुयी जीवन व्यतीत कर रही थी तथा उसके अन्दर का जो ज्वार था वह धीरे-धीरे किस प्रकार ज्वालामुखी का रूप ले रहा था इसे भी वे अच्छी तरह से समझ रहे थे।

प्रेमचन्द ने उस समय की जो सबसे विषम समस्या थी जातीयता, उसका बहुत ही मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। **'पूस की रात', 'ठाकुर का कुआँ', 'कफन'** आदि ऐसी कहानियाँ है जिसमें उन्होंने उस समय की दलित जनता का वर्णन बहुत ही कारुणिक रूप से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ सिर्फ दलितो के प्रति हमारे मन में करुणा भाव का ही संचार नहीं करती बल्कि उस समस्या को वर्तमान समय में एक नये प्रश्न चिह्न के साथ प्रस्तुत करती है।

19वीं सदी के भक्ति आन्दोलन में इस समस्या को प्रमुखता से उठाया गया। धीरे-धीरे आध्यात्मिक गुरुओं; जो कि स्वयं पिछड़े और दलित वर्ग से सम्बन्धित थे, के आने से इतिहास में नाटकीय मोड़ आया। कबीर, रविदास, सेन, रज्जब आदि समाज सुधारक ब्राह्मणवाद से कोसों दूर थे। उन्होंने अपना संदेश लोकभाषा में दिया। इन संतों ने न केवल संस्कृति की मान्यताओं को नकारा, बल्कि वर्ण के आधार पर आधारित सामाजिक ढाँचे को ध्वस्त कर डाला। निःसंदेह इन घटनाओं से इस समुदाय में चेतना की एक लहर आई। धीरे-धीरे यह वर्ग अपनी पहचान और अधिकारों के प्रति जाग्रत अवस्था में आया। प्रेमचन्द के साहित्य में भी इस वर्ग के उस तूफान की झलक मिलती है जो अब सहन न कर सकने की स्थिति में पहुँच रहा है। **'गोदान'** में हरिजन तो अपने अधिकारों के प्रति इतने जागरूक हैं कि वे मातादीन को जो सिलिया चमारिन का प्रेमी है, चमार बनाकर ही छोड़ते है। इस उदाहरण से प्रेमचन्द ने गांधी जी द्वारा प्रदत्त उस हरिजन वर्ग का प्रतिनिधित्व किया है जो एक समय सिर्फ प्रताड़ित तथा मार खाने सताने जाने के लिए ही था। **'प्रेमचन्द यह अच्छी तरह समझते थे कि पुरोहितवाद, ब्राह्मणवाद, सामन्त-जमींदारों का पोषक तत्त्व है।''**

प्रेमचन्द का रचनाकाल स्वतंत्रता आन्दोलन के समय तथा दो महायुद्धों के बीच ओर उसके वाद का काल है जिसमें वे उस समय के समाज तथा गांधीगीरी से पूर्ण रूप से प्रभावित दिखाई देते है। गांधी जी के समय में कुछ हरिजनों के मंदिर प्रवेश के आन्दोलन को उन्होंने **'कर्मभूमि'** में बड़े सरल ढंग से प्रस्तुत किया। **''वास्तव में प्रेमचन्द के साहित्य में यही दलित विमर्श, दलितों के कटु सामाजिक यथार्थ का दर्पण है जो क्रांतिकारी है क्योंकि यह परिवर्तन की समझ विकसित करता है।''**

वर्तमान में जहाँ एक ओर दलित विमर्श व साहित्य पर जोर-शोर से संगोष्ठी व सम्मेलन आदि का आयोजन किया जा रहा है वहीं इस विमर्श और साहित्य के विचार पर विद्वानों में मतभेद देखने को मिलता है। एक ओर जहाँ दलित लेखक मानते है कि दलित साहित्य सिर्फ दलित वर्ग ही लिख सकता है वहीं दूसरी ओर मुख्य धारा के विद्वत जन दलित साहित्य को सिरे से नकारते है। वास्तविकता यह है कि साहित्यकारों ने इस विमर्श को ध्यान में रखकर अपनी रचनाएं नहीं की क्योंकि किसी साहित्यकार या लेखक की कोई जाति नहीं होती, वह जाति, धर्म, समाज, रीति-रिवाज से उदाहरण लेता हुआ अपनी रचना को रूप देता है जिसमें जाति नहीं उसका राष्ट्र बसता है। अतः साहित्यकार की रचना अनुभूतियों और अनुभवों के भोगे तथा देखे जीवन का यथार्थ होती है। यह अलग बात है कि हम उसे किस रूप तथा विमर्श में ले आते है। प्रेमचन्द को यदि तथाकथित जातीय आधार से परखें तो वे दलित नहीं थे परन्तु फिर भी उनके साहित्य में दलितों के प्रति जो करुणा थी वह किसी दलित साहित्यकार के वर्णनों से कम नहीं आंकी जा सकती।

अन्ततः विमर्श और विचार के इस धरातल पर यदि मान लिया जाय कि दलित ही एक वास्तविक दलित साहित्य लिख सकता है तो भी हमे यह मानना पड़ेगा कि प्रेमचन्द की पीड़ा किसी व्यक्ति को लगी हुई वह चोट है जिसे वह देख तो नहीं सकता पर उससे होने वाली जो पीड़ा है उसका अनुभव कर सकता है।

स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व

संगीता रैदास
एम.ए. द्वितीय वर्ष, हिन्दी

शिक्षा मनुष्य का आभूषण है। शिक्षा जीवन को 'सत्यम-शिवम् से समन्वित करती है। शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की शिक्षा और चरित्र पर निर्भर करती है। शिक्षा वह अद्वितीय ज्योति है जो मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है।

राष्ट्र और समाज के चहुँमुखी विकास हेतु नारी का शिक्षित होना अति आवश्यक है क्योंकि शिक्षित नारी का परिष्कृत और विकासशील मस्तिष्क ही राष्ट्र का समुचित विकास करने में पुरुष को सहयोग दे सकता है। भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में नारी का पूर्ण सहयोग देश को प्राप्त हुआ है। सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों में नारी ने पुरुष से बढ़कर सहनशक्ति, आत्मत्याग, कर्मठता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है।

शिक्षित महिलाएं आज प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के समान कार्य कर रही है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, देश की सुरक्षा का, खेलकूद का अथवा राजनीति का। भारतीय महिलाओं में अग्रगण्य भारत - कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने उत्तर प्रदेश के गर्वनर के पद पर, श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने विदेश राजदूत के पद पर तथा श्रीमती इंदिरा गाँधी ने प्रधानमंत्री के पद पर सुशोभित होकर स्त्री जगत का सम्मान बढ़ाया है। इसके विपरीत ग्रामीण निरक्षर महिलाओं का जीवन अन्धकारमय है। वे आज भी दोहरी मानसिकता की पुरुष सत्तात्मक बेड़ियों में जकड़ी हुई है।

महिला के शिक्षित होने पर पूरा परिवार प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर लेता है। वे अपनी योग्यता से परिवार को सुघड़ तथा सुसंस्कृत बनाने में सफल रहती है। इसलिए कहा गया है- "पढ़ी लिखी नारी घर की उजियारी। स्त्री शिक्षा के महत्त्व पर गांधी जी ने कहा था- "एक लड़के की शिक्षा एक व्यक्ति की होती है। जबकि एक लड़की की शिक्षा पूरे परिवार की शिक्षा है।" रूस के महान दार्शनिक टॉलस्टॉय ने कहा है- "यदि आप मुझे साठ आदर्श माताएं दे दें तो मैं आपको एक आदर्श राष्ट्र दे सकता हूँ।" आज की बालिकाएं ही भविष्य की मातृशक्तियाँ है। शिक्षित बालिका ही भविष्य में आदर्श पत्नी, आदर्श माता की भूमिका अदा कर देश निर्माण में योगदान दे सकती है। शिक्षा ही वह पूंजी है, जो जीवन के सभी द्वार खोल देती है। महिलाओं में शिक्षा के अभाव का तात्पर्य उनमें आत्म निर्भरता, आत्म विश्वास व जागरूकता की कमी का होना है। जिसके कारण वह अपनी समस्याओं का स्वतः समाधान नहीं कर पाती हैं।

वैदिक काल में स्त्रियां वेद अध्ययन के अतिरिक्त राजनीति, युद्ध-विद्या, संगीत, नृत्य, ललित कलाओं की शिक्षा प्राप्त करती थीं। पुरुषों के साथ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ करती थीं। वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा, मदालसा आदि अनेक विदुषी स्त्रियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान प्राप्त था। बौद्ध काल में स्त्रियों को धार्मिक शिक्षा के अलावा अन्य शिक्षाएं मौखिक रूप से पालि भाषा में बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा दी जाती थी। मुगलकाल में पर्दा प्रथा, रूढ़िवादिता के कारण स्त्रियां अशिक्षित रह गयीं। केवल कुलीन व शाही परिवार की महिलाओं को ही शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध थीं। ब्रिटिश काल में राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने स्त्री उत्थान के लिए कड़ा संघर्ष किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में नारी शिक्षा पर ध्यान दिया गया।

समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे- दहेज प्रथा, लिंग भेद, भ्रूण हत्या, बाल-विवाह सामाजिक असमानता, कुसंस्कार, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता को समाप्त करने के लिए नारी शिक्षा ही एक हथियार है। शिक्षा के द्वारा बालिकाएं आत्मनिर्भर होकर माता-पिता पर बोझ नहीं वरन् बुढ़ापे का सहारा बन रही हैं। शिक्षित नारियाँ बच्चों का पालन-पोषण, घरेलू कार्यो की जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ परिवार को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने में सहयोग देती है।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जोर दिया गया है कि विश्व मानव समाज की स्थापना एकांगी रूप से सम्भव नहीं, प्रत्येक दशा में महिलाओं की उन्नति एवं उनके सम्मान को संरक्षित एवं संवर्द्धित करना होगा।

साक्षारता एवं शिक्षा ने आज नारी जीवन के सभी आयामों को प्रभावित किया है। आज घर-परिवार से लेकर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी कीर्ति पताका लहरा रही है। महिला स्वयंसिद्धा हैं, गुणों की सम्पदा हैं। आवश्यकता है इन शक्तियों को महज प्रोत्साहन एवं अवसर देने की, तभी महिला सशक्तीकरण का स्वप्न पूरा होगा और भारत सन् 2020 तक विकसित देशों की पंक्ति में खड़ा होगा।

निराला प्रासंगिक क्यों !

योगिता सिंह
एम.ए., द्वितीय वर्ष-हिन्दी

प्रासंगिकता की बात जब किसी रचना के बारे में करते है तब सवाल उठता है- प्रासंगिकता किन सन्दर्भों में ? किन अर्थों में ? बहुत सारे अमूर्तीकरण के शिकार शब्दों की तरह- "प्रासंगिकता" भी ऐसा ही शब्द है। फिर भी "प्रासंगिकता" की जो अर्थ- छाया पाठक समुदाय के मन में सबसे पहले उभरती है वह है- उपयोगिता/रचना की उपादेयता एवं उपयोगिता वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक सन्दर्भों में कितनी है ? इससे ही रचना की प्रासंगिकता निर्धारित होती है। नामवर जी ने 'वाद-विवाद-संवाद' में एक लेख लिखा है, "प्रासंगिकता का प्रमाद।" लेख का प्रारम्भ होता है- "प्रासंगिक क्या वही है जो हमारे विचारों का अनुमोदन करता है और आजकल के अनुकूल है ? जो आज से भिन्न है और हमें चुनौती देता है, वह प्रासंगिक क्यों नहीं ?" नामवर जी इस बात का उत्तर स्वयं देते हैं अगले वाक्य में- "आज यह सवाल उठाना इसलिए जरूरी है कि प्रासंगिकता की चिन्ता प्रमाद की सीमा तब बढ़ गयी है।" इस 'प्रमाद' से बचने की जरूरत है।

निराला के काव्य पर विचार करते समय प्रासंगिकता के दो धरातल साफतौर पर नजर आते हैं- एक यह है कि निराला की कविता का सामाजिक सरोकार आज की जटिलता को कितना अपने भीतर समेटता है और दूसरा- निराला के काव्य-कला सम्बन्धी सर्जनात्मक विचार तथा सरोकार, जिसको आज के रचना-धर्मी लोग प्रासंगिक मान रहे है (और वे गलत नहीं मान रहे हैं)। इसको थोड़ा सा स्पष्ट किया जाय तो कहा जा सकता है कि निराला की कविताओं में व्यक्त होने वाला राजनीतिक विचार की आज के सन्दर्भ में सामाजिक पक्षधरता क्या है ? वे कहाँ खड़े है ? दूसरा यह कि कला के स्तर पर कवि 'माध्यम' एवं 'आशय' के जटिल तथा तनावपूर्ण स्थिति को कितना साध सका है ? वैसे तो निराला अपने गद्य लेखन में ज्यादा साफ तौर पर अपने समय की सामाजिक समस्याओं एवं कलात्मक समस्याओं से जूझते नजर आते हैं, किन्तु कविता के नियमों के भीतर वे कविता में उक्त समस्याओं को कहीं न कहीं पूरी शिद्दत के साथ रचते हैं। यानी माध्यम बदल गया है सामाजिक सरोकार नहीं। निराला एक साथ सामाजिकता और साहित्यिकता का सर्जनात्मक सन्तुलन बनाये रखते हैं। आज जबकि एक साथ साहित्य की साहित्यिकता एवं सामाजिकता की रक्षा करना कठिन हो गया है ऐसे में निराला का यह अद्‌भुत "संयोग" हमारे लिए प्रासंगिक हो जाता है। तात्कालिकता को (आक्रान्त) अतिक्रान्त करती निराला की कविताएँ किसी भी अनुभव के ध्रुवान्तों पर जाने से बच जाती हैं। इतना ही नहीं, अपितु वे ध्रुवान्तों को मिलाने वाली एक समन्वयकारी शक्ति के रूप में हमारे सामने आती हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्द में निराला के यहाँ "विरुद्धों का सामंजस्य' मिलता है।

विशेषकर निराला के दूसरे दौर की रचनाएँ (1932-35) सामाजिकता पक्षधरता को ज्यादा स्पष्ट करती है। संधिकाल की कविताओं में निराला की बदली हुई चेतना साफ दृष्टिगोचर होती है। 1935-36 में लिखी गयी रचनाओं में छायावादी प्रवृत्तियों का त्याग और साधारण अथवा सामान्य का अपनाव-निराला में सर्जनात्मक प्रतिभाशील चेतना के बदलते हुए स्तरों का संकेत है, इसी दौर में निराला के काव्य में उपेक्षित-दलित के उन्नयन और जन-साधारण की प्रतिष्ठा के प्रति गहरी आस्था के दर्शन होते हैं। आज की विकसित सभ्यता किस प्रकार सामान्य जनता को दगा दे रही है, यह जो बात आज लोग सोच रहे हैं- उसकी मुक्ति का संदेश निराला की कविताओं में व्यांपक रूप से मिलता है। आज जिस अंध विश्वासी चेतना ने गुलाम मानसिकता को ईजाद किया है उससे ठगने वाली जनता धीरे-धीरे मृत्यु गर्भ में घिसट रही है, आखिर जनता की यह भोली-भाली आस्था ही तो थी जिसने जनता को कई बार ठगा- निराला इस आस्था पर चोट करते है। "दगा की इस सभ्यता ने हर बार दगा की" अपनी कविताओं में इसी ऐतिहासिक पहचान-दृष्टि की पृष्ठभूमि पर वे जन साधारण की प्रतिष्ठा का बीड़ा उठाते हैं।

आज इतिहास की पुनर्व्याख्या की जरूरत जान पड़ती है लोगों को, जब हम अपने ही दो हजार साल के इतिहास में तथा उसकी सामाजिकता पूर्ण रचना में बार-बार जनसाधारण को टटोलते हैं तब यह सवाल उठता है वह कहां हैं ? उसका पक्षधर कौन है ? उसे कैसा व्यवहार मिला है ? निराला की वैचारिक प्रतिबद्धता निपट जनता के साथ है- साधारण जनता। निराला के अनुसा शोषक का कोई-चरित्र नहीं होता है, वह तो बस पूरे सिस्टम को अपनी रखवाली के लिये रखता है और इस दुरभि सन्धि में कवि-लेखक भी शामिल हैं-

"कवियों ने उसकी बहादुरी के गीत गाए
लेखकों ने लेख लिखे ऐतिहासिकों ने
इतिहास के पन्ने भरे कितने नाट्य कलाकारों

ने नाटक रचे
रंगमंच पर खेले।"

निराला उस समय ऐसे कवि-लेखको की धज्जियाँ उड़ा रहे थे जाति, वर्ण व्यवस्था और ब्राह्मण संस्कृति द्वारा निचले वर्ग के लोगों को लगातार सदियों तक दमित कर दयनीय बना देना तथा अन्ततः भारतीय मेधा का भी अपने स्वार्थों के लिए बड़ी चतुराई से इस्तेमाल कर लेना और समकालीन भारतीय समाज व्यवस्था में इसकी पुनरावृत्ति को निराला अच्छी तरह समझते है और इसके खतरों से वे पूरी तरह आगाह है। 'विधवा', 'दीन', 'भिक्षुक', 'वनबेला', 'तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता', 'गर्म पकौड़ी' आदि कविताएँ निराला के 'स्टैण्ड' को स्पष्ट करती है। पोलिस उपन्यासकार जोसेफ कोनराड ने कहा है कि "कविता मनुष्यता की मातृभाषा है।" मातृभाषा अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि निराला क्रमशः वायवीय चेतना युक्त कठिन भाषा से मुक्त होकर जन भाषा अपनाते हैं। अभिजात भाषा की मुक्ति को ध्यान में रखते हुए कवि - आलोचक केदारनाथ सिंह ने कहा है- निराला की कविता 'परदेश से घर लौटने की कविता है।" उनका एक वाक्य है- "बड़ा कवि अपनी कविता में एक छोटा छिद्र छोड़ देता है और आने वाला समय उसमें अपने अनुसार अर्थ डाल देते है।" निराला की कविताओं की यह अद्‌भुत विशेषता ही उनकी कविता को प्रासंगिक बनाती है। निराला की कविताओं में कई बार ऐसा होता है जैसे- 'राम की शक्ति पूजा' मे राम मिथक राम नहीं हैं, बल्कि वह आधुनिक संशय दुविधाग्रस्त मानव के प्रतीक हैं। आज भी परिस्थितियों की जटिलता का समाधान दुर्निवार लगता है- ऐसे में राम की शक्तिपूजा का सन्देश जीवनाकांक्षा के लिए एक नयी आशा का संचार करता है। शक्ति की मौलिक कल्पना की प्रेरण देता है। "होगी जय ! होगी जय ! हे पुरुषोत्तम नवीन।"

टामस पेन ने कहा है- "हमारे समय में मनुष्य की नियति को परिभाषित करने वाली शक्ति राजनीति है।" कदाचित् निराला पहले कवि है जो इस चेतना को स्पष्टता से पहचानते हैं। अक्सर 'रिएक्ट' करते हैं। निराला यह बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि किसको स्वीकृति देनी है किसका विरोध करना है।

लेख के प्रारम्भ में आशय एवं माध्यम के जटिल एवं तनावपूर्ण सम्बन्ध की बात की गयी है- निराला इसको कैसे साधते हैं तथा भाषा एवं अभिप्रेत के बीच कलात्मक सन्तुलन को कैसे एक नया अर्थ देते हैं, इसके लिए उदाहरण द्रष्टव्य है-

"श्याम तन भर बँधा यौवन
नत नयन प्रिय कर्म रत मन"

अब यहाँ अर्थ-सघनता की सृष्टि किस प्रकार हुयी है- सुन्दर श्याम तन एवं बँधे यौवन वाली स्त्री के जीवन में एन्द्रिक्ता का स्थान कहाँ है ? उसे तो सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए, किन्तु यहाँ निरन्तर कर्मरत स्त्री का दृश्य है। इस वैषम्य में निराला यथार्थ के बीच जिन्दगी की 'आयरी' को उपस्थित करते है। अब यहाँ कवि का अभिप्रेत है कि भर बँधा यौवन के बावजूद वह स्त्री उस पत्थर को तोड़ रही है। कविता में प्रयुक्त भाषा इसी बात को रखती है किन्तु कहीं यह अभिप्रेत अवांछनीय अर्थ की निष्पत्ति न करने लगे उसके लिए निराला ने 'बँधा' शब्द का प्रयोग करके बहुत कुछ उक्त निष्पन्न खतरे में उसको बचा लिया है। 'भर बँधा यौवन' उमड़ता नहीं है- स्थिति की विवशता और उस पर व्यंग्य द्रष्टव्य है। आंद्रेवेद्रोतो का एक कथन याद पड़ रहा है- "सुन्दरता अगर बैचेन करने वाली नहीं है तो वह सुन्दरता नहीं है।" साक्षरता को उदात्त बनाने वाला निराला का यह छोटा सा शब्द 'बँधा' है। निराला मुक्त छंद का प्रयोग इसीलिए करते है क्योंकि उनके आशय बद्ध शब्द रूप में अँटते नहीं। निराला यह छोटा-काम अपने सामाजिक सम्बन्धों से परे जाकर करते है-"बाहर मैं कर दिया गया हूँ। भीतर पर भर दिया गया हूँ।"

आज का रचनाकार निराला को बड़ा कवि इसीलिए मानता है लेकिन हर बात हर समय प्रासंगिक हो ऐसा संभव नहीं। असुविधाजनक असंगतियों की तरफ ध्यान जाना ही चाहिए अन्यथा वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करने के क्रम में उसका अपना वैशिष्ट्य खोता जाएगा। क्योंकि प्रगतिशील तत्त्वों की छान-बीन में आचार्य शुक्ल, निराला, प्रेमचन्द एक जैसे ही दिखेंगें। नामवर जी ने लिखा है, "यदि ब्रेख्त के 'अलगाव प्रभाव' को आलोचना के क्षेत्र में लागू करें तो अतीत की कृतियों को आज के लिए प्रासंगिक बनाने का सबसे वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ ढंग यह है कि अपने और उनके बीच की दूरी को सुरक्षित रखा जाए और इस प्रकार पाठकों में उस आलोचनात्मक विवेक को जाग्रत रखा जाए जिससे वे अतीत की महान से महान कृति के अपने अंतर्विरोधों के प्रति सजग रहे।" आज का पाठक या आलोचक समुदाय इस खतरे से ग्रस्त है, किन्तु निराला का काव्य भाषा सम्बन्धी पक्ष काव्य-सृजन के महत्त्वपूर्ण पक्ष को अपने ढंग से रखता है जिससे निराला के वैशिष्ट्य को उपरोक्त खतरा कम कम जान पड़ता है।

निराला के काव्य की प्रासंगिकता इन्हीं सन्दर्भों एवं अर्थों में आज भी हैं।

भारतीयसमाजे नारी

नैना मिश्रा
बी.ए. प्रथम वर्ष

राष्ट्रस्य निर्माणे यत्र पुरूषाः योगदानं कुर्वन्ति, तत्र स्त्रियः अपि अग्रेऽव दृश्यन्ते। भारतीयसमाजे नारीणाम् स्तुतिः देव्याः रूपे भवति। मनुस्मृत्यां सत्येमेवोक्तम् -

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

प्राचीनकाले नारी सत्यमेव पुरूषस्य अर्धांगिनी आसीत् । परिवारे तस्या प्रमुखस्थानमासीत् । तस्या सम्मत्या विना कोऽपि कार्यः न भवति स्म। रामोऽपि सीतया बिना अश्वमेधयज्ञं कुर्तुं अक्षमोऽभवत् । तेनापि स्वर्णमयी सीता प्रतिकृति स्थापिता। स्त्रियः पुरूषान् युद्धे गमनाय उत्साहितान् अकुर्वन। ता स्वबुद्धित्यागतपसां कृते प्रसिद्धाः आसन् । गार्गी-सीता-सावित्रीनां नामानि केन विस्मृतानि ? अद्यापि तासां नाम सादरं स्मर्यते।

मध्यकाले नारीणं स्थिति शोचनीय अभवत् । मुगलाक्रमणस्य अनन्तरं स्त्रीणां दुर्दशा अभवत् । ताः गृहमध्ये आबद्धा। या नार्यः स्वपत्युः परामवक्षुब्धा शास्त्रार्थं कुर्तुम् सक्षमा आसन् ता गृहमध्ये आबद्धा अभवन् अस्मिन् काले ता भोगविलासस्य वस्तु आसन् । बाल विवाह-सतीप्रथा-आवरणप्रथादय कुरीतयः आविर्भूताः। एतरमादेव कारणात् तासां दुर्दशा अभवत् ।

आधुनिक काले नारीणाम् दशा उत्तरोत्तरं शोभना उन्नता च भवति। अथ पुरूषै सह ता अपि शिक्षाग्रहणाय विद्यालयं गच्छन्ति। अद्यत्वे नार्यः अपि शिक्षकचिकित्सक सैनिक पदेक कार्य कुर्वन्ति। ता पुरूषै सह सर्वाणि कार्याणि कुर्तुं शक्नुवन्ति। अस्मिन् काले ताभिः इदं सिद्धं कृतम् यत् -

क्रियासिद्धि सत्वे भवति नो...

चाटुचणकः

विभा निषाद
बी.ए. प्रथम वर्ष

कश्चन् वैद्यः ग्रामान्तरं गत्वा प्रत्यागच्छन्
मार्गे एकां चितां दृष्टवान् । तत् दृष्टवतः
तस्य महत् आश्चर्यं जातम् । सः वदति-
"एतस्य गृहं प्रति अहं तु न गतः।
मम सहोदरः अपि न गतः। अतः एतस्य
अकालिंक मरणं भवितुं न अर्हति। तथापि
एषः अकाले मृतः ? एवं तर्हि कः एतत्
साहसकृत्यं कृतवान् स्यात् ?" इति।

एहि, हसाम्

तनु सिंह

एकः अपरं पृष्ठवान् - "किं भवतः पुत्रः धूमपानं करोति ?"
"न"
"किं सः मद्यपान करोति ?"
"तदपि न"
"किं कार्यालयतः विलम्बेन आगच्छति ?"
"नैव"
"सः असत्यं कथयति किं ?"
"न कदापि"
"अहो सौभाग्यं भवतः।"
"तस्य किं वयः इदानीम् ?"
"स द्विवर्षीय अस्ति।"

बुद्धि परीक्षा

नीतू
बी.ए. प्रथम वर्ष

कुसुमपुरं नाम नगरम् । तत्र 'नंदः' नाम राजा आसीत् सः नृपः नन्दः अतीव बुद्धिमान् ।

नन्दस्य बुद्धि परीक्षा करणीया इति एकदा तदाश्रितानां राज्ञाम् इच्छा जाता। तदर्थं ते मुद्राङ्कितामू एकां सुवर्णपेटिकां तस्मै प्रेषितवन्तः। पेटिकायाः अन्तः एकः दारूखण्डः आसीत् । एकं पत्रम् अपि तत्र आसीत् । पत्रे एवं लिखितम् आसीत् । "अस्य दारू खण्डस्य मूलभागः कः, अग्रभागश्च कः इति सूचनीयम् " इति।

अनेके बुद्धिमन्तः आगताः। पत्रे स्थितं प्रश्नं पठितवन्तः। किन्तु उत्तरं न ज्ञातवन्तः।

चन्दनदासः कश्चन् श्रेष्ठ वणिक्। तस्य गृहे 'सुबुद्धिः' इति कश्चित् आसीत् । सः पत्रवृत्तान्तं श्रुतवान् , राजसमीपम् आगतवान् च।

सुबुद्धि नन्दम् उक्तवान् - "महाराज! अत्र विचारणीयं किम् अस्ति ? तं दारूखण्डं जले निक्षिपतु । यः भागः जले निमज्जति सः मूलभागः, यत् मूले एव भारः भवति। यः भागः जलस्थ उपरि प्लवते सः अग्रभागः" इति।

अनेन राजा सन्तुष्टः। स सुबुद्धिम् एव मंत्रिपदे नियोजितवान् । सः एव सुबुद्धिः एकस्मिन् युद्धे भयं विना घोरं युद्धं कृतवान् । ततः आरभ्य सः अमात्यराक्षसः इति प्रसिद्धः अभवत् ।

कः रोगः एषः ?

शिवानी त्रिपाठी
बी.ए. तृतीय वर्ष

देहपरीक्षानिमित्तं कश्चित् वैद्यसमीपं गतवान् । वैद्यः पृष्टवान् - "नेत्रयोः पुरतः तिस्रः तारकाः सदा दृश्यन्ते वा ?"

"आं, वैद्यमहोदय !"

"तदा तदा शिरोवेदना बाधते वाः ?"

"सत्यं वैधवर्य !"

"पृष्ठवेदना ?"

"साऽपि पौनः पुन्येन बाधते श्रीमन् ?"

"उदरे तापः अपि भवति खलु ?"

"आम् ।"

"शिरोभ्रमणं कदाचित् भवति ?"

"भवति कदाचित् ।"

"ममापि एवम् एव भवति । न जाने, कः रोगः एषः इति" इति आश्चर्येण उक्तवान् वैद्यः ।

अभिलाषः

प्रीति कुमारी
बी.ए. तृतीय वर्ष

दयामय ! देव! दीनेषु दयादृष्टि सदा देया।
प्रतिज्ञा दीनरक्षाया दयालो! जातु नो हेया।।
मनुष्या मावा भूत्वा इदानी दानवा जाताः।
तदेषा मूढ़ता देशाद् द्रुतं दूरे त्वया नेया।।
त्वदुपदेशामृतं त्यक्त्वा विपन्नो हन्तं लोकोऽयम् ।
तदुद्धाराय चैतेषां प्रभो! गीता पुनर्गेया।।
किमधिकं ब्रूमहे भगवन् ! विनीतप्रार्थनैकेयम् ।
यदेते बालकाः स्वीयाः प्रभो नो विस्मृतिं नेयाः।।

मित्रम् लघु अति वरम्

लघु कथा

शिवानी त्रिपाठी
बी.ए. तृतीय वर्ष

एकं वनम् अस्ति। वने एकः सिंह निवसति। सिंहः गुहायां शयनं करोति। एकदा एकः मूषकः गुहां प्रविशति। सः सिंहस्य शरीरे इतस्ततः धावति।

सिंहः कुपितः भवति। सः मूषकं निगृहणाति। तदा मूषकः भीतः भवति। मूषकः सिंह प्रार्थयते भोः मृगराज! कृपया मां न खादतु । मम् विमोचनं करोतु। अग्रे अहं भवतः सहायतां करिष्यामि। इति।

सिंह हसति वदति च- "लघुमूषकः मम् सहायतां करिष्यामि ? पश्यामि। इदानीं भवतः विमोचनं करोमि" इति। सिंहः मूषकस्य विमोचनं करोति।

एकदा एकः व्याधः जालं प्रसारयति। सिंहः जाले पतति। तदा सः उच्चैः गर्जति। बहि; आगमनार्थं प्रयत्नं करोति। तस्य गर्जनं मूषकः शृणोति। सः सिंहस्य समीपम् आगच्छति। जालं दन्तैः कर्तयति सिंह बन्धमुक्तः भवति।

"मित्रं लघु अपि वरम् ।"

एहि हसाम्

वार्ता बान्धवाय आदौ *अंजलि कुशवाहा*
बी.ए. तृतीय वर्ष

पुरोहितस्य कस्यचित् गृहस्य पुरतः कश्चन् गर्दभः कदाचित् मृतः अभवत् । तदा पुरोहितः एतां वार्ता दूरवाणीद्वारा नगरसभाकार्यालयस्य अधिकारिणं निवेदितवान्

तत्रत्यः अधिकारी विनोदशीलः आसीत् । अतः सः हसन् पुरोहितम् उक्तवान् -"पुरोहितवर्य, मरणानन्तरसंस्काराः के इति भवान् एव जानाति। अतः तस्य उत्तरक्रियाम् अपि भवान् एव निर्वर्तयतु" इति।

पुरोहितः अपि वस्तुतः विनोदशीलः एव। अतः सः अधिकारिणाम् उक्तवान् - "भवता उक्त युक्तमेव। किन्तु आदौ मृतस्य बान्धवाः निवेदनीयाः किल्। अतः अहं भवते दूरवार्णीं कृतवान् । " इति

मनोरञ्जनाय हास्यं सुध्युपास्यम

मोहिनी मिश्रा
बी.ए. तृतीय वर्ष

एकः बाबू होतले गत्वा - वेतर-वेतर इति अवदत् ।

वेतरः - (आगत्य) बाबू महोदय!

बाबूः - तव होतले किं किमंस्ति ? शीघ्रम् आनय क्षुधा बाधतें

वेतरः- (केषांचित् वस्तूनां मूल्यं संयुक्त देयकपत्रं करोति) ग्रहणातु बाबू ११० रूप्यकाणां देवकपत्रम् अस्ति। रूप्यकाणि यच्छतु

बाबूः- अरे देयकपत्रम् तु भोजनस्य पश्चात् दीयते त्वं प्रागेव यच्छसि।

वेतरः- वार्ता एषा अस्ति यद् ह्यः एकः बाबू भुक्त्वा एक मृतः। तस्य देयं मयैव दत्तम् । अतः अहं प्रधममेव रूप्यकाणि गृहणामि।

चतुर शशः

पूजा मिश्रा
बी.ए. तृतीय वर्ष

एक वनम् अस्ति। तत्र एकः सिंह निवसति। सः अतीव क्रूरः। सः प्रतिदिनम् एकं मृगं खादति। एकदा सिंह अतीव क्षुधितः भवति। तदा तत्र एकः शशः आगच्छति। सः अतीव चतुरः। सः सिंहं पश्यति भीतः च भवति। सिंहः शशस्य समीपम् आगच्छति। तं खादितुं तत्परः भवति। तदा शशः रोदनं करोति।

सिंह :- शशं पृच्छति अये! भवान् कमिर्थं रोदनं करोति ?

शश :- वदति- महाराज! वने एक अन्यः सिंह अस्ति। सः मम् पुत्रान् खादितवान् । अतः अहम् रोदनं करोमि।

सिंह :-कुत्र अस्ति सः अन्यः सिंहः ?

शश :- समीपे एव एकः कूपः अस्ति। सः तत्र निवासं करोति।

सिंह :-"अहं तत्र गत्वा पश्यामि। तं सिंहं मारयामि।"

शश :- महराज! आगच्छतु । अहं तं दर्शयामि।

शशः सिंह कूपस्य समीपं नयति। कूपजलं दर्शयति सिंहः तत्र स्वप्रतिबिम्बं पश्यति। सः कोपेन गर्जनं करोति। कूपात् प्रतिध्वनिः भवति। तम् अन्य सिंहः इति सः चिन्तयति। कुपित सिंह कूपे कूर्दनं करोति। सः तत्र एव मृतः भवति।

एवं शशः स्वचातुर्येण आत्मरक्षणं करोति।

आम्ल द्राक्षाफलम्

आरती साहू
बी.ए. द्वितीय वर्ष

पिपासया बुभुक्षया श्रान्तः खिन्न एकः लोमशः वनः गच्छति। स इतस्ततः पश्यति परन्तु किमपि न लभते। उपरि उपरि लतासु सः द्राक्षाफलम् पश्यति। अनुक्षणं तन्मुखे रसः जायते। सः अनेकवारम् उत्पतति परन्तु न लभते द्राक्षाफलम् । ततः आम्लं द्राक्षाफलम् इत्येवं कथयति पलायते।

Status of Indian Women : Yesterday, Today and Tomorrow

Krishna Banerjee
Asso. Prof. Sociology

"It is impossible to think about the welfare of the world unless the condition of women is improved. It is impossible for a bird to fly on only one wing."

It is customary everywhere to classify the human community on the basis of sex into groups of 'men' and 'women', The biological fact of sex has created much difference between them. No where in the history of humanity men and women were treated alike and assigned statuses alike. Women have not been able to lead a life exactly on par with men in spite of their urge for equality. This is also true of India and Indian women.

The type of status assigned to women in any society reflect the nature of its cultural richness and the level of civilizational standards. Hence Swami Vivekanand had said, "that country and that nation which did not respect women have never become great nor will ever in future." The degree of freedom and respectability given to a women to move about and take part in public activities gives a good idea of the nature of the society to which they belong.

The position of women in the Indian society has been a very complicated one. The history of 'status of women in India' can be studied in different stages. Women during the early vedic period enjoyed equal status with men in all aspects of life. Works by ancient Indian grammarians suggest that women were educated in the early vedic period. "Women studied the vedic literature like men and some o them, like Lopamudra, Ghosa, Sikata, Nivavari, figure among the authors of the veidca Hymns." Some of the other women scholars of the day included vishwavara, Apala, Indrani etc.

In fact, the education of women was looked upon as so important that the **Atharva Veda** asserted that "the success of women in her married life depends upon her proper training during the Brahmacharya." **Rigvedic** verses suggest that women married at the mature age and probably free to select their own husbands in a practice called **Swayamvar** or live in relationship called **Gandharva marriage.** Scriptures such as Rigveda and upanishads mention several women sages and seers, notably Gargi and Maitreyi.

On the other hand– the **Rigveda** also mentions women lack discipline and intellect and have the heats of hyena's. For the **Shatapatha Brahmana,** women, shudra, dogs and crows are all untruth.

In approximately 500 B.C.E., the status of women began to decline. By and large women in India faced confinement and restrictions. The practice of child marriages is believed to have started around the sixth century. Several **Dharmashastras** mention the restricted role of women, such as the **Manu Smiriti** "Her father guards her in childhood; her husband guards her in heryouth; and her sons guards her in her old age."

Thus there are **two opinions** regarding the status of women in ancient India some scholars say that ancient Indian women were almost the equals of men

while some others agree that they were held not only in disrespect but in positive hatred.

Medieval India was not women's age, it is supposed to be the 'dark age' for them. This period proved to be highly disappointing for Indian women, for their status further deteriorated during this period with the coming of Muslim rule, medieval India witnessed enhanced dependency of women on men. The Islamic custom of 'Purdah' forced the public world to be separated from private world, with women confined to the latter.

Through this privatization, Indian women were forced to trade their mobility for safety. Repeated invasions by the Muslims farther pushed the Indian women towards inhuman "traditions" such as 'Bal Vivah', 'Dahej Pratha', 'Pradah Pratha' and 'Sati Pratha.' Thus during the medieval period. Indian women lost their earlier status and were on the lowest ebb.

In spite of these conditions, women often became prominent in the field of politics, literature, education and religion. Women like Razia Begum, Chand Bibi, Tara Bai, Ahaliy Bai Holker, Nur Jahan, Mehr-un-nisa, Jahanara Begum, Roshan Ara, Zeb-un-nisa, Jija Bai enjoyed respectable positions in the country. However, these women belonged to the royal and aristocratic families of society and hence were free from conditions of social disabilities and subjection in which the mass of women lived.

During the 14th and 15th centuries the social situations had undergone some change. There was a general revival of Indian Society which led to considerable improvement in the status of women. Ramanuja Charya organised the first Bhakti movement during this period which introduced new trends in the social and religious life of women in India. The great saints like Chaitanya, Nanak, Kabir, Meeram Ramdas, Tulsi paeached equality of sexes and pleaded for equal opportunities for women. As a result of this Indian women secured certain religious and social freedom. The pardah system was abolished women could go out of their families to attend pravachans, harikathas, Kirtans, bhajans. But this movement did not bring any change in economic structure of the society and hence women continued to hold low status in the society.

In the **modern period,** the status of Indian women can be divided into two distinct periods the British rule, i.e. **Pre-Independent India** and the **Post-Independent India.**

The British rule in 18th century brought in some degree of political orderliness, but the social structure, customs and practices remained unchanged. It was mainly during the 19th century that the reform movement undertaken by enlightened thinkers and leaders of Indian society like Raja Rammohan Roy who understood the importance of women's participation that the status of Indian women started changing for the better.

Mrs. Annie Besent, Dr. Sarojini Naidu, Kamladevi Chattopadhya, Mrs. Neelie Sengupta, Durgabai Deshmukh and many others gave a change and betterment. Indian women actively participated in the freedom movement to highlight the importance of the elevation of the status of the Indian women which also had different thrust.

The founding of the Indian National Congress in 1885 and Mahatma Gandhi's non-voilent movement not only led to political emancipation but also was a step in the direction for social reconstruction. Women enthusiasm in participation in the armed revolution helped Netaji Subhas Chandra Bose to set up the Rani of Jhansi Regiment of the Indian National Army. Women's participation in the freedom movement was very extensive. Kasturba Gandhi, Madam Baikaji Cama, Sarla Devi, Mutu Lakshim Reddy, Sucheta Kripalani, Durga Bai Deshmukha, Capatin Lakshmi and Janaki Davar of INA, etc. are only a few to have out of the many. There after various reforms were enforced to remove women's age-old and tradition ridden handicaps which helped considerably in restoring, women from total degradation in the social structure.

In 1947 Indian was freedom from foreign rule. In 1947 a constitution was drafted which gave equal rights and status to all Indian citizens. Both the structural and cultural changes provided equality of opportunities to women in education, employment and political participation. With the help of these changes exploitation of women, to a great extent, was reduced. Several Commissions were appointed by the central and state governments to study the causes of low status of women.

There has been a lot of improvement in the status of women in India after the Independence. Gradually women started enjoying equality with men in society, women have all the rights and privileges in every area as possessed by the men. A quick effective change in the status of women was contemplated through social legislations. The constitution of India guarantees certain fundamental rights and freedom such as protection of life and personal liberty. Indian women are the beneficiaries of these rights in the same manner as the Indian men.

In the post-Independent India we had series of laws passed for the upliftment of women such as. 'The Hindu Marriage Act 1955', 'The Hindu adoption and Maintenance Act 1956', 'The Dowry Prohibition Act 1961', 'The Hindu Women Right of Property Act 1973', 'Equal Remuneration Act 1976' etc.

Education was also regarded as an important factor in raising the status of women in society. Therefore active steps were taken to promote women's education. This led to opening of different schools and colleges, especially for women.

There has been a remarkable increase in the number of women getting out of the four walls of the house hold and becoming workers in both cities and villages, according to the 1991 census report. People are now in favour of women employment. This has enhanced the status of women in the family as well as the society.

In the political, women now enjoy equal rights with men. When the elections were held in 1946 for constitutional assembly, many prominent Indian women like Sarojini Naidu, Hansa Mehta, Renuka Rai & others were elected. After independence more women have joined different political parties. Some of them have captured seats of power as Chief Ministers, Cabinet Ministers, Deputy Ministers and Ministers of states. Now all the political parties have a woman's

cell or wing.

Some of the great Indian women leaders, social reformers, social workers, administrators, and literary personalities who have changed the women status a lot are Indira Gandhi, Vijay Lakshmi Pandit, Annie Besant, Mahadevi Verma, Sucheta Kripalani, P.T. Usha, Amrita Pritam, Padmaja Naidu, Kalpana Chwla, Mother Teresa, Subhadra Kumari Chauhan etc. In modern India, women have held high offices including that of the President, Prime Minister, Speaker of the Lok Sabha, Leader of Opposition, Union Ministers, Chief Ministers and Governors.

This does not, however, mean Indian women are completely free from problems. They do have their problems. Though the conditions in the country are fastly changing, yet women are still treated, in some respect, in the same old ways, yet the perception that women are second to men has not been erased. Mushroom growth of crimes against women have been seen (Including violent victimization through rape, acid throwing, dowry killings, marital rape and the forced prostitution of young girls.) and also women's own perception is responsible for changing but not respectful status of women in India. Still lots of new polities and awareness is needed.

What will happen in the status of Indian women in the near future ?

On the basis of the existing state of affairs some observations and broad generalisation could be made regarding this issue–

- New Problems in place of old ones.
- Continued Dominance of Male Supremacy.
- Regional, caste and class differences.
- Relaxed control over women.
- Women exploiting women.
- Lack of powerful women organisation and Movement.

In all discussion and debate relating to the status of Indian women, statuses and problems of lower class and lower caste, women are not given due importance. Majority of illiterate and ignorant women are not capable of changing their life-styles, beliefs and values overnight. They take time to change them selves.

Conclusion –

Women in India are not yet equal to men. There is no legal or constitutional barrier to equality. There is only the social barrier. Women in India are more after a "respectable" and "meaningful" social status which is free from all sorts of exploitation. There is no urge in them to out smart men. They want their interests to be protected and problems solved. As long as the problems of women remain as "women's problems" and not as "societal problems", so long, attempts at the solution of these problems do not get the required speed.

Indian women are not very much after equality with men. But they expect a change in the attitude of men towards them and their status. On the contrary, they expect greater freedom, better education, self dependence, decent jobs, a proper treatment of women by men folk and socio-economic environment free from all types of exploitation.

Our attempt to provide such type of socio-economic environment to women will definitely influence their social status and the socio-economic conditions in the days to come.

Learn to labour

Mansi Chopra
B.Ed. Second Semester

When life seems jumbled,
be like a joker,
When it goes uphill,
learn the rules of gear,
And when it seem to be hard,
learn to labour & to wait
When mood goes off,
be as calm as sandal,
When tears fall apart,
Smell as charms of camphor,
And when it seem to be lost all,
learn to labour & to wait.
When nerves do cramp,
be deep as ocean
When muscles swell,
Walk like a leader,
And when emotions seem to be dead,
learn to labour & to wait.

Life Is Beautiful

Shreya Srivastava
M.A., Second Semester

"Life fails to be perfect, but never fails to be beautiful." Life is full of moment of joy, pleasure, success, and comfort but marked by misery, problems and failure, life is when you are primed for every affair familiar with the fact that you will patently get through it. Living a perfect life means being comfortable with every soul you meet. Life is when you don't get faced with any mood swings and every juncture brings you new joys. We have lots of problems which we have to face everyday. But all we can do is to stay clam because these problems makes us strong. Life is a journey, not a destination. Life is not like a bed of roses, we have to feel pain of loss, rejection but there is peace after that. You are alive if you have chosen living yourself instead of wooing others. Everyone's life is beautiful in their own way. This life will not come again, so avoid fights. and speak lovely to every person.

Aura

Nidhi Jaiswal

A person's energy is called his or her Aura. We all have an energy sphere around us which is composed of our physical energy, mind energy and energy of our chakras. With science and technology, it is possible today to photograph our energy, view it and analyze it. Through this we can understand our energy patterns, energy profile of our chakras, energy blocks in specific parts of our body and future energy patterns visible in our Aura. For many people, Aura can give a detailed understanding about their problems as the roat cause of their problems lies in the energy patterns of their chakras.

Benefits of Struggling

Nahida Nafees
B.Ed., Second Semester

A man found a cocoon of a butterfly. One day a small opening appeared, he sat and watched the butterfly for several hours as it struggled to force its body through that little hole.

Then it seemed to stop making any progress. It appeared as if it had got as far as it could and it could go no further. Then the man decided to help the butterfly, so he took a pair of scissors and snipped off the remaining bit of the cocoon. The butterfly then emerged easily but it had a swollen body and small, shriveled wings.

The man continued to watch the butterfly because he expected that, at any moment the wings would enlarge and expand to be able to support the body. It never happened. In fact, the butterfly spent the rest of its life crawling around with a swollen body and shriveled wings.

It was never able to fly.

What the man in his kindness and haste did not understand was that the restricting cocoon and the struggle required for the butterfly to get through opening were God's way of forcing fluids from the body of the butterfly into wings so that is would be ready for flight once its achieved its freedom from the cocoon.

Sometime struggles are exactly what we need in our life. If God allowed us to go through our life without any obstacles, it would cripple us. We would not be as strong as what we could have been. And we could never fly.

Try Try Again

Komal Keshari
M.A., Second Semester

This is a lesson, you should need,
If at first you don't succeed,
Try, try again.
Then your courage should appear,
For if you will persevere,
You will conquer, never fear
Try, try again.
Once or twice, though you should fail,
If you would at last prevail,
Try, try again.
If you find your task is hard,
Time will bring your reward,
Try, try again.
All that other folks can do,
Why, with patience, should not you ?
Only keep this rule in view :
Try, try again.

The Important Role of College life

Shivangi Srivastava
M.A., Fourth Semester

Our life is divided in many parts in which College life plays an important role in our whole life because this period works as a root of plant. If the root of plant is strong, then the plant will also be strong. Many students who waste their lime in fun, they always repent later, so we should always manage our tire in good works because time management is important unit for the success and I think we should always be the best in any direction of our life so–"Life is a game, let's make a high score."

Water Audit

Ranjana Nath
B.Ed., Second Semester

Water is life, Yet we do not give water the importance it deserves because it was perceived to be plentiful and inexpensive. And there were few incentives for conservation of water. Now, the whole scenario has been changed. Water scarcity is a recognised global problem with demand for water projected to exceed supply by 40% by 2030. By the same year half the worlds population will be living in areas of high water stress. India will soon be a water-stressed country and we all need to work towards our water security. Waters audit gives a detailed profile of the distribution system & water users, thereby facilitating easier and effective management of the resources with improved reliability. Water audit is an effective management too for minimizing losses, optimizing various uses and thus enabling considerable conservation of water by reducing, reusing & recycling of water in various sectors such as domestic, power and industrial as well as irrigation sector.

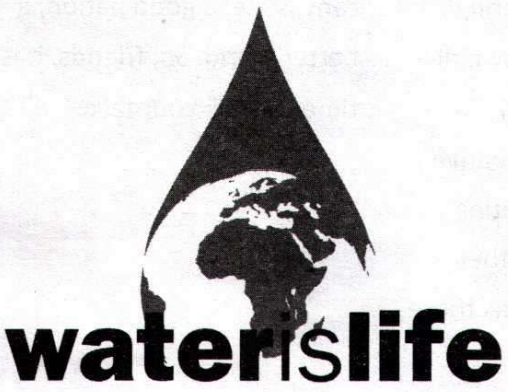

Bread and Butter

Mansi Chopra
B.Ed. Second Semester

I see two small sapling and I see a lady watering it,

I see it everyday and I admire the lady too...

There is a flow of love between them and a constant level of care.

Lady waters the sap and receives the pleasant weather there.

One sap grew up and was able to shade the lady.

another was crushed by the load of heavy....

One stood for the society and other died for it,

It was recognized that lady grew up bread and butter trees,

Bread grew up but butter died badly.....

Society admires the use of bread in its different forms,

But the butter was lost as the memories advanced,

Heart admires the lady who watered both the saps,

But cruel society just focused on their maps.

They thought of making butter at home and bread in big factories,

They took the multi-purpose bread with homemade butter and ghee,

They forgot the ratio of their exsistance in the ray,

That Bread and Butter both makes a whole meal a day.

Can We Really Change It ?

Kashifa Itrat
B.Ed., Fourth Semester

We talk of topics related to the habits of teenagers– fashion, late night outings, mobile phones, social networking sites, cheating, laxity in studies etc. Some of our daring friends criticize the abject condition of our country such as poverty, unemployment corruption, politics, illiteracy and other such problems. We profess that it is our responsibility to change the system as we are the 'future nation builders.' Some of us volunteer to join the army, politics, police and other important professions and work with determination and commitment to clause the present system and lead the country on the path of progress.

But do we actually realise the truth and urgency of the matter ? Do we actually reflect on our responsibilities to make this world a better place ? Do not actually cooperate with our leaders in our class, school and government at large ?

The answer of the majority of teenagers would be 'no'. I want to remind my young friends that this task of bringing about the changes in the present day system is no cake walk. It will be us face to face with harsh realities which require us to raise our voice against the policies and practices in not only administrative setup but in all areas including schools and colleges.

Let me start with a real life example, at our school, when a well-intentioned group of laborious students launch a programme on the campus, say 'Cleanliness Drive' or 'Discipline Check', what do they receive in return ?

'Arrogant', 'Domineering', 'mean' are epithets thrown at them Seniors and school captains have to face negative comments, harsh backbiting and raised eyebrows of their own classmates as well as those of juniors. Instead of reacting in such a foolish manner we must learn to appreciate he efforts of the Principal, teachers and captains. It your finger nails are long, admit it. If you are checked for not wearing your identity card or your helmet while driving, would not it be much simpler to apologize and correct your mistakes the next time ? This is how we can change the indiscipline in the school.

Little drops of water
little Grains of sand
Make the mighty Ocean
And the pleasant hand !

If each one of us is conscious of our duties, we can surely look forward to a better future–for a small step in college life leads to the broader canvas, i.e. a good nation, a better world. So, friends, it is time to walk your talk.

Pen

Smriti Kushwaha
M.Sc., Fourth Semester

Pen is more mighty than sword. It brought thought, imagination experiment, theories, values and beliefs of old times to us Pen is one reason behind all development and kept human beings to concentrate, think and work on long lasting projects to turn it into invention.

Pen writes happiness and sorrow, birth and death, win and defeat, truth and falsehood. Pen has no substitute like fingers, Key board and mouse could not defeat it. It challenged them by making itself digital. It is more conventional in hand than any other writing tools. Story, poem, biography, discoveries, song, experiment, thesis, research paper etc. are all the creativity of a pen. Human relationship, countries diplomacy, land registration are still endorse with pen. Pen is so kind to human beings that it break down itself after writing deaths sentence. It plays various roles in different hands. It saves lives when gripped in the hand of a doctors and takes lives when gripped in the hand of a judge. Written communications are the most authentic and reliable communication. Pen signature are such an important document for security that Banks scan it and preserve it with utmost care. While making payment these signature are watched every time. It should not be expressed but the fact is that suicide notes are the most acceptable legal document to save family in this type of legal trouble. It is the pen that stacked up ocean of books in the library.

Pet rache Poenary a Romanian Physicist studied in France invented the first fountain pen in 1827. But it is 'Lewis Waterman' who invented the first practical pen in 1884. The ball point pen was discovered by 'Laszlo Biro', a Hungarian newspaper editor in 1838.

There are various types of pen for example- reed pen, Dip Pen, fountain pen, ink pen, nib pen, Ball point pen. Marker pen, bid pen, roller pen, ball pen etc. The pen has so big market that it is compelling business man daily for its creativity and innovation to enhance their market shares. One upon a time in India, we only used to buy one fountain pen then we were using it by cleaning and repairing it again and again. I think after 1885 the whole concept of using pen got changed and we started with use and throw concept.

Parker, Mont Blanc, Cello, Reynolds, Camlin, Aurora, Paper Mate, Heor, Sheaffer and Cross are the top 10 pen brands of the world. Cello is the world's best and India's largest pen manufacturer with about Rs. 1000 Crore turnover. It is cheapest and best. The group had done lot of research for ball pen and has delivered various categories of pen.

It can be said that pen is indispensable tool. I feel very bad if I loses my pen. Others do not hesit ate to steal pen. These facts tell us that being cheap too pen is the most essential one.

The Hidden Chemistry in Everyday Life

Zainab Fatima Siddiqui
M.Sc., Fourth Semester

We all are made of chemicals and everything around us is made of chemicals. Every thing we hear, see, smell, taste and touch involves chemistry and chemicals. Hearing, Seeing, tasting and touching all involves intricate series of chemical reactions and interactions in our body chemistry is present in every aspect of life and few examples are–

1. Sky is Blue– An object is coloured because of the light that it reflects. The white light from the sun contains all the wavelengths, but when it impacts on an object some of its wavelength are absorbed and some reflected. The colour of the Sky can be explained considering phenomena named **Rayleigh Scattering** that consists on the scattering of light by particles much smaller than its wavelength. This effect is specially strong when light passes through gases.

2. Ice Floats on Water– Ice is less dense. The heavier water displaces the lighter ice, so ice floats on top.

3. How Sun Screen Works ? Sun screen combines organic and inorganic chemicals to filter the light from the sun so that less of it reaches the deeper layers of your skin. The reflective particles in sun screen usually consists of zinc oxide or titanium oxide.

4. Meals are Cooked Faster in a Pressure Cooker ?– A pressure cooker has a more elaborated lid that seals the pot completely. When we heat water, it boils and the steam cannot escape, so it remains inside and starts to build up pressure. Under pressure, cooking temperature rises much higher than under normal conditions, hence the food is cooked faster.

5. Coffee Keeps us Awake– Coffee keeps us awake because of the presence of a chemical called Adenosine, in your brain. It minds to certain receptors and slows the nerve cell activity when sleep in signaled.

6. Vegetables are Coloured– Many vegetables and fruits are strongly coloured because they contain a special kind of chemical compound named **Carotenoids.** These compounds have an area called **Choromophore** which absorbs and gives off particular wavelengths of light, generating the colour that we then perceive.

7. How Soap Cleans ?– Soap is formed by molecules with a 'head' which likes water **(hydrophilic)** and a long chain that hates it **(hydrophobic).** Then when soap is added to the water, the long hydrophobic chains of its molecule join the oil particles, while the hydrophilic heads go into the water.

An emulsion of oil in water is then formed this means that the oil particles become suspended in the water and are liberated from the cloth with the rising, the emulsion is taken away.

8. We Cry while Cutting Onions– Onions make you cry due to the presence of Sulfur in the cells which break after the onions are cut. This sulfur gets mixed with moisture and thus irritates our eyes.

9. The Chemistry of Love– Chemistry is at the bottom of every step in a relationship when we fall in love, our brain suffers some changes and also certain chemical compounds are released. Love is driven by these hormones–**Oxytocin, vasopressin, endorphin.**

Uniform Civil Code is essential for the Unity of Nation

Alveena Hashmi
M.A., Fourth Semester

Uniform Civil Code means to replace the personal laws based on the scriptures and customs of each major religious community in India with a common set of rules governing every citizen.

Uniform Civil Code is laid down as a Directive Principle of State Policy under Article 44 of the Indian Constitution.

"The State shall endeavor to secure for the citizen a Uniform Civil Code throughout the territory of India.

Points in favour of Uniform Civil Code–

1. It promotes Real Secularism– In present time in India, we are following selective secularism which means in some areas we are secular and in others we are not. A Uniform Civil Code means that all citizens of India have to follow the same laws whether they are Hindus, Muslims, Christians or Sikhs. A Uniform Civil Code doesn't mean it will limit the freedom of people to follow their religion but it means that every person should be treated equally.

2. Improvement in the Condition of Women– Indian society is extremely patriarchal. Women were subjugated by male-dominated society. Women are not getting equal rights as compared to men. Most of the personal laws have an inherent bias against the rights of women such as **Unilateral Oral Talaq in Muslim law, limited property rights of women in Christian law, or restitution of conjugal reights issue under Hindu Personal law.** So, a Uniform Civil Code should be established to improve the condition of women.

3. Helpful in Reducing Vote Bank Politics– Another important advantage of implementing the Uniform Civil Code is that it will bring an end to dirty vote bank politics which is relied upon by a majority of the political class to meet their ends. If all religions are covered under the same laws the politicians will have nothing to offer to certain minorities in exchange of their vote.

4. It promotes Equality and Justice– Personal law system violates the principle of equality of the Constitution because by having different personal laws for different religions we are going against the secularism and equality. But, uniform Civil Code can promote equality and justice by incorporating similar laws for all citizens.

5. Every Modern Nation Has it– A uniform Civil Code is the sign of modern progressive nation. It is a sign that the nation has moved away from caste and religious politics. India is degraded to a point where we are neither modern nor traditional. A Uniform Civil Code will help the society move forward and take India towards its goal of becoming a developed nation.

6. Helpful in National Integration– A Uniform Civil Code will be helpful in bringing every Indian despite his caste, religion or tribe under one national civil code of conduct. Thus, I would like to conclude myself by saying that Uniform Civil Code would be helpful in promoting equality justice and national integration and the citizens of India have to follow the same law.

Coffee with T.V.

Farheen Nasir
M.A., Second Semester

It was Saturday night
I was watching my T.V.,
Suddenly an unusual thing
Just shocked me.
A T.V. with hands and legs
Was in front of me
And the strange thing was that
It was watching me
He gave a warm welcome
And then asked me
Would you like to hove some coffee.
With me, me the T.V.
I was speechless and said nothing
Still he served me a cup of coffee.
The room was full of screens
Displaying each and every channel I see,
And the board was hanging
Saying 'Coffee with T.V.'

Facing the camera, he said. The girl hitting social media, asked he,

Priya Tamil Actress answered me.
The 2017 Film fare best movie
Dangal answered me.
Indians who won medals in olympics ?
I don't know, answered me.
And some more there, related to discovery

But my answers were the same. What I said previously again and again with every question. I got ashamed of me.

And them my T.V. told something, something very important to me.

My viewer I love you,
And I know you love me.
But you'll have to understand
the proper usage to me.
I don't say that
Facing the camera, he said
he was starting the game with me.
stop whatever you see.

But watch something, something useful to you and everybody.

Entertainment is good
but the time is yours specially
And I care for you
because you are special, And that's why
I want yo to take full advantage of me.
Hearing all this I wanted to, hug my T.V.
but the next moment
My alarm clock rang
And I realized what it was
Oh, dream, a dream, a dream, a drem.

Amazing Truth

Pranshi Rastogi
B.Ed. Second Semester

Letter 'a', 'b', 'c', 'd' do not appear anywhere in the spellings of 1 to 99.

(Letter 'd' comes for the first time in Hundred).

Letters 'a', 'b' & 'c' do not appear anywhere in the spellings of 1 to 999.

(Letter 'a' comes for the first time in Thousand).

Letters 'b' & 'c' do not appear anywhere in the spelling of 1 to 999,999,999.

(Letter 'b' comes for the first time in Billion).

and

Letter 'c' does not appear anywhere in the spelling of entire English Counting.

Why only Waman

Kashifa
M.A., Second Semester

What the hell is reputation ?
Why the people always talk about it ?
Why the other people always remind us ?
Who are those people, where are they ?
Why our society thinks about it too much ?
Why woman can't live her life freely ?
Why the rigid rules always stop her ?
Why the woman can't go outside alone ?
Why the people always treat her as a fresh fruit ?
Why woman can't express her thoughts ?
Why the illiterate people think to kill her and abort her ?
Why man can't feel the emotions of woman ?
Why without man woman can't be successful?
Why she has to survive for love ?
Why the people don't let her go and live her life openly ?
I am a girl and, I hate to belong to such society,
Woman is born strong, she can handle every problem.
Woman can face all awkward situations,
She can survive for love,
even she can share her love.
She can build up her future
by her own efforts,
Woman can be called the multitasking,
Superior and powerful in every field,
As a mother, as a student,
as a friend, as a wife,
as a teacher,
as a Doctor, As an Actress,
as a daughter,
Yes I am girl and
I am proud to be a girl.....
I don't care for the society..,
I don't think about those other people...,
I can change the world....,
"Woman is like tree,
When you give her water,
She will give flowers and
fulfil your life with fragrance"

Life Is Not a Bed Or Roses

Shifa Rizwan

Life is worth living to the fullest rather brooding over smaller mishaps, no matter how many hindrances obstruct our path we need to proceed that is the ecstasy of our lives. We might feel disappointed at times but one must know that.

'Life is not a bed of roses.' So anything and everything will not be at our disposal. We must be determined to strive towards perfection without giving a second thought.

Success will increase motivation, failures will act as catalysts and experience will give lessons for life. and that's how we gonna be a 'hero in the stride.'

Life is really simple, but we insist on making it complicated.–Confucius.

"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी"

द्वारा वार्षिक देय स्थाई छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2017–18

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
1.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1975	1000/-
2.	श्री भोला नाथ कपूर श्री राजीव खन्ना 645/560 ए, मालवीय नगर, इला0	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती रमा कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1977	100/-
3.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सदनलाल एवं श्रीमती भगवान देई खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1979	400/-
4.	श्री कृष्ण कपूर 13, म्योर रोड, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एन0 सी0 कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1979	500/-
5.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74,रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री मट्टूमल एवं श्रीमती ज्वाला देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1980	400/-
6.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री शिवचरण दास एवं श्रीमती अचम्भी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1981	400/-
7.	श्री राम किशोर खन्ना श्री अरूण किशोर खन्ना 71, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम किशोर खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1983	100/-
8.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/73, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती छगन देवी एवं कु0 मंजू खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1985	400/-
9.	श्री राजा राम मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इला0	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी माधोराम मेहरा एवं श्रीमती बिब्बो बीबी स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1987	500/-
10.	श्री संजय कपूर 619, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती सावित्री कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1988	400/-
11.	श्री दामोदर दास खन्ना श्री नीरज खन्ना ब्लाक आर. ई., 7 फ्लोर, पूर्वा रिवीरिया, मुन्ने कोलाला विलेज, व्हाइट फील्ड, मराठा हल्ली रोड, बैंगलोर–37	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चुन्नी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	2000/-	1988	200/-
12.	श्री वृज किशोर टण्डन श्रीमती राज टण्डन मे0 काशी आर्नामेन्ट हाउस 393, रानी मण्डी, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कामता प्रसाद टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	1991	1500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
13	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्ड्रस्ट्रीज (प्रा0) लिमिटेड गाँव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला, खंडासा रोड, गुड़गाँव – 122 001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1991	500/-
14.	श्री पन्ना लाल कपूर श्री अंकित कपूर सैमसन ड्रेस डीपो 27 / 12 महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	कु0 मन्जू कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1992	500/-
15.	श्री संजय मेहरोत्रा डी–501 विशप्रेंज पाम्स एक्सक्यूजिव लोखण्डवाल अकरौली रोड काम्पलेक्स काँदीवली, ईस्ट, मुम्बई 400101 मो0 09324805186	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलराम किशोर मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1994	500/-
16.	श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1994	500/-
17.	श्री ए. सी. सहगल श्री मुकुल सहगल EG-3/2 गर्डन इस्टेट महरौली गुड़गाँव रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती शिव प्यारी सहगल स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	1995	1000/-
18.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1998 2016	500/- 500/- 1000/-
19.	डॉ0 सुशीला टण्डन डॉ0 राम कृष्ण टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्क्रीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 55% अंक से अधिक अंक प्राप्त करने वाली खत्री छात्रा को	श्री हर नारायण जी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
20.	श्री अशोक कुमार मेहरोत्रा C/O, हरीशचन्द्र खन्ना 536 मालवीय नगर, इलाहाबाद।	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री हीरा लाल एवं श्रीमती विजय कुमारी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	3000/- 10000/-	1996 2016	300/- 800/-
21.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
22.	डॉ0 इन्द्रा मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राज कुमार कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
23.	श्रीमती निर्मला टण्डन ब्लाक नं0 9, फलैट नं. 407 हेरिटेज सिटी अपार्टमेन्ट गुड़गाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
24.	डॉ0 एस0 एस0 खन्ना 1616/899–ए, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी एवं जरूरतमन्द बी0 एस–सी0 तृतीय वर्ष की छात्रा को	श्री सत्य नारायण कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
25.	डॉ0 भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन, एम0 एस0 39211, यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0, प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
26.	डॉ0 भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन एम0 एस0 39211 यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	8000/-	1998	800/-
27.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
28.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-	1998	1000/-
29.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाव युसुफ रोड इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती विट्टन देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1999	500/-
30.	श्री आनन्द प्रकाश वर्मा श्रीमती मधु वर्मा 1140, कल्याणी देवी इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलदेव कृष्ण वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2000	600/-
31.	श्री अखिल मेहरोत्रा साहित्य बिहार, किरन उत्सव मंडप कीरत पुर रोड, बिजनौर 246701	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
32.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सप्रू रोड इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष मे संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
33.	डॉ0 रागनी मदान द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सप्रू रोड इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष मे संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
34.	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्डस्ट्रीज प्रा0 लिमिटेड गॉव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला खंडासा रोड, गुड़गॉव –122001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	2002	1000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
35.	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा फ्लैट लं. 1302 एल एण्ड टी साउथ सिटी, अरकेरे माइक्रो लेआउट बैगंलूरु	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा छात्रवृत्ति	5000/-	2002	500/-
36.	श्री रईस मोहम्मद 10/10ए, ताश्कन्द मार्ग इलाहाबाद –211001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती महमूदा बेगम स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
37.	श्री श्याम नारायण कपूर श्री विवेक कपूर 16/11 A महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं को जिनकी न्यूनतम 50% अंक, पढ़ाई शुल्क का 50%।	अमर शहीद त्रिलोकी नाथ कपूर स्मृति छात्रवृति	60000/- (बी.ए. की छः छात्राओं को)	2003	6000/-
38.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डा. आशा सेठ A10 अग्निपथ, 7 सप्रू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भाग्यवती मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृति	6000/-	2003	600/-
39.	श्री अमर नाथ कक्कड़ 61/4A/5 जवाहर लाल नेहरू रोड टैगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम नाथ कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	14000/-	2004	700/-
40.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी.एड. में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	20000/-	2006	1400/-
41.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी0 कॉम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	48000/-	2006	3600/-
42.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	विज्ञान संकाय की छात्राओं को।	श्री श्रवण टण्डन स्मृति छात्रवृति	500000/-	2008	45000/-
43.	श्रीमती सरोजनी मेहरोत्रा 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम भूषण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2008	1000/-
44.	डॉ. शालिनी रस्तोगी 8–डी/1 तपोवन बिहार पोनप्पा रोड, इलाहाबाद	बी.एड. संकाय की जरूरतमन्द छात्रा को।	प्रो. दामोदर दास खन्ना स्मृति छात्रवृति	10000/-	2011	800/-
45.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	बी.एड संकाय की सर्वगुणोन्मुखी/उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्रवण टंडन स्मृति पुरस्कार	135000/-	2012	11000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
46.	श्रीमती शोभा भल्ला सी 159 सन सिटी, सेक्टर–54 गुडगाँव हरियाणा	ऑफिस मैनेजमेन्ट में प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को।	श्री वी. के. भल्ला स्मृति छात्रवृत्ति	125000/- 31000/-	2013 2013	4000/- 4000/- 4000/-
47.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री उदय पाल मिश्र स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
48.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भगवती शुक्ला स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
49.	श्री गोपाल चोपड़ा श्रीमती अंजली चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	2 विकलांग छात्राओं को।	श्रीमती शकुन्तला चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	50000/- 50000/-	2014 2014	5000/- 5000/-
50.	श्रीमती इन्द्रा चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं कों।	श्री राम लाल चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	100000/-	2014	10000/-
51.	श्रीमती उर्मिला संड 1116 कल्याणी देवी इलाहाबाद।	बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष में प्रतिभाशाली खत्री या सारस्वत छात्रा को।	श्री अतुल कुमार संड स्मृति छात्रवृत्ति	16000/-	2014	1200/-
52.	श्रीमती मीना टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्कीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष की खत्री छात्रा जिसने XII कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किये हो।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2015	800/-
53.	डॉ0 प्रमा कक्कड़ 61/4।/5 जवाहर लाल नेहरू रोड, टेगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0ए0 प्रथम वर्ष एवं बी0ए0 द्वितीय वर्ष के शिक्षा शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को	श्रीमती शांति देवी कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	20000/-	2016	800/- 800/-
54.	डॉ0 रीता सरीन 14, जवाहर लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद	बी0ए0 तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री विजय नरायण कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	55000/-	2016	3500/-
55.	डॉ0 इन्द्रा मेहरोत्रा 3, नवाब युसूफ मार्ग, इलाहाबाद	एम0एस0सी0 प्रथम वर्ष में विज्ञान संकाय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री गणेश प्रसाद सेठ स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	2016	1000/-
56.	डॉ0 सुधा मलहोत्रा इलाहाबाद	बी.एकृ में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	डॉ. संतोष मलहोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	51000/-	2016	3300/-

"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी"

द्वारा वार्षिक देय अन्य छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2016–17

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय विभाग

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
1.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती कश्मीरो देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
2.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती जयन्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
3.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती चुन्नी देवी कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
4.	श्रीमती मीरा खन्ना "मनोहर" 645/560– ए मालवीय नगर, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चन्दो खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1100/-
5.	श्रीमती मोनी खन्ना "मनोहर" 645/560, मालवीय नगर, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्री संजीव खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	600/-
6.	श्री अशोक कुमार सण्ड 1116ए/1337 ए, कल्याणी देवी, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	श्रीमती माधुरी सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
7.	श्री अशोक कुमार सण्ड 62/10 प्राईमरोज वाटिका सिटी सेक्टर 49, सोहाना रोड गुड़गॉव 122018	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	पं0 विश्व नाथ सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
8.	न्यायमूर्ति अरूण टण्डन 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती हीरो देवी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
9.	श्री वाई. एन. मेहरा श्री अतुल मेहरा 5 ताशकन्द मार्ग इलाहाबाद	बी0एस–सी0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री इन्द्र नरायण मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	5100/-
10.	डॉ0 लालिमा सिंह एस0एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0ए0 तृतीय वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	प्रो0 डी0 एस0 कुशवाहा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
11.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1,पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	देव गंगोत्री स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
12.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1,पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	मेजर वी0 पी0 स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
13.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 प्रथम/ द्वितीय वर्ष में गणित विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एम0 पी0 गांगुली स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
14.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष की संगीत गायन में 60% से अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री जी0 सी0 सान्याल स्मृति छात्रवृत्रि	500/-
15.	डा. अल्पना अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में दर्शन शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री प्रताप चन्द्र जैन स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
16.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	प्रो. राजेन्द्र कुमार वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
17.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	प्रो. रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
18.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
19.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद वाली छात्रा को।	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
20.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0ए0 प्रथम वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती शिव दुलारी त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
21.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0ए0 द्वितीय वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री राम कृष्ण त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–
22.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून–248001	बी.कॉम. प्रथम वर्ष की जरूरतमंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
23.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की जरूरतमंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
24.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए. प्रथम वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
25.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए. द्वितीय वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
26.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. प्रथम वर्ष में मेधावी खत्री छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
27.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष में एक मेधावी छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
28.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. प्रथम वर्ष में गणित विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
31.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलव्यू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एड. प्रथम वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
32	डा. शिव शंकर श्रीवास्तव एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में मध्य कालीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री राम विलास स्मृति छात्रवृत्ति	500/–

Joint Managing Committee

Saroj Lalji Mehrotra Science Faculty

Mr. S.K. Seth	Chairman
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	
Mr. Chetan Mehrotra	
Dr. (Mrs.) Asha Seth	
Mr. G.C. Mehrotra	
Mr. Vinayak Tandon	
Mr. Rajeev Khanna	
Mr. Dilip Mehrotra	
Dr. (Mrs.) Lalima Singh	

Permanent Invitees

Mr. Rajat Kapoor
Mrs. Gunjan Sharma
Dr. (Mrs.) Archana Jyoti

Our Mission

To raise the level of education of the girls belonging to the lower and middle section of society as well as minority class. Achievement and realization of their goals. To make the girl student independent and self reliant. To undertake future courses and training programme in order to make them economically independent.

Board of Directors - B.Ed

Dr. Asha Seth	Chairperson
Mr. Rajeev Khanna	Chairman of College Governing Body
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	Member
Mr. Dilip Mehrotra	Treasurer
Dr. R.K. Tandon	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Dr. Lalima Singh	Principal / Chairman Admission Committee
Dr. Rachna Anand Gaur	Member
Dr. Ritu Jaiswal	Member
Dr. Manju Mishra	Teacher Representative
Dr. Surendra Kumar	Teacher Representative

Our Vission

To help the girl student discover their innate potentials and promote them towards their personal and social benefits.

शिक्षक वर्ग

डॉ. लालिमा सिंह
प्राचार्या

स्थायी शिक्षक वर्ग

कला संकाय

डॉ. अल्पना अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– दर्शनशास्त्र
डॉ. रीता चौहान	एसोसिएट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
श्रीमती गुंजन शर्मा	एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
डॉ. नीरजा सचदेव	एसोसिएट प्रोफेसर– अंग्रेजी
डॉ. आशा उपाध्याय	एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. मीनू अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
डॉ. अर्चना त्रिपाठी	एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
डॉ. ज्योति कपूर	एसोसिएट प्रोफेसर– संस्कृत
डॉ. रचना आनन्द गौड़	एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. मंजरी शुक्ला	एसोसिएट प्रोफेसर– दर्शनशास्त्र
डॉ. संध्या अरोरा	एसोसिएट प्रोफेसर– संगीत वादन (सितार)
डॉ. रीतू जायसवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
कैप्टन डॉ. रेखा रानी	एसिस्टेंट प्रोफेसर– संगीत गायन
डॉ. संगीता गौतम	एसिस्टेंट प्रोफेसर– चित्रकला
डॉ. ताहिरा परवीन	एसिस्टेंट प्रोफेसर– उर्दू
डॉ. रुचि मालवीय	एसिस्टेंट प्रोफेसर– अंग्रेजी
डॉ. आरिफा बेगम	एसिस्टेंट प्रोफेसर– उर्दू
डॉ. आदित्य कुमार त्रिपाठी	एसिस्टेंट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. शशी पाण्डेय	एसिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र
सुश्री सदफ सिद्दीकी	एसिस्टेंट प्रोफेसर– अंग्रेजी
श्री सुगंध कुमार चौधरी	एसिस्टेंट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
सुश्री रिया मुखर्जी	एसिस्टेंट प्रोफेसर– अंग्रेजी
सुश्री प्रीति यादव	एसिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र
सुश्री सौम्या कृष्णा	एसिस्टेंट प्रोफेसर– संस्कृत
डॉ. हरीश कुमार सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
डॉ. नीता साहू	एसिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
डॉ. रश्मि सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
डॉ. विनीता मिश्रा	एसिस्टेंट प्रोफेसर– मध्यकालीन इतिहास
डॉ. शिवशंकर श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर– मध्यकालीन इतिहास
डॉ. निशी सेठ	एसिस्टेंट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
डॉ. श्रद्धा राय	एसिस्टेंट प्रोफेसर– दर्शन शास्त्र
श्री पार्थ डे	एसिस्टेंट प्रोफेसर– संगीत वादन (तबला)
डॉ. प्रियंका गुप्ता	एसिस्टेंट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास

विज्ञान संकाय

डॉ. अर्चना ज्योति	एसिस्टेंट प्रोफेसर– रसायन विज्ञान
डॉ. प्रीति सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर– वनस्पति विज्ञान
डॉ. आलोक मालवीय	एसिस्टेंट प्रोफेसर– वनस्पति विज्ञान
डॉ. ऋचा टण्डन	एसिस्टेंट प्रोफेसर– वनस्पति विज्ञान
डॉ. सुमिता सहगल	एसिस्टेंट प्रोफेसर– रसायन विज्ञान
डॉ. शुभ्रा मालवीय	एसिस्टेंट प्रोफेसर– जन्तु विज्ञान
डॉ. अनुराधा सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर– रसायन विज्ञान
डॉ. सिप्पी सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर– जन्तु विज्ञान

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

कला संकाय

श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर– कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा

विज्ञान संकाय

डॉ. प्रमिला गुप्ता	एसिस्टेंट प्रोफेसर–भौतिक विज्ञान
डॉ. शर्मिला वैश्य	एसिस्टेंट प्रोफेसर – गणित
डॉ. अचला श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर – वनस्पति विज्ञान
डॉ. मनोज अग्निहोत्री	एसिस्टेंट प्रोफेसर – गणित
डॉ. अर्चना यादव	एसिस्टेंट प्रोफेसर – जन्तु विज्ञान
श्री पृथ्वी राज सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर – भौतिक विज्ञान
डॉ0 मो0 अखलाकुर रहमान	एसिस्टेंट प्रोफेसर – बायोटेक्नोलाजी
डॉ. स्वास्तिका सिंह	अतिथि प्रवक्ता – रसायन विज्ञान
डॉ0 अमिताभ चन्द्र द्विवेदी	अतिथि प्रवक्ता – जन्तु विज्ञान
डॉ0 शिवम मिश्रा	अतिथि प्रवक्ता – जन्तु विज्ञान

वाणिज्य संकाय

डॉ. मीना चतुर्वेदी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शिखा अग्रवाल	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. तनुश्री रॉय	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. विकास सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शिव शंकर शुक्ला	एसिस्टेंट प्रोफेसर

बी.एड़ संकाय (स्ववित्तपोषित)

डॉ. विनोद कुमार सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. अरुणा त्रिपाठी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. मंजू मिश्रा	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. सुरेन्द्र कुमार	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. रंजना त्रिपाठी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शालिनी रस्तोगी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. ममता भटनागर	एसिस्टेंट प्रोफेसर
सुश्री मीनाक्षी श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ ज्योति बैजल	एसिस्टेंट प्रोफेसर
श्रीमती गीता गुप्ता	एसिस्टेंट प्रोफेसर
श्री राजेन्द्र मालवीय	एसिस्टेंट प्रोफेसर

अतिथि प्रवक्ता

डॉ. सीमा पाण्डेय	अतिथि प्रवक्ता–समाजशास्त्र
डॉ. कविता सिंह	अतिथि प्रवक्ता–शिक्षाशास्त्र
डॉ. जोया परवीन	अतिथि प्रवक्ता–शिक्षाशास्त्र
डॉ. शमेनाज बानो	अतिथि प्रवक्ता–अंग्रेजी
डॉ. शिखा गुप्ता	अतिथि प्रवक्ता–अंग्रेजी
डॉ. अलका तिवारी	अतिथि प्रवक्ता–प्राचीन इतिहास
श्रीमती प्रियंका शुक्ला	अतिथि प्रवक्ता–पेन्टिंग
श्री यशवंत कुमार	अतिथि प्रवक्ता–शिक्षाशास्त्र
सुश्री माधुरी निराला	अतिथि प्रवक्ता–पेन्टिंग
डॉ. देवेन्द्र सिंह	अतिथि प्रवक्ता–रसायन विज्ञान
डॉ. मनोज कुमार	अतिथि प्रवक्ता–राजनीति विज्ञान
डॉ. सुलभ श्रीवास्तव	अतिथि प्रवक्ता–भूगोल
डॉ. निधि श्रीवास्तव	अतिथि प्रवक्ता– संगीत वादन
डॉ. शबनम परवीन	अतिथि प्रवक्ता–वनस्पति विज्ञान
श्रीमती शालिनी मिश्रा	अतिथि प्रवक्ता–कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा

शिक्षणेतर कर्मचारी वर्ग

स्थायी

श्री उमेश चन्द्र शर्मा	कार्यालय अधीक्षक
श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता	सहायक लेखाकार
श्री विनय कुमार यादव	स्टेनो
श्री रवि कान्त सिंह	पुस्तकालय अध्यक्ष
श्री सन्त लाल	पुस्तकालय लिपिक
श्री शिवशंकर लाल	नैत्यिक लिपिक
श्री रमेश चन्द्र	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रशेखर जोशी	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रकान्त पाण्डेय	कार्यालय सहायक
श्रीमती प्रियंका सिंह	कार्यालय सहायक
श्री घनश्याम सिंह	बुक लिफ्टर
श्री राधा कृष्ण	परिचर
श्री राम मिलन सेन	परिचर
श्री दया राम	परिचर
श्री राम लाल यादव	परिचर
श्री सुशील कुमार शुक्ला	परिचर
श्री मुरारी लाल	प्रयोगशाला परिचर
श्री नीम बहादुर थापा	प्रयोगशाला परिचर
श्री बच्ची सिंह बिष्ट	प्रयोगशाला परिचर
श्री राजेश कुमार	बुक लिफ्टर
श्री मोती लाल	परिचर
श्री मुकेश कुमार	सफाई कर्मचारी
श्री अनोखे लाल	चौकीदार

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

विज्ञान संकाय

श्री गुरुदास भट्टाचार्या	लिपिक
श्री जितेन्द्र कुमार	प्रयोगशाला सहायक
श्री मृदुल कुमार यादव	प्रयोगशाला सहायक
श्री आलोक कुमार साहू	कार्यालय सहायक
श्री राहुल चटर्जी	प्रयोगशाला सहायक
राजेश टण्डन	डाटा इन्ट्री लिपिक
श्री विजय कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री सूर्यमणि यादव	प्रयोगशाला परिचर
श्री दिनेश कुमार गुप्ता	प्रयोगशाला परिचर
श्री विनोद कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री सन्तोष कुमार यादव	प्रयोगशाला परिचर
श्री चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी	प्रयोगशाला परिचर
श्री मोहित कनौजिया	प्रयोगशाला परिचर

कला संकाय

श्रीमती मिथिलेश कुमारी	पुस्तकालय सहायक
श्री फूल चन्द्र यादव	परिचर
श्री गोविन्द त्रिपाठी	पुस्तकालय परिचर
श्री विक्रम कुमार	सफाई कर्मचारी
श्री कृष्ण चन्द्र तिवारी	परिचर
श्री रामकेश पाल	माली
श्री संतोष कुमार विश्वकर्मा	ड्राइवर

वाणिज्य संकाय

सुश्री रूपाली सक्सेना	पुस्तकालय लिपिक
श्री अंकुर कपूर	लिपिक
श्रीमती सोनू मेहरोत्रा	पुस्तकालय सहायक
श्रीमती सन्तोष देवी	सफाई कर्मचारी
श्री बृजेश कुमार	परिचर
श्री वीरेन्द्र कुमार	परिचर

बी.एड. संकाय

श्री सतीश कुमार धूरिया	टेक्निकल सहायक
श्री उमेश चन्द्र कुशवाहा	अंशकालिक लेखाकार
श्री संजय मेहरोत्रा	कार्यालय सहायक/स्टोर कीपर
श्रीमती विनीता कपूर	पुस्तकालय सहायक
श्री धनन्जय कुमार शुक्ला	परिचर
श्री यशपाल	सफाई कर्मचारी
श्री कुलदीप कुमार	परिचर
श्री अनूप कुमार	चौकीदार
श्रीमती नीतू सिंह	परिचर

افلاس کی سرشت میں خونریزیاں بھی ہیں

(نظم خانہ بدوش)

بڑھ رہے ہیں دیکھ وہ مزدور در آتے ہوئے
سرکشی کی تند دم بدم چڑھتی ہوئی
ہر طرف یلغار کرتی ہر طرف برھتی ہوئی
بھوک کے مارے ہوئے انسان کی فریادوں کے ساتھ
فاقہ مستوں کے جلو میں خانہ بربادوں کے ساتھ

(انقلاب)

غرض کہ رومان لہجے کا یہ شاعر کے ذریعے ایک نئی دنیا ایک نئی فکر کی جستجو کرتا نظر آتا ہے جس میں دردمندی اور وطن دوستی کے ساتھ ساتھ بیداری کا جذبہ فکری بصیرتوں کے ساتھ بڑھتا جاتا ہے۔

سچ بات یہی ہے کہ تمام صورتیں مجاز کا انقلابی آہنگ ہی نہیں بلکہ انقلابی صورتوں کو ساتھ لی کر بڑھنے کی کوشش بھی ہیں۔ جو بار بار مجاز کے یہاں سر اٹھاتی نظر آتی ہیں۔ مجاز کو باقاعدہ انقلابی کارکن نہیں سمجھنا چاہے بلکہ اس کی فکر میں وانقلابیت تھی اس کو نظر میں رکھ کران کی شاعری کا محاسبہ کیا جانا چاہئے۔ تبھی ماجز کی شاعری میں انقلابی لہر تلاش کی جاسکتی ہے جو اسے اس فکر کا ایک طرح سے کارواں سلار بناتی ہے۔

☆☆☆☆☆

حواشی

۱۔ ناول: غم دل وحشتِ دل محمد حسن ص۲۲

۲۔ ناول: غم دل وحشتِ دل محمد حسن ص۱۲۰

۳۔ ناول: غم دل وحشتِ دل محمد حسن ص۱۲۳

مزدور ہیں ہم مزدور ہیں ہم
جس روز بغاوت کر دیں گے
دنیا میں قیامت کر دیں گے
خوابوں کو حقیقت کر دیں گے

یہاں پر مجاز نے مزدوروں کی زبان سے ملک کی آزادی کے لیے ایک نئے احساس کو بیدار کرنے کی کوشش کی ہے۔

غرض کہ ایک طرف تو آزادی کا جوش بڑھ رہا تھا۔ اور اس میں پوری طرح سے بغاوت کی کوشش بھی تھی۔ لیکن ا ایک بات جو مجاز کی شاعری میں دیکھنے کو ملتی ہے و مجاز نے اپنی شعریات میں رومان کا اشارہ کیا ہے وہ آ کر تک قائم رہتا ہے مجاز نے درد مندی میں بھی انسان دوستی عوام دوستی ڈھونڈھنے کی کوشش کی ہے۔

تبھی کہتے ہیں۔

آہ مشکل کہ تو پہچان لے
دیکھ میں کہتا ہوں اب بھی مان لے
یہ تیرا دشمن ہے اب بھی جان لے
یار بچکر چل کہ یہ غدار ہے
جب لڑائی کا بگل بج جائے گا
جب زمیں کیا آ سماں تھرائیگا

اس طرح مجاز نے آزادی کی تڑپ اور لگن کو اپنی شاعری کا موضوع بنا دیا ہے اور یہ تڑپ یہ جذبہ اور آزادی فکر کے پیچھے وہ جوش اور ولولہ اور وہ کیفیات پیدا کر دی جو عوام کے درمیان میں ایک چیلنج اور نئی فکر کے ساتھ سامنے آتی ہے۔

غرض کہ مجاز نے سرمایہ دار کے خلاف محکومیت کے خلاف عورتوں کی محکومیت وغیرہ کے خلاف احتجاج کے بلنگ آہنگ کو پیدا کرنے کی کوشش کی ہے:

اپنا پرچم کچھ اس انداز سے لہراتا ہے
رنگ اغیار کے چہروں سے اڑا جاتا ہے

مثال کے لیے حسب ذیل اشعار ملاحظہ ہوں۔

آخر زمانہ ان کو ستائیگا کب تلک
کب سے جلا رہا ہے جلائے گا کب تلک
ان کے لہو کو جوش نہ آئے گا کب تلک
مایوسیوں کی تہہ میں جنوں خیز یاں بھی ہیں

جاتے ہیں۔اور تمام پست اور متوسط طبقے کے نوجوانوں کے دل کی آواز بھی۔اور یہی نظم کی کامیابی ہے اور یہی سماج کی بہتری کا سبب بھی ہے۔جو اس وقت سماج کا بہتر نقطہ نظر معلوم ہوتا ہے۔

شاید یہ مجاز کی آسودگی ہے جو انہیں پریشان کرتی رہتی ہے اور پھر مجاز کا انقلابی آہنگ اور احتجاج جو بار، بار انہیں یہ کہنے پر مجبور کر دیتا ہے۔

اے غم دل کیا کروں، اے وحشت دل کیا کروں

اور پھر مجاز کی یہ احتجاج کی صدا نکلتی ہے:

جی میں آتا ہے یہ مردہ چاند تارے نوچ لوں
اس کنارے نوچ لوں اس کنارے نوچ لوں
ایک دو کا ذکر کیا سارے کے سارے نوچ لوں
لے کے اک چنگیز کے ہاتھوں سے خنجر توڑ دوں
تاج پر اس کے دمکتا ہے جو پتھر توڑ دوں
کوئی توڑے یا نہ توڑے میں ہی بڑھ کر توڑ دوں
اے غم دل کیا کروں اے وحشت دل کیا کروں

غرض کہ اس نظم میں پرانی فکر اور سوچنے کے طریقوں کو الٹ پلٹ کر رکھ دیا ہے۔ایسے منتشر ماحول میں مجاز کی شاعری عام انسانی زندگی کے لیے مرہم کا کام، کرتی ہے۔اسی طرح کی ایک اور نظم سرمایہ داری ہے۔

کلیجہ پھنک رہا ہے اور زباں کہنے سے عاری ہے — بتاؤں کیا تمہیں کیا چیز یہ سرمایہ داری ہے
یہ وہ آندھی ہے جس کی زد میں مفلسی کا نشیمن ہے — یہ وہ بجلی ہے جس کی زد میں ہر دہقاں کا خرمن ہے
یہ اپنے ہاتھ میں تہذیب کا فانوس لیتی ہے — مگر مزدور کے تن سے لہو تک چوس لیتی ہے
جواں مردوں کے ہاتھوں سے یہ نیزے چھین لیتی ہے — یہ ڈائن ہے بھری گودوں سے بچے چھین لیتی ہے
یہ عبرت چھین لیتی ہے حمیت چھین لیتی ہے — یہ انسانوں سے انسانوں کی فطرت چھین لیتی ہے

یہاں پر یہ بات غور طلب ہے ہ یہ کلیجہ پھنک رہا ہے۔زبان کہنے سے عاری ہے، سرمایہ داری ہے، یہ وہ آندھی ہے اور اسی طرح کے دیگر سوالات اور سماج سے، انقلاب کی شکل میں پیش کئے گئے ہیں یہ سب سوال یہ سب احتجاج ی کی حالات کے خلاف ہے۔یہ سب ان کے سامنے ایک کمٹ منٹ کی شکل میں پیش ہوتا ہے۔اور ایسا محسوس ہوتا ہے کہ یہ سارے سوال اس وقت کے ایک طرح کے مردہ سماج سے ہیں جو نئی زندگی اختیار کرنے سے بھاگتا نظر آتا ہے۔

اسی طرح کی ایک اور نظم ''مزدور کا گیت'' بھی دیکھتے ہیں:

ہم ارض و سما کو ہلا دیں گے

ہوااوراس کی انسانی شخصیت کا بیان ہو۔

.....یہ نئے دور کی عورت کا پہلا قصیدہ تھا۔جس نے شاعری کی تاریخ کا ایک نیا ورق رقم کیا تھا۔لیلیٰ وسلیٰ کے سامان تفریح ہونے کے تذکرے نہیں تھے۔نسوانی حسن کا چرچہ نہیں تھا۔عورت کے ہاتھوں کی حسین ہتھکڑیاں اور پاؤں کی بیڑیاں ٹوٹی پڑیں تھیں۔اور شاعر کی آنکھیں ایشیا میں جون آف آرک کا تصور کر رہی تھیں۔''[۳]

مجاز اپنی ایک اور نظم ''کس سے محبت ہے'' میں کہتے ہیں کہ بتاؤں کیا تجھے اے ہمنشیں کس سے محبت ہے۔

میں جس دنیا میں رہتا ہوں ہو وہ اس دنیا کی عورت ہے یہاں عورت خیالات اور پریوں کی دنیا کی عورت نہیں رہ جاتی بلکہ اس میں زندگی اور حالات سے مقابلہ کرنے کا رخ پیدا ہوتا ہے مجاز آگے کہتے ہیں۔

وہ چنگاری ہے لیکن پھونک سکتی ہے گلستاں کو وہ بجلی ہے جلا سکتی ہے ساری بزم امکاں کو

مجاز کا یہ خیال ہے کہ اگر عورت کو موقع فراہم کئے جائے تو وہ بہت کچھ کرنے کی ہمت اور طاقت رکھتی ہے کہتے ہیں۔

مری تخیل کے بازو بھی اس کو چھو نہیں سکتے مجھے حیران کر دیتی ہیں نکتہ دانیاں اس کی

غرض وہ عورت کو رومان سے نکال کر انقلاب کی دنیا میں لے جانا چاہتے ہیں جہاں پر وہ مردوں کے ساتھ برابر چل سکے اس کی مددگار بن سکے وہ عورت کو ایک نئے روپ نئے عمل میں دیکھنا چاہتے ہیں۔

اسی طرح کی ایک اور نظم ''آوارہ'' ہے جس میں مجاز نے عام انسانی زندگی کے حقوق اور اس کے اگلے اقدام کی فکر کی ہے جس میں احتجاج کی صدا ابھرتی ہے جس میں مایوسی اور بے بسی کی تصویر دکھا کر نئے اقدام کی کوشش کی جو پرانے نظام اور رویوں کو ہٹا دینے کی لہر ہے۔

اے غم دل کیا کروں اے وحشت دل کیا کروں
بڑھ کے اس اندر سبھا ا ساز و سامان نوچ لوں

اس طرح سے مجاز کی شاعری میں انسانی زندگی کے مختلف پہلو ہمارے ٹھوس مادّی و عملی اقدار کا بہترین سرمایہ ہیں۔مجاز نے زندگی کے جن پہلوؤں پر روشنی ڈالی مثلاً سیاسی، سماجی، و معاشی سب میں ایک ادبیت کا رنگ نمایاں ہے جو مجاز کے کلام کی مجموعی خوبیوں اور ان کی قوت متخیلہ کا پتہ دیتی ہے۔اس طرح کی مثالوں سے یہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ مجاز کی شاعری اس وقت ایک نئی آواز تھی جو نئی نسل کے لئے مشعل راہ ثابت ہوئی۔ایسی نظموں میں رات اور ریل، سرمایہ داری، خواب سحر، انقلاب آوارہ وغیرہ میں دکھی جا سکتی ہیں۔جس کو پڑھ کر ذہن پر ایک کیفیت طاری ہوتی ہے۔

اس طرح سے ہم محسوس کر سکتے ہیں کہ یہ مجاز کی تڑپ ہی تھی جو ان کو اپنے سماج سے پریشان ہو کر یہ سب کہنے پر اکساتی رہتی تھی۔غرض کہ یہ تمام جذبات صرف مجاز کے نہیں ہیں اور نہ ہی ان کے سماج کے بلکہ یہ جذبات عوام کے دل کی دھڑکن بن

''نورا کی آنکھیں ملیں تو خیال آیا نورا بھی عورت ہے۔ دوشیزہ، جوان، رعنا
اور محض مرد کا کھلونا نہیں ہے، دور جدید کی ایک ذہین محنت کش اور مردوں کے دوش
بدوش کام کرنے والی دوشیزہ ہے یہی عورت کا وہی روپ جو مجاز کو عزیز رہا ہے۔'' [1]

غرض کہ مجاز کے ذہن میں جو تصور تھا عورت بھی ملک کی آزادی میں کچھ اہم کردار ادا کرے۔ سوشلسٹ تصور بھی یہی تھا۔ روس میں جو انقلاب آیا اس کا بھی یہی تصور تھا کہ مرد عورت ساتھ ساتھ کام کریں۔۔ یہ اشارہ بھی مجاز نے پیش کیا ہے۔ حقیقتاً ایک طرح سے عورت کے ذہنی ارتقا کی عمل اور شعور کی ایک تاریخ ہے۔ اس طرح ترقی پسند تحریک کے ساتھ ساتھ پرچم آزادی اور انقلاب آزادی کو بلندی تک پہچانے کا جذبہ تیز ہوا۔ اور یہ کہ ترقی پسند ادیبوں شاعروں نے بدلتے ہوئے معاشرے میں عوررت کی انقلابی زندگی اور ان کے حقوق کو اپنی شاعری کا موضوع بنایا۔

مجاز کی شاعری میں عورت کے مسائل ترقی پسند نظریہ کی فکر اور سوچ جو کچھ بھی بیان ہوا ہے وہ پدری عہد کی سوچ کی طرف متوجہ کرتا ہے۔

سچ بات یہ ہے کہ مجاز نے عورت کی زندگی اس کے مسلسل اور مصائب کو پہلی مرتبہ وقت کی ترقی پسند آواز بنانے کی کوشش کی ہے یہاں مصائب نہیں بیان کئے گئے بلکہ عورت کو نئی زندگی کے اقدام کی طرف متوجہ کیا گیا ہے کہ مجاز اور ترقی پسندوں کی یہی سوچ بھی رہی ہے کہ جسے پہلی بار عورت کی ترقی پسندی اور اسے برابری کا درجہ دلانے کی فکر ملتی ہے۔

محمد حسن صاحب نے بڑے ہی خوصورت انداز میں اس طرف اشارہ کیئے ہیں۔

'اس سارے نظام میں عورت کا انسانی وجود ہی کہیں کھو کر رہ گیا ہے۔ اور
جاگیرداروں کے لیے الہ تفریح بن کر رہ گئی یا طوائف ہو کر ان کی محفلوں میں ناچنے
گانے لگی۔ یا پھر گھر کی چار دیواری میں قید ہو گئی اور اپنے دن رات خائے مجازی شوہر
کو رجھانے میں اور اس کی وارثوں کو پالنے میں صرف کرنے لگی۔ یہ قدغن اتنی بڑھی کہ
عورت کی دنیا غازہ کاجل اور زیور کپڑے بن کر رہ گئے اور اسے برقعہ پہنا کر سماج سے
الگ کر دیا گیا۔ وہ محض جائداد تھی جس سے دل بہلایا جاتا تھا۔ جس پر شب خون مارا
جاتا تھا۔'' [2]

اس کے بعد اگر مجاز کی اس نظم کو پڑھیں تو ایک نئی عورت اور نئی فکر کے راستے کی تلاش بھی نظر آتی ہے۔

لالہ و گل کیا یہ چمن بھی ترے قدموں پر نثار گہرے ہائے سخن بھی ترے قدموں پر نثار

آگے محمد حسن صاحب کہتے ہیں۔

''یہ نظم شاید آزاد دنیا کی تراریخ میں پہلی نظم تھی جو کسی خاتون کی تاریخ اس
انداز سے لکھی گئی ہو کہ اس کے جسمانی حسن کے بجائے اس کی روشن خیالی کی مدح کی

ڈاکٹر طاہرہ پروین
اسسٹنٹ پروفیسر
ایس ایس کھنا گرلس ڈگری کالج الہ آباد

مجاز: عورت اور آہنگ انقلاب

مجاز کی شاعری کا مطالعہ کرتے وقت ہمیں کئی فکری صورتوں سے گزرنا پڑتا ہے۔ جس میں مجاز کی ترقی پسندی، مجاز کی غزل گوئی، مجاز کی لکھنوی تہذیب وتمدن، مجاز اور لکھنو وغیرہ لیکن جس کے درمیان سے مجاز کے دور کی تہذیبی، تاریخی، سماجی اور عام زندگی گزر رہی رتھی وہ تھا ''مجاز کا انقلابی تصور'' جو بعد کو نئی صورتوں میں ظاہر ہوا۔ کبھی ملک کی آزادی کو لے کر تو کبھی سماج سے انقلاب کبھی عورت کی آزادی کو لے کر تو کبھی اور پھر عام انسانی زندگی کی حقیقت کو ساتھ کر چلنے کا انقلاب وغیرہ جو عام طور پر اس وقت فکر میں اندر۔ اندر پل رہا تھا۔ باہر سے جس کا اندازہ کرنا مشکل تھا جس میں مجاز کی شاعری میں انسانی زندگی کی سچائیوں اور ہمدردیوں کا اچھا اندازہ کیا جاسکتا ہے۔ مجاز کی پہلی ہی نظم ''نزر دل'' اسی رومانی انداز سے شروع ہوتی ہے جس کو اس کو بہت پسند کیا گیا تھا۔ ۔اس نظم کے آخری شعر میں مجاز اپنی معشوقہ کو انقلاب کی دعوت دیتے ہیں اور ایک نئی دنیا کی طرف متوجہ کرتے ہیں اور ایک نئی دنیا کی بشارت بھی۔ یہ صورت اس وجہ سے بھی پیدا ہوسکتی ہے کہ ملک اور تہذیب اور فکر میں جو ایک تبدیلی اور بدلنے کی خواہش کا اندازہ ہو رہا تھا اس سے شاعری اور خصوصاً ہندوستان کی شاعر کی متاثر تھی۔ یہی تبدیلی شاعر کو عورت میں بھی تبدیلیاں لانے کا احساس پیدا کرتی ہے اور پھر یہیں سے مجاز کے یہاں عورت ''انقلاب تازہ'' کی طرف متوجہ ہوتی ہے ۔شاعر کے ذہن میں عورت نہ تو محض حسن کا مجسمہ ہے اور نہ ہی اس ک کی زلفوں کا اسیر ہونا چاہتا ہے۔ بلکہ وہ عورت کو اپنی دنیا میں ساتھ چلنے، برابری کا درجہ دلانے اور زندگی سے رشتے مضبوط کرنے کی دعوت دیتا ہے۔

سنا نیں کھینچ لی ہیں سر پھرے باغی جوانوں نے تو سامان سفر اپنا اٹھا لیتی تو اچھا تھا

☆

اپنے دل کو دونوں عالم سے اٹھا سکتا ہوں میں کیا سمجھتی ہو کہ تم کو بھی بھلا سکتا ہوں میں
تم سمجھتی ہو کہ ہیں پردے بہت سے درمیاں میں یہ کہتا ہوں کہ ہر پردہ اٹھا سکتا ہوں میں

اور پھر ایک نظم کے آخری شعر میں مجاز اپنی معشوقہ کو انقلاب کی دعوت دیتے ہیں اور ایک نئی دنیا کی اسے جھلک دکھاتے ہیں کہتے ہیں۔

آؤ مل کر انقلاب تازہ پیدا کریں دہر پر اس طرح چھا جائیں کہ سب دیکھا کریں

بقول محمد حسن:

موٹے کام کی طرف مائل ہونا چاہئے۔ آپس میں ہنسی مذاق کرتے ہوئے یہ تینوں دوست بہت سی تجویز زیر بحث لاتے ہیں لیکن ساری تجاویز ان کی مالی حالت خراب ہونے کے سبب ناکام ہو جاتی ہے۔

اب ان کے پاس صرف ایک ہی تدبیر رہ جاتی ہے کہ کسی مالدار کی بیٹی سے شادی کرلیں۔ مذاق میں شیام سندر آنکھیں بند کر کے کہتا ہے کہ ایسی عورت اس کی نظر میں ہے لیکن جب اس کے دوست اس بارے میں سوال کرتے ہیں تو وہ آنکھیں کھول کر کہتا ہے کہ ارے کہاں چلی گئی؟ اس جملے میں بھی دراصل ان تینوں کرداروں نے اپنے آپ کو ہی ہدف بنایا ہے۔ دوست ہنسنے لگتے ہی۔ اسی اثنا میں شیام سندر کو تلاش کرتے ہوئے ایک سپاہی داخل ہوتا ہے جو یہ اطلاع دیتا ہے کہ مسعود نے ریل گاڑی کے نیچے آ کر خودکشی کرلی ہے۔ وہ اسپتال چل کر لاش کی شناخت کرلے۔ مسعود کی موت کی خبر کے ساتھ ڈرامے کا اختتام ہو جاتا ہے۔

مسعود کی خودکشی کے ساتھ بظاہر کرشن چندر نے ڈرامے کا انجام تو دکھا دیا ہے لیکن کرشن چندر نے اپنے مقصد کے تحت اس ڈرامے کے انجام کے پس پردہ ایک نہایت اہم اور نازک سوال کو بھی ہمارے سامنے کھڑا کر دیا ہے۔ تحریک آزادی کے بعد ملک کے بٹوارے کے ساتھ جس طرح کی صورت حال درپیش ہوئی اور ملک کی دولت کا بٹوارہ ہوا اس نے سماج کے ایک طبقے کو حاکم اور دوسرے کو محکوم بنا دیا۔ چنانچہ حاکموں نے تمام وسائل پر قبضہ کیا اور یہ سلسلہ کچھ خاص لوگوں تک ہی محدود رہ گیا اور محکوم طبقہ گھٹ گھٹ کر زندگی گزارنے پر مجبور رہا۔ یہ صورت حال ہم پر روز بہ روز مزید عیاں اور روشن ہوتی جا رہی ہے۔ آج رشوت خوری اور بدعنوانیوں کا بازار گرم ہے۔ جس نے دیمک کی طرح سماج کو چاٹ کر کھوکھلا کر دیا ہے۔ آزادی وطن سے لوگوں کو جو امیدیں وابستہ تھیں وہ ٹوٹ گئی ہیں۔ آج اہل اقتدار تبدیل ہو رہے ہیں لیکن صورت حال وہی ہے جو آزادی سے قبل تھی۔ سماج بد سے بدتر کی جانب بڑھ رہا ہے استحصال جاری ہے، قابلیت کی جگہ رشوت خوری اور سفارش نے لے لی ہے۔ اس صورت حال میں بیشتر بے روزگار نوجوان یہ تصور کرنے لگے ہیں کہ کامیابی کا راستہ رشوت اور سفارش کی منزل سے ہو کر گزرتا ہے۔ چنانچہ جنھیں یہ میسر نہیں وہ مسعود کی طرح موت کی آغوش میں پناہ لے رہے ہیں۔ ایسے واقعات ہمارے سماج میں آئے دن رونما ہو رہے ہیں۔ بے کاری کا مسئلہ ہمارے سماج میں دوسرے مسائل کو بھی فروغ دے رہا ہے۔ لوٹ، قتل، چوری، وغیرہ کی وارداتیں ملک میں بڑھ گئی ہیں اور یہ نادانستہ طور پر بے روزگاری سے جڑے ہوئی ہیں کیونکہ جب انسان کو راہ راست پر چل کر کچھ حاصل نہیں ہوتا تو وہ غلط راستوں کا انتخاب کرلیتا ہے اس کی عمدہ مثال ہمیں موجودہ سماج میں جا بہ جا نظر آ رہی ہے۔

بہر حال بے روزگاری کو موضوع بنا کر لکھا گیا۔ کرشن چندر کا یہ ڈراما سیدھے سادھے پلاٹ پر مبنی ہونے کے باوجود ہمیں غور فکر کرنے کے ساتھ سماج میں پھیلنے والی برائیوں کے اسباب پر بھی روشنی ڈالتا ہے۔ کرشن چندر کے اس ڈرامے کی عصری معنویت موجودہ صورت حال میں اور بڑھ جاتی ہے۔

☆☆☆☆☆

ڈاکٹر عارفہ بیگم
اسسٹنٹ پروفیسر
ایس ایس کھنا گرلس ڈگری کالج الہ آباد

کرشن چندر کے ڈرامے ''بیکاری'' کی عصری معنویت

تحریک آزادی کے بعد پیش آنے والے مختلف مسائل میں بے روزگاری ایک اہم مسئلہ رہا ہے اس مسئلے کو کرشن چندر نے اپنے ڈرامے بیاری میں بڑے فنکارانہ انداز میں اٹھایا ہے۔

یہ یک بابی ڈراما اکتوبر ۱۹۳۷ء میں لاہور میں پیش کیا گیا۔ ڈرامے کے مرکزی کردار بیروزگار نوجوان شیام سندر، بھیا لال اور اظہر ہیں۔ سپاہی مسعود اور پروفیسر وغیرہ کے کردار ضمنی ہیں۔ ان تین بے روزگار نوجوانوں کی زندگی مالی پریشانیوں کے سبب تنگ دستی میں گزر رہی ہے۔ زندگی میں ہونے والے پیچ وخم سے یہ بے روزگار نوجان مسلسل نبرد آزما ہونے کی کوشش کر رہے ہیں۔ ڈراما کا آغاز ہندو پاسٹل کے کمرپ نمبر ۴۴ سے ہوتا ہے۔ جہاں شیام سندر پریشانی کے عالم میں بیٹھا سگریٹ پھونک رہا ہے مانو ایسا لگتا ہے کہ وہ سگریٹ سے نکلنے والے دھوئیں کے غبار میں اپنی فکروں کو بھی اڑا دینا چاہتا ہے۔ اسی بیچ ایک دبلا پتلا نوجوان بھیالال جو شکل اور صحت کی مناسبت سے بھی بیمار معلوم ہوتا ہے داخل ہوتا ہے۔ ایم۔ اے پاس ہونے کے اوجود بھی یہ نوجوان بھی بیکاری کا شکار ہے تنگدستی کے سبب مرضی نہ ہونے کے باوجود بھی محض پندرہ روپئے کے لئے ڈاکٹر گھنشیام کی بیوی کو ٹیوشن پڑھاتا ہے۔ جو شادی اور دو بچوں کی پیدائش کے بعد بھی ابھی تک ایف. اے. میں پڑھ رہی ہے۔ بھیالال اور شیام سندر کے درمیان بات چیت جاری ہے کہ ایک دوہرے بدن کا نوجوان سوٹ پہنے کمرے میں داخل ہوتا ہے۔ جس کا نام اظہر ہے اس نوجوان کے ہاتھ میں ایک تار ہے جسے اس کے دوست امجد نے بھیجا ہے۔ امجد کو بی۔ ٹی کرنے کے بعد الہ آباد میونسپلٹی میں ۳۵ روپئے کی نوکری مل گئی ہے۔

بھیالال ان دونوں دوستوں کو کیلاش کر بارے میں بتاتا ہے جو کہ ان کا ہم جماعت تھا۔ بی۔ اے میں فیل ہونے کے باوجود کیلاش اپنے والد کے کارخانے میں منیجر ہے اور خوشحال زندگی گزار رہا ہے۔ بھیالال کو اس بات کا بے حد افسوس ہے کہ کل تک اس سے انگریزی کا مضمون اور جواب صحیح کرانے والے کیلاش کی نظروں میں اس کے لئے رحم اور اپنی حیثیت کا تفاخر دکھائی دیتا ہے۔ باتوں باتوں میں یہ پتا چلتا ہے کہ شیام سندر کی موجودہ پریشانی کا سبب اس دوست مسعود ہے جو نوکری کی تلاش میں آیا ہے اور اس کے پاس ٹھہرا ہوا ہے۔ لیکن کل سے ابھی تک واپس نہیں لوٹا اور نہ ہی اس کی کوئی خبر ہے۔ یہ سن کر بھیالال اور اظہر شیام سندر کو تسلی دیتے ہیں۔ اظہر اپنے دونوں دوستوں کو پروفیسر چانند کے لیکچر کا حوالہ دیتے ہوئے بتاتا ہے کہ پروفیسر صاحب کہہ رہے تھے کہ یہ بے کاری تعلیم یافتہ طبقہ کی کاہلی اور آرام پسندی کی وجہ سے ہے چنانچہ پڑھے لکھے لوگوں کو تجارت اور چھوٹے

شاعری علامہ اقبال

ملاقاتیں عروج پر تھیں تو جواب اذان تک نہ دیا اقبال
صنم جو روٹھا ہے تو آج موذن بنے بیٹھے ہیں
نہ کلمہ یاد آتا ہے نہ دل لگتا ہے نمازوں میں اقبال
کافر بنا دیا ہے لوگوں کو دو دن کی محبت نے
کتنی عجیب ہے گناہوں کی جستجو اقبال
نماز بھی جلدی میں پڑھتے ہیں پھر سے گناہ کرنے کے لئے

مسجد خدا کا گھر ہے، پینے کی جگہ نہیں
کافر کے دل میں جا، وہاں خدا نہیں
سوداگری نہیں۔ یہ عبادت خدا کی ہے
اے بے خبر جزا کی تمنا بھی چھوڑ دے
نہ عشق حسیں، نہ ذوق شہادت
غافل سمجھ بیٹھا ہے ماتم کو عبادت اقبال
دل پاک نہیں تو پاک ہو سکتا نہیں انسان
ورنہ ابلیس کو بھی آتے تھے وضو کے فرائض بہت
عقابی روح جب بیدار ہوتی ہے جوانوں میں
نظر آتی ہے ان کو اپنی منزل آسمانوں میں
کبھی تنہائی کوہ و دمن عشق کبھی سوز و درد انجمن عشق
کبھی سرمایہ محراب و منبر کبھی معلا علی خیر شکن عشق
ضمیر جاگ ہی جاتا ہے اگر زندہ ہو اقبال
کبھی گناہ سے پہلے تو کبھی گناہ کے بعد
پروانے کو چراغ ہے، بلبل کو پھول بس
صدیق کے لئے ہے خدا کا رسول بس
خاموش اے دل بھری محفل میں چلانا نہیں اچھا
ادب پہلا قرینہ ہے محبت کے قرینوں میں

آفرین نوشے
بی۔اے۔ سال اول

ایک خواہش ہے

میں سورج بن نے کی خواہش نہیں کرتی
ایک دیا تو بن سکتی ہوں
میں دنیا کو اپنی روشنی سے روشن تو نہیں کر سکتی
پر میں خود کے آس پاس اندھیرے کو تو مٹا سکتی ہوں
ایک خواہش ہے اسے حقیقت کی شکل تو دے سکتی ہوں
میں ایک صدی بنانے کی خواہش نہیں کرتی
لیکن میں ایک دن تو بنا سکتی ہوں
میں زندگی نہ ختم ہونے کی خواہش نہیں کرتی
لیکن موت سے تو لڑ سکتی ہوں
میں خدا بن نے کی تو خواہش نہیں کرتی
لیکن میں انسان تو بن سکتی ہوں
ایک خواہش ہے اسے حقیقت کا شکل تو دے سکتی ہوں
میں سمندر بن نے کی خواہش نہیں کرتی
لیکن ایک لہر تو بن سکتی ہوں
میں دنیا کو جنت بنانے کی خواہش نہیں کرتی
لیکن ایک چھوٹا سا آشیانہ تو بنا سکتی ہوں
اپنی پہچان بنانے کی خواہش ہے
اسے حقیقت کی شکل تو دے سکتی ہوں
میں اتہاس بنانے کی خواہش نہیں کرتی
لیکن اتہاس کا ایک ورق تو بن سکتی ہوں
میں سورج بن نے کی خواہش نہیں کرتی
لیکن میں ایک دیا تو بن سکتی ہوں
ایک خواہش ہے اسے حقیقت کا شکل تو دے سکتی ہوں

حنا کوثر
بی.اے. سال دوم

دنیا کا آغاز

دنیا میں سب سے پہلے حضرت آدم علیہ السلام تشریف فرما ہے۔

دنیا میں سب سے پہلے انسانی خون حضرت آدمؑ کے بیٹے ہابیل قابیل نے کیا۔

اس کے بعد حضرت نوح علیہ السلام تشریف لائے آپ کا کشتی کا واقعہ بہت مشہور ہے۔آپ کو آدم ثانی بھی کہا جاتا ہے۔آپ کے بعد حضرت ہود علیہ السلام اور حضرت صالح علیہ السلام ہے۔آپ حضرت غوث پاک کے والد بھی ہے۔

اب دور حضرت ابراہیم علیہ السلام کا آتا ہے۔اور آپ بہت بلند مرتبہ نبی گزرے ہیں۔اس کے بعد حضرت لوط علیہ السلام نبی بنے۔اس کے بعد حضرت یوسف علیہ لاسلام نبی بنے آپ جنِ یوسف کے نام سے بھی مشہور ہے۔آپ ۱۱ بھائی تھے۔ جس میں یامین سب سے چھوٹے تھے۔

آپ کے بعد جو نبی آئے وہ حضرت موسیٰ علیہ اسلام ہے آپ فرعون کے گھر میں پرورش ہوئے اور یہ واقعہ بھی بہت مشہور ہے جیسے جادوگروں کو اسلام قبول کرانا،فرعون کو غرق کرنا،قاروں کا واقعہ اور حضرت خضر علیہ السلام کا واقعہ وغیرہ ہے۔

آپ کے بعد اور نبی آئے حضرت شموئیل،حضرت سلیمان علیہ اسلام،حضرت یونس علیہ اسلام،حضرت عیسیٰ علیہ السلام ہے۔خدا پاک نے تو ایسے ایک لاکھ چوبیس ہزار نبی اور پیغمبر بھیجے۔

مبشرہ

بی.اے. سال اول

تنہائی

میں جہاں بھی جاتی ہوں میرے ساتھ ہوتی ہے میری تنہائی
اس زندگی میں اپنوں نے تو ساتھ نہیں دیا
میرے ساتھ میری ہمدرد بنی تھی میری تنہائی
سکون وچین چھن گیا تھا اپنی قسمت پہ رو رہی تھی
اس وقت دلاسا دے رہی تھی میری تنہائی
دنیا میں تو سب کچھ تھا دل لگانے کے لئے
بس دل سے ایک ہی آواز آرہی تھی کہ اے ثانیہ
یہ سب کچھ ایک دھوکہ ہے جو سچ ہے وہ ہے صرف تنہائی

امتحان

امتحان کا وقت ہے قریب بس اچھی تیاری کرلو
امتحان تم کو کھیل لگے گا بس اس سے تم یاری کرلو
مضمون کو تم رٹو نہیں سمجھ سمجھ کے پڑھا کرو
ٹاپک تم کو کھیل لگیں گے بس اسے روز دوہرایا کرو
میڈم کے لکچر کو تم دھیان لگا کے سنا کرو
گھر جا کے پھر سے تم اسے پڑھا کرو
پھر دیکھنا جب تمھاری راہ میں آئے کوئی رکاوٹ
تب میڈم سے صلاح کیا کرو
مضمون تم کو کھیل لگیں بس اس سے تم یاری کرلو
امتحان تم کو کھیل لگے گا بس اچھی تیاری کرلو

ثانیہ صدیقی
بی.اے. سال دوم

دوستی

دوست کے بنا زندگی ویران ہوتی ہے
دوست کے بنا ہر راہ سنسان ہوتی ہے
دنیا میں جس کو مل جائے دوستی
وہ خوش نصیب ہوتا ہے کیونکہ
دوستی سے ہر مشکل راہ آسان ہوتی ہے

دوستانہ

آتا ہے یاد مجھ کو گزرا ہوا زمانہ
وہ باغ کی بہاریں وہ دوستوں کا مسکرانہ
کبھی لڑنا کبھی ہنسنا یہی ہے ہمارا دوستانہ
پھولوں سے بھی نازک ہے ہمارا دوستانہ
دوست ساتھ ہو تو ویرانے بھی چمن لگتے ہیں
دوست ساتھ نہ ہو تو محفل میں بھی تنہا لگتے ہیں
محبت سے بھی بڑا ہوتا ہے دوستی کا رشتہ
تمام رشتوں سے بھی خوبصورت ہوتا ہے دوستی کا رشتہ

اشعار

قسمت تو سب کی ایک سی نہیں ہوتی
پر دعا میں طاقت کچھ کم نہیں ہوتی
قسمت ہو تیری خراب تو رنج نہ کرنا
بس مصلے پر بیٹھ کر رب سے دعا کرنا

حفیظہ خانم
بی.اے. سال دوم

دوستی

دوست کے بنا زندگی ویران ہوتی ہے
دوست کے بنا ہر راہ سنسان ہوتی ہے
دنیا میں جس کو مل جائے دوستی
وہ خوش نصیب ہوتا ہے کیونکہ
دوستی سے ہر مشکل راہ آسان ہوتی ہے

دوستانہ

آتا ہے یاد مج کو گزرا ہوا زمانہ
وہ باغ کی بہاریں وہ دوستوں کا مسکرانہ
کبھی لڑنا کبھی ہنسنا یہی ہے ہمارا دوستانہ
پھولوں سے بھی نازک ہے ہمارا دوستانہ
دوست ساتھ ہو تو ویرانے بھی چمن لگتے ہیں
دوست ساتھ نہ ہو تو محفل میں بھی تنہا لگتے ہیں
محبت سے بھی بڑا ہوتا ہے دوستی کا رشتہ
تمام رشتوں سے بھی خوبصورت ہوتا ہے دوستی کا رشتہ

اشعار

قسمت تو سب کی ایک سی نہیں ہوتی
پر دعا میں طاقت کچھ کم نہیں ہوتی
قسمت ہو تیری خراب تو رنج نہ کرنا
بس مصلّے پر بیٹھ کر رب سے دعا کرنا

حفیظہ خانم
بی.اے. سال دوم

विविध गतिविधियाँ

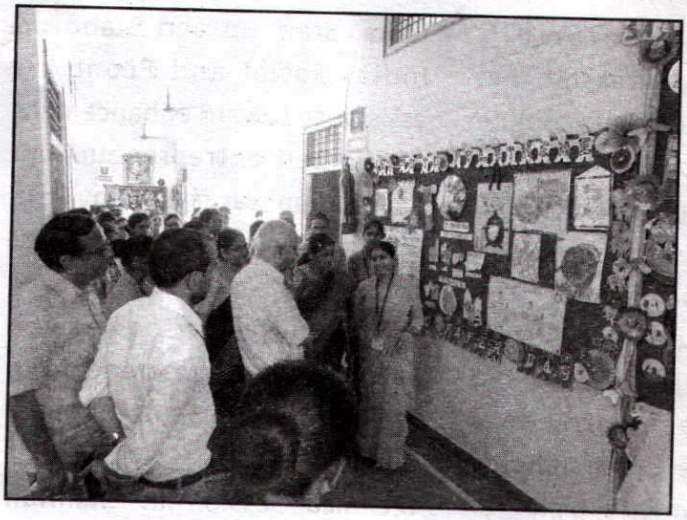

SUPER 20
STRIVING TOWARDS THEIR BRIGHT FUTURE
Classes by Experts

NATIONAL SEMINAR ON 'ABSOLUTE SWARAJ'

A Two Day National Seminar on ABSOLUTE SWARAJ was held on 3rd and 4th December 2017 by Nand Kishore Khanna Commerce Faculty at S. S. Khanna Girls' Degree College. 273 delegates participated in the seminar. Although it is a national seminar but some papers were received across the national boundary also.

Prof. R. C. Sobti, Vice Chancellor, Baba Saheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow, graced the inaugural session as chief guest while Prof. Ashim Mukhrjee, Director, MONIRBA, University of Allahabad delivered the keynote address. Ms. Cao Chenrui from Department of South Asian Studies, Yunnan Minzu University, China was the guest of honour. Mr. Muzaffar Uddin Abdali, Post Master General, Allahabad honoured the valedictory session, as the chief guest and Prof. Keshav Mishra, Project Consultant, Prime Minister of India Project, Nehru Memorial Museum Library Trimurti Bhawan, New Delhi was the guest of honour.

Theme & Objectives of the Seminar

As India celebrates seven decades of Independence, the country is in the midst of veritable counter revolutions making the nation 'Swachh', 'Swasth', 'Swavalambi', 'Samridh' and 'Surakshit' i.e. progressing to achieve 'Absolute Swaraj'. *Swaraj* can only be achieved through an all round consciousness of masses through restoration of free speech, free association and free press. The objectives of the seminar were to provide a comprehensive understanding of the Government's plans for the citizens, to analyze the challenges and opportunities of entrepreneurs in Indian scenario and to appraise legal efforts made for security of the citizens. With these objectives, the seminar was conducted in four technical sessions.

Technical Session I: "Swachh Evam Swasth Bharat" *(Health and Health Psychology)*-- The sub themes of this session were Swachh Bharat Campaign, Waste Management, Stress management & Yoga and Strategic initiatives by government. The session was chaired by Dr. Ravi Mehrotra, Department of Oncology, AIIMS, New Delhi and co-chaired by Prof. Neena Kohli, Department of Psychology, University of Allahabad.

Technical Session II: "Swavalambi Bharat" *(Entrepreneurship)*--The sub themes of this session were- Entrepreneurial development in India, Start up and Stand up India, Social and Economic assistance toward enhancement of Women entrepreneurship. The session was chaired by Prof. Bhaskar Majumder, G. B. Pant Social Sciences Institute, Jhunsi and the co-chairperson was Prof. Avadhesh Jha, Entrepreneurship Development Institute of India, Gandhinagar.

Technical Session III: "Samridh Bharat" (*Indian Economy*)-- The sub themes of this session were- India marching towards a digitized and cashless economy- problem and prospects, After effects of demonetization, GST- one nation, one tax one market, Outward direct investment- trends and drivers. The session was chaired by Dr. Anurika Vaish and Dr. Madhvendra Misra, Department of Management Studies, IIIT-Allahabad.

Technical Session IV: Surakshit Bharat" (*Secured India*)--The sub themes of this session were- -Gender sensitization-security of a woman against sexual harassment at work place, Cyber regulations, Food security and Public Distribution System and Juvenile Justice. The session was chaired by Prof.R.K.Chaubey, Department of Law, University of Allahabad and the co-chairperson was Prof. Nidhi Bala, Department of Education, University of Lucknow.

NATIONAL SEMINAR - *ABSOLUTE SWARAJ*

Chief Guest
Prof. R. C. Sobti,
Vice Chancellor, Baba Saheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow

Chief Guest (Valedictory Session)
Mr. Muzaffar Uddin Abdali
Post Master General, Allahabad

Lighting of Lamp by Guest of Honour
Ms. Cao Chenrui (China)

Technical Session

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी

253/179ए अतरसुइया रोड, इलाहाबाद - 211 003

फोन : 0532-2451367

E-mail : katripathshala@gmail.com

www.skpallahabad.com